सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 175, नई दिल्ली, मंगलवार 02 सितम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

रिश्ता चाहे इस धरती पर कोई भी हो, सबका सिर्फ एक ही पासवर्ड है "भरोसा"

03 दिल्ली में यमुना का जल स्तर जाएगा 206 मीटर के पार !

06 कृत्रिम प्रकाश संश्लेषण के प्रयास

08 800 एकड़ भूमि पर बनेगा नया भुवनेश्वर

क्या आप जानते है की हमें होने वाली बीमारियां प्राकृतिक या हमारी गलतियों के कारण नहीं अपितु सोची समझी साजिश के तहत हो रही है! कौन है वो जाने इस छोटे से लेख के माध्यम से

संजय बाटला

1. 1954 में जब पाउडर मिल्क यानी सूखा दूध मार्केट में बेचने के लिए आया तो किसी ने खरीदना पसंद नही किया और इसे बनाने वाली कम्पनियां बर्बाद होने लगी तब इन कंपनियों ने बेड मार्केटिंग का एक घटिया तरीका निकाला। उन्होंने रोज़ाना मार्केट से सारा दूध चुपचाप से खरीद के नालियों में फिकवाना शुरू कर दिया। जिससे लोगों के पास सूखा दूध खरीदने के अलावा कोई और विकल्प नही बचा। बताने वाले बताते है की लगभग तीन महीने तक यह गंदा खेल चलता रहा जिससे जनता सूखा दूध खरीदने लगी और इसकी मांग भी बाजार में बढ़ गई। मांग बढ़ने पर कंपनियों ने सूखे दूध का दाम बढ़ाए और सारा खर्चा निकाल लिया।

2. इसी प्रकार प्रचलित जैविक कृषि को नष्ट किया गया हरित क्रांति के नाम पर और ना केवल कृषि भूमि को विषाक्त बनाकर नष्ट किया गया प्राणियों को विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रस्त किया गया। हरित क्रान्ति से गंभीर रोगों के रोगी बड़े तो अस्पतालों, डॉक्टर्स और दवा निर्माताओं की लॉटरी लग गयी। जिसके साथ ही ना तो डॉक्टर की रुचि रही रोग को समाप्त करने में और ना ही दवा कंपनियों और अस्पतालों की रुचि रही सही दवा निर्मित कर बेचने की। सभी को नोट छापने थे और जितने अधिक रोगी होंगे उतना अधिक लाभ। फिर रोगियों की संख्या बढ़ाने के लिए नए-नए उपाय किए जाने लगे।

3. कंज्यूमर रिर्पोट्स मैग्जीन के अनुसार पैकेटबंद और फ्लेवर्ड फ्रूट जूस में कैडमियम कार्बनिक आर्सेनिक और मरकरी / लेड पाया जाता है जो बच्चों के स्वास्थ्य पर बहुत ही बुरा असर डालता है। मार्केट में मौजूद ज्यादातर ब्रांडेड जूस को भी इस स्टडी में शामिल किया गया जिसमे लगभग जूस में मेटल का स्तर अधिक पाया गया। यदि पूरे दिन में बच्चा इस जूस को आधा कप भी ले तो यह उसके स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हो सकता है।

4. प्रोसेस्ड फूड की सेवन अवधि लंबी बनाए रखने के लिए टीबीएचक्यू (TBHQ) रसायन का इस्तेमाल एक बचाव करने वाले पदार्थ के रूप में कई सालों से होता आया है लेकिन ईडब्लूजी (EWG) के शोधकर्ताओं ने इसे रोग प्रतिरक्षा कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाने वाला और फूड एलर्जी का कारक पाया है।

5. सफेद आटा जहर कैसे है ? सफेद आटे में डायबिटीज पैदा करने वाला केमिकल ऐलोक्सान होता है। अध्ययनों से पता चलता है कि रासायनिक पदार्थ एलोक्सन जिससे सफेद आटा "स्वच्छ" और "सुंदर" दिखता है वह अग्न्याशय की बीटा कोशिकाओं को नष्ट कर देता है। यह माना जाता है कि आप जितनी सफेद रोटी खाते हैं उतनी जल्दी आप मौत का सामना करते हैं।

6. सफेद आटा में विटामिन साबुत गेहूं पोषक तत्वों से भरपूर होता है। पूरे गेहूं को सफेद आटे में बदलने की प्रक्रिया के दौरान विटामिन बी के साथ-साथ विटामिन ई, कैल्शियम, जस्ता, तांबा, मैंगनीज, पोटेशियम और फाइबर को हटा दिया जाता है। सफ़ेद आटे में सिंथेटिक बी-विटामिन वापस मिलाया जाता है जो कोलटार से प्राप्त होता है और शरीर के भीतर असंतुलन पैदा करता है। जब शरीर असंतुलन को ठीक करने का काम करता है तब यह बी-विटामिन की कमी पैदा करता है। बी-विटामिन

की कमी के लक्षणों में शामिल हैं:- थकान, अवसाद, चिंता, चिड़चिड़ापन, खराब याददाश्त, अनिद्रा, दिल की धड़कन और मांसपेशियों की कोमलता।

7. हम जानते हैं कि बहुत अधिक चीनी खाने से रक्त शर्करा असंतुलन हो सकता है। चूंकि सफेद आटा चीनी में टूट जाता है। यह भी रक्त शर्करा की समस्याओं को जन्म दे सकता है।

8. कब्ज खराब पाचन की आदतों और सफेद आटे से भरे आहार के कारण होने वाली स्थिति है।

9. साबूत अनाज फाइबर से भरपूर होता है जो कोलन से निकलने वाले अपशिष्ट को बाहर निकालने में मदद करने के लिए झाड़ू की तरह काम करता है। साबूत गेहूं को सफेद आर्ट में बदलने की प्रक्रिया में सभी फाइबर हट जाते हैं। यह एक चिपचिपा गूई पेस्ट बनाता है जो आपकी उन्मूलन प्रक्रिया को धीमा कर देता है। भोजन में फाइबर में कमी और शर्करा में उच्च आहार वजन बढ़ाने के साथ-साथ मधुमेह, हृदय रोग और कैंसर के लिए एक प्रमुख योगदान कारक हो सकता है।

10. अत्यधिक संसाधित सफेद आटा बीज के दो सबसे अधिक पौष्टिक और फाइबर युक्त भागों से बंचित हो जाता है: बाहरी चोकर परत और रोगाणु (भ्रूण) परिष्कृत खाद्य पदार्थों का भोजन करने से कई कुपोषित कब्ज और पुरानी बीमारी की आने का डर है।

11. एक व्यक्ति जितना अधिक परिष्कृत खाद्य पदार्थ खाता है उतने अधिक इंसुलिन का उत्पादन उसे प्रबंधित करने के लिए करना चाहिए। इंसुलिन वसा के भंडारण को बढ़ावा देता है जिससे तेजी से वजन बढ़ता है और ऊच्च ट्राइग्लिसराइड का स्तर बढ़ जाता है जो हृदय रोग का कारण बन सकता है। समय के साथ अग्न्याशय को इतना अधिक काम हो जाता है कि इंसुलिन का उत्पादन रुक जाता है और डायबिटीज हो जाता है।

12. आपके द्वारा खाए जा रहे भोजन से शरीर की मांसपेशियों और वसा को ऊर्जा में बदलने के लिए बहुत कम या कोई ईंधन नहीं मिल रहा है। इसके अलावा परिष्कृत आटा और गेहूं के उत्पाद संक्रमण के लिए ईंधन है और इन उत्पादों की खपत से उच्च रक्त शर्करा का स्तर बढ़ जाता है।

13. बाजार में बिकने वाले सफेद आटे में अधिक समय तक खराब न होने के लिए खतरनाक रसायन मिलाया जाता है। यह रसायन ब्रोमीन की तरह कैंसर पैदा करने वाले होते हैं।

14. चावल, गेहूं, बाजरा, ज्वार और रागी जैसे अनाज मुख्य खाद्य समूह हैं जो न केवल भारत में बल्कि आज पूरे विश्व में हैं। हालांकि अनाज को ही कैलोरी का "सही" स्रोत माना जाता है।

15. आज डाक्टर भ्रमित करने के उद्देश्य से यह कहते हैं अनाज सही खाद्य पदार्थ नहीं हैं क्योंकि अनाज यहां तक कि अपनी प्राकृतिक पौष्टिक अवस्था में भी एसिड बनाने और पचाने में मुश्किल होते हैं। विशेष रूप से परिपक्व अवस्था में सभी अनाजों में एसिडोसिस पैदा करने की प्रवृत्ति होती है। शरीर के संसाधनों को कम करने वाले अनाज से अन्य आवश्यक पोषक तत्व हटा दिए जाते हैं क्योंकि सामग्री काफी हद तक प्रोटीन, फॉस्फोरिक एसिड और कार्बोहाइड्रेट से बनी होती है। इस प्राकृतिक अवस्था में भी अनाज में सोडियम, चूना, क्लोरीन, कैल्शियम और आयोडीन की कमी होती है। अनाज सही खाद्य पदार्थ नहीं हैं और इसलिए इसे अपने आहार का प्रमुख हिस्सा नहीं बनाना चाहिए। आपका मुख्य भोजन फल, सब्जियां, नट, बीज और अंकुरित होना चाहिए और थोड़ा सा अनाज का हिस्सा अगर आवश्यक हो तो प्रयोग करें। **इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि किस प्रकार सरकारें, माफिया, डॉक्टर्स संगठित होकर जनता को रोगी बनाते हैं।**

16. फिर धर्म व जातियों के ठेकेदार अलग से समाज के दिमाग का दही कर रहे होते हैं साम्प्रदायिक व जातिवादी द्वेष व घृणा घोल रहे होते हैं राजनैतिक लाभ के लिए।

17. जो देश व नागरिकों के हितों के विषय हैं उनसे ध्यान भटकाने के लिए विभिन प्रकार के उत्पात खड़े किए जाते हैं ताकि जनता मूल समस्याओं पर चर्चा न करके व्यर्थ के उत्पातों में उलझी रहे।

18. धर्म गुरु अपने अनुयाइयों को धर्म का पाठ न पढ़ाकर कर्मकाण्ड, पूजा-पाठ, व्रत-उपवास, रोज़ा-नमाज थोपते हैं यह कहकर कि यही धर्म है इसीलिए समाज वास्तविक धर्म को कभी जान ही नहीं पाया।

19. यदि समाज ने वास्तविक धर्म को समझा होता जाना होता तो आज प्रायोजित महामारी से आतंकित होने की बजाए महामारी का आतंक फैलाने वालों के विरुद्ध खड़ी होती।

20. यदि समाज ने धर्म को समझा होता तो आज देश व जनता को लूटने व लुटवाने वालों के विरुद्ध खड़ी होती ना की हिन्दू-मुस्लिम, मंदिर-मस्जिद खेल रही होती।

भारत में यूरिया खाद की समस्या पर किसान यूनियन को पूर्ण समर्थन : डॉ. राजकुमार यादव

परिवहन विशेष न्यूज

नईदिल्ली: उफ्तत्सा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने आज भारत में यूरिया खाद की बढ़ती समस्या पर गहरी चिंता व्यक्त की है और किसान यूनियनों को अपना पूर्ण समर्थन घोषित किया है। डॉ. यादव ने कहा कि यूरिया की कमी न केवल किसानों की आजीविका को प्रभावित कर रही है, बल्कि देश की कृषि अर्थव्यवस्था को भी कमजोर कर रही है। ट्रक ट्रांसपोर्टरों के रूप में हमारी संस्था किसानों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है, क्योंकि खाद की ढुलाई और वितरण में हमारी भूमिका महत्वपूर्ण है, लेकिन वर्तमान संकट हमें भी प्रभावित कर रहा है।

डॉ. यादव ने तथ्यात्मक ब्योरे प्रस्तुत करते हुए कहा कि वर्ष 2024-25 में यूरिया उत्पादन 306.67 लाख मीट्रिक टन तक पहुंच गया, जो 2013-14 के 227.15 लाख मीट्रिक टन से 35% अधिक है। हालांकि, जून 2025 में यूरिया की बिक्री मासिक रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई, जबकि उत्पादन में उतार-चढ़ाव देखा गया। मांग में वृद्धि के कारण, विशेष रूप से खरीफ मौसम में, तेलंगाना में बोई गई क्षेत्रफल 27.48 लाख एकड़ बढ़ गई, जिससे यूरिया की मांग बढ़ी। कर्नाटक में कृषि मंत्री ने इसे राष्ट्रीय समस्या बताते हुए आयात संबंधी मुद्दों का जिक्र किया। सरकार ने 2025-26 में यूरिया संयंत्रों को बंद करने पर प्रतिबंध लगाया है ताकि आपूर्ति सुनिश्चित हो, लेकिन जमीनी स्तर पर कमी बनी हुई है।

किसानों द्वारा प्रयोग में ली जाने वाली यूरिया का व्यावसायिक उपयोग इसकी आपूर्ति में बाधक बना है। गाड़ियों में जो यूरिया डाला जा रहा है वह भी कहीं ना कहीं निम्न स्तरीय एड ब्लू लिक्विड बनाने के कारण व कई स्थानों पर अभी भी ब्लास्टिंग पदार्थ मे मिक्सिंग के रूप में प्रयोग होना इसकी आपूर्ति में बाधक बना है इसके प्रति सरकार को आवश्यक कार्यवाही करनी चाहिए ताकि किसानों को यूरिया की आपूर्ति बंद ना हो सके।

उत्तर प्रदेश के अमेठी और हरदोई जिलों में किसान यूरिया की किल्लत से जूझ रहे हैं, जहां लंबी कतारें लग रही हैं और फसलें प्रभावित हो रही हैं। बिहार के औरंगाबाद और नबीनगर में भी यूरिया न मिलने से फसलें खराब हो रही हैं।f300d3 एटा में किसानों ने कृषि अधिकारी कार्यालय के बाहर धरना दिया।a8e82a ये उदाहरण दर्शाते हैं कि समस्या देशव्यापी है, और किसान भूखे-प्यासे लाइन में लगने को मजबूर हैं।

डॉक्टर यादव ने कहा कि यूरिया के मामले में किसान संगठनों से बातचीत के पश्चात कोई विशेष रूपरेखा तैयार कर एक नए आंदोलन की नींव रखी जाएगी जिससे राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा व किसान संगठन आपस में मिलकर अपने-अपने मुद्दे के लिए सड़कों पर उतरेगी व परिवहन व्यवसाईयों के साथ-साथ किसान भाइयों को भी इसमें मदद मिलने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। इसी विषय पर गुरमुख सिंह राष्ट्रीय किसान नेट के सँग एक औपचारिक बातचीत के बाद इस आशय को बल मिला है की परिवहन संस्थाएं और किसान यूनियन यदि मिलकर काम करें तो आंदोलन को शीघ्र ही सफलता हासिल हो पाएगी।

डॉ. यादव ने मांग की कि सरकार तत्काल यूरिया की आपूर्ति बढ़ाए, कालाबाजारी पर रोक लगाए और किसानों को सस्ती दर पर खाद उपलब्ध कराए। उन्होंने कहा, "ट्रक ट्रांसपोर्टरों के रूप में हम खाद की ढुलाई में सहयोग करने को तैयार हैं, लेकिन सरकार को वितरण प्रणाली में सुधार करना होगा। किसान यूनियनों के संघर्ष में हम उनके साथ हैं।"

उफ्तत्सा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा किसानों के हितों की रक्षा के लिए आगे भी प्रयासरत रहेगा।

डॉ. राजकुमार यादव, राष्ट्रीय अध्यक्ष
उफ्तत्सा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी)

हमारी उंगलियों के निशान का रहस्य। (प्रकृति) के अद्भुत रहस्यमय तथ्य

क्या यह जैविक स्मृति है या कोशिकीय बुद्धिमता, जैसा कि हम इसे चिकित्सकीय भाषा में कहते हैं, या कुछ और ?
उंगलियों के निशान ---" उंगलियों की रेखाओं का दिव्य रहस्य".

1. मानव उंगलियों पर रेखाएँ गर्भ में चौथे महीने से ही बनने लगती हैं। उस समय जब बच्चा बाहरी दुनिया से बहुत दूर होता है, तब भी उसकी पहचान की भाषा उसके शरीर पर लिखी जा रही होती है।

२. ये रेखाएं हमारे डीएनए के निर्देश पर बनती हैं, लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि ये रेखाएं न तो माता-पिता जैसी होती हैं और न ही पूर्वजों से मेल खाती हैं।

३. ये रेखाएं त्वचा पर स्वतः ही प्रकट हो जाती हैं मानो किसी अदृश्य रेडियो तरंग के प्रभाव से, जो किसी अलौकिक तंत्र की ओर संकेत करती हैं।

4. पूरी दुनिया में हर व्यक्ति की उंगलियों के निशान बिल्कुल अलग होते हैं, और आज तक ऐसा कोई व्यक्ति पैदा नहीं हुआ है जिसके उंगलियों के निशान किसी और के साथ पूरी तरह से मेल खाते हों।

5. यह इस बात का प्रमाण है कि एक अनोखा 'कलाकार' है जो हर बार एक नई कृति रचता है।

6. जब दुनिया का सबसे बड़ा कंप्यूटर भी ऐसी रचना नहीं कर सकता तो यह कहना गलत नहीं होगा कि यह डिजाइन मानव बुद्धि से परे है।

7. प्रश्न उठता है - "क्या कोई है जो मेरी तरह सृजन कर सकता है?" यह प्रश्न उस अदृश्य कारीगर की कला को नमन करता है।

8. भले ही कोई दुर्घटना हो जाए, त्वचा जल जाए या रेखाएं मिट जाएं, समय के साथ वही रेखाएं वापस आ जाती हैं, एक भी कोशिका इधर-उधर नहीं होती, एक भी डिजाइन नहीं बदलती!

9. इससे पता चलता है कि रेखाएं सिर्फ त्वचा पर ही अंकित नहीं हैं, बल्कि अस्तित्व के एक गहरे स्तर पर हैं - एक प्रकार की आत्मिक छवि।

10. मानव शरीर का कोई अन्य अंग ऐसा नहीं है जिसे हूबहू वैसा ही बनाया जा सके, लेकिन उंगलियों के निशान एक अपवाद हैं - यह किसी दिव्य योजना की झलक है।

11. आज तक विज्ञान इस रहस्य को पूरी तरह से सुलझा नहीं पाया है। इसे 'जैविक स्मृति' या 'कोशिकीय बुद्धि' कहते हैं, *किन्तु आध्यात्मिक दृष्टि से यह आत्मा की पहचान है।

१२. इन रेखाओं में वक्र, शाखाएँ, वृत *ये सभी एक विशेष भाषा में लिखे गए कोड हैं, जिन्हें केवल उनका निर्माता ही समझता है।

13. उंगलियों के निशान न केवल पहचान का साधन हैं, बल्कि इनमें ब्रह्मांड के नियमों और हमारे कर्मों की कहानी भी समाहित है।

14. कोई भी टेक्नोलॉजी, कोई भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, कोई भी लैब आज तक ऐसी लाइनें नहीं बना पाई है जो वाकई अनोखी हों।

15. कई परंपराएं इन रेखाओं को 'ईश्वर की भाषा' मानती हैं और यही कारण है कि

हस्तरेखा शास्त्र आज भी प्रासंगिक और चमत्कारी माना जाता है।

16. यदि हमारी पहचान जन्म से पहले ही तय हो जाती है, तो यह भी संभव है कि हमारा जीवन भी किसी 'दैवीय लिपि' के अनुसार चल रहा हो।

17. "जब विज्ञान थक जाता है, तब अध्यात्म सामने आता है। यह कहता है - "कोई है जो यह सब चला रहा है।वह देख रहा है, समझ रहा है, और बना रहा है।"

18. यदि यह प्रकृति इतनी सूक्ष्म और परिपूर्ण हो सकती है, तो प्रकृति के पीछे अवश्य ही कोई परम चेतना होगी - जिसे भारतीय दर्शन 'ब्रह्म' कहता है

19. प्रत्येक फिंगरप्रिंट एक 'दिव्य पासवर्ड' है, जो केवल उसी को पता है जिसने हमें बनाया है।

२०. तो अंत में सवाल उठता है - क्या कोई है जो उस कलाकार की बराबरी कर सके? जवाब साफ़ है - "नहीं! हर शरीर पर, हर बार एक नया हस्ताक्षर बनाने वाला सिर्फ़ एक ही है, और वो है रचयिता!"

JAM 2026
JOINT ADMISSION TEST FOR MASTERS
Organizing Institute : IIT Bombay
The Joint Admission test for Masters (JAM) is conducted to provide admissions to Masters programmes at IITs for taking up science as a career option for the students. It will be conducted as a Computer Based Test in SEVEN Test Papers, namely, Biotechnology (BT), Chemistry (CY), Economics (EN), Geology (GG), Mathematics (MA), Mathematical Statistics (MS) and Physics (PH).
Candidates should apply ONLINE from 5th September to 12th October 2025.
For more details, please visit website https://jam2026.iitb.ac.in/
IIT Bombay is not responsible for printing errors, if any

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत के सदस्य बनने के लिए नीचे दिए गए गूगल फार्म पर क्लिक करें और भरकर जमा करे, पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट (पंजीकृत अंडर सेक्शन 60), नीति आयोग भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त, एमएसएमई में पंजीकृत
https://forms.gle/VEThcFgMcknGFc1u9

TEMPLE OF LIBERALIZATION AND SOCIAL WELFARE ALLIED TRUST REGT.

MEMBERSHIP FORM FOR TOLWA TRUST

transportvisheshcontent@gmail.com Switch account

The name, email, and photo associated with your Google account will be recorded when you upload files and submit this form

* Indicates required question

How you got aware about TOLWA trust *

- [ ] Social Media
- [ ] News Paper
- [ ] Personal connection
- [ ] Youtube
- [ ] Social Function/ RTO/friends/family

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

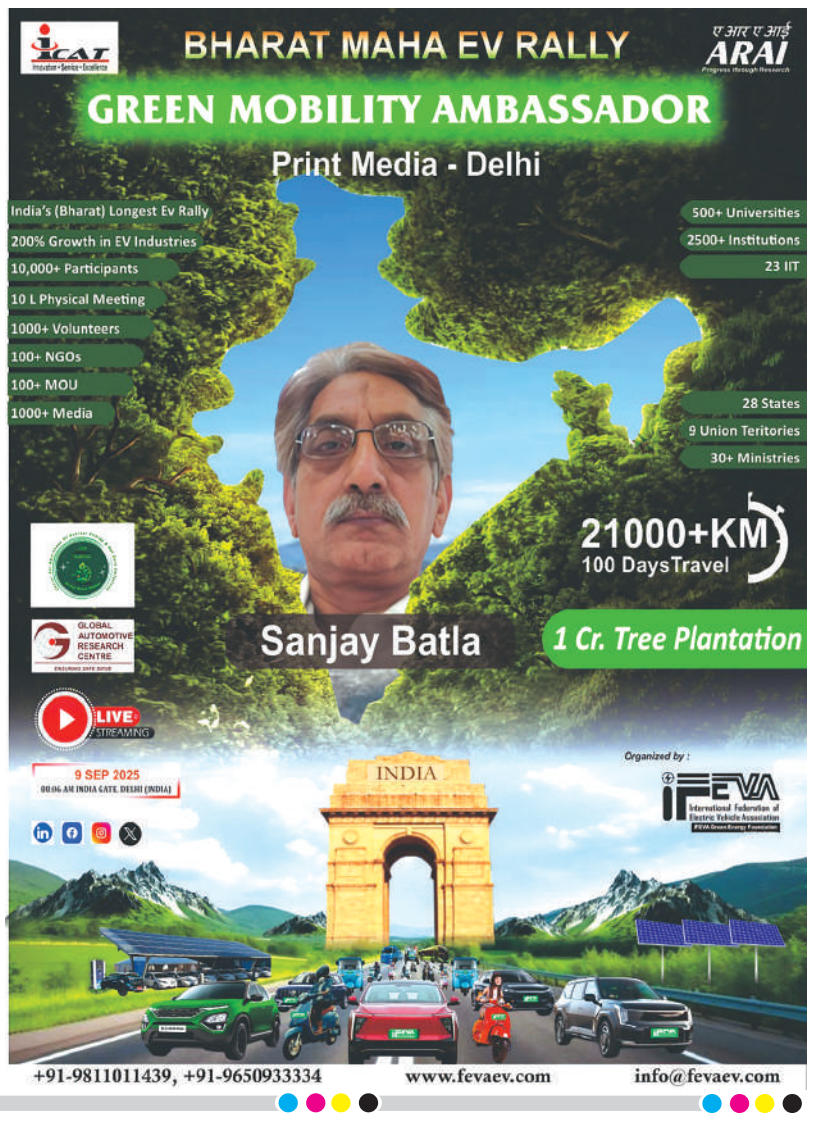

"सनातन पर थोपी गई कुप्रथाएँ: जिनका ना धर्म से वास्ता था, ना वेदों से"

1 सनातन धर्म कोई 'व्यवस्था' नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक विज्ञानसम्मत विधि है; जहाँ समयानुसार सुधार, परिवर्तन और प्रयोग सदैव स्वागत योग्य रहे हैं।लेकिन जब विदेशी आक्रांताओं ने भारत की आत्मा पर हमला किया, तब सनातन को विकृत किया गया।

2 'सती प्रथा': धर्म नहीं, युद्ध की त्रासदी थी। राजपूत रानियों का जौहर हिंदू परंपरा नहीं, बल्कि विदेशी आक्रांताओं से बचने का आखिरी उपाय था।जब तुर्क और अफ़ग़ान हमलावर राजाओं की हत्या कर रानियों को हरम में ले जाते थे, तब रानियाँ सामूहिक अग्नि में कूद जाती थीं।

👉 अंग्रेजों ने इसे सनातन की क्रूरता बताकर प्रचारित किया ताकि धर्म को 'बर्बर' साबित किया जा सके।

3 'देवदासी प्रथा': कला की हत्या। देवदासियाँ मंदिरों में कला, संगीत और नृत्य की साधक होती थीं।मुग़ल दरबारों में इन्हें मंदिरों से उठाकर नाचने-गाने वाली बना दिया गया।बाद में ईसाई मिशनरियों ने इसे "prostitution" की तरह पेश कर हिंदू समाज को ही दोषी बना दिया।

4 'छुआछूत': वेदों में नहीं, साजिश में है।वर्ण व्यवस्था जन्म से नहीं, कर्म से जुड़ी थी।मुग़लों ने ब्राह्मणों और गुरुकुलों को टारगेट कर समाज को विखंडित किया।फिर अंग्रेजों ने जातियों की फिक्स लिस्ट बनाई, ₹अछूत₹, ₹निचली जाति₹, ताकि आपस में वैमनस्य बना रहे।

5 'बाल विवाह': परंपरा नहीं, आपदा का हल था। विदेशी आक्रमणों के दौर में जब युवतियाँ उठाई जा रही थीं, तब समाज ने बाल विवाह को एक सुरक्षा उपाय के रूप में अपनाया।इसे 'धार्मिक परंपरा' कहकर बदनाम किया गया, जबकि वेदों में विवाह की न्यूनतम उम्र स्पष्ट है।

6 'पर्दा प्रथा': अरबी असर, वैदिक नहीं। स्त्रियाँ गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, शास्त्रार्थ करती थीं, युद्ध में जाती थीं, ज्ञान देती थीं।लेकिन इस्लामी काल में महिलाओं पर बार-बार हो रहे हमलों के कारण पर्दा एक रक्षा कवच बन गया।बाद में इसे "हिंदू संस्कृति" कहकर प्रचारित किया गया।

7 'विधवा अशुद्ध है': पाश्चात्य मिशनरियों का ब्रेनवॉश। वेदों में विधवाओं को पुनर्विवाह का अधिकार है (ऋग्वेद 10.18.8)।लेकिन मिशनरियों ने 'विधवा आश्रमों' की शुरुआत की, जहाँ कन्वर्जन का रास्ता खुला रखा गया।ये सनातन नहीं, धर्मांतरण की फैक्ट्री थी।

8 शूद्रों को वेद पढ़ने से रोकना: कौन सा धर्म था ये? रामायण में शबरी को श्रीराम ने प्रेम से झूठे बेर खाए।महाभारत में एकलव्य महान धनुर्धर था। आदिशंकराचार्य ने सभी जातियों में ज्ञान पहुँचाया।

👉 पर अंग्रेजों ने शूद्रों को 'अनपढ़' रखने के लिए शिक्षा व्यवस्था को ही पलट दिया।

9 'विधवा आश्रम': सेवा नहीं, धर्मांतरण का केंद्र। ब्रिटिश मिशनरियाँ विधवाओं को उठाकर आश्रमों में रखती थीं। वहाँ न कोई पुनर्विवाह होता था, न आत्मनिर्भरता सिखाई जाती थी; बल्कि धर्मांतरण के लिए मानसिक तोड़-फोड़ होती थी।

10 ये सभी कुप्रथाएँ सनातन की उपज नहीं, बल्कि विदेशी हमलों और औपनिवेशिक चालों की देन हैं। सनातन धर्म को बदनाम कर लोगों को धर्म से काटना, उनकी जड़ों से तोड़ना; यही असली मक़सद था।

आज सनातन की रक्षा करना है तो पहले हमें उसका सच्चा इतिहास जानना होगा, और थोपी गई झूठी प्रथाओं को हटाना होगा।

क्या आपको पता है क्यों किया था भगवान शिव ने शंखचूड़ का संहार..? क्यों तुलसी के बगैर शालग्राम की पूजा अधूरी होती है..?

प्रजापति महर्षि कश्यप की कई पत्नियां थीं। उनमें से एक नाम दनु था। दनु की संतान दानव कहलाई। उसी दनु के बड़े पुत्र का नाम दंभ था। दंभ बहुत ही सदाचारी और धार्मिक प्रवृति का था। अन्य दानवों की भांति उनमें न तो ईर्ष्या ही थी और न ही देवताओं से विद्वेष भावना। वह विष्णु का भक्त था और उन्हीं की आराधना किया करता था।

लेकिन उसे एक ही चिंता सताती रहती थी कि उसके कोई पुत्र न था।

आचार्य शुक्र ने उसे श्री कृष्ण मंत्र की दीक्षा दी। दंभ ने दीक्षा पाकर पुष्कर में महान अनुष्ठान किया। अनुष्ठान सफल हुआ। उसके अनुष्ठान से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु प्रकट होकर बोले – "वत्स ! मैं तुम्हारे अनुष्ठान से प्रसन्न हूं। वर मांगो।"

दंभ बोला – "भगवन ! यदि आप मेरी तपस्या से प्रसन्न हैं तो मुझे ऐसा पुत्र दें जो आपका भक्त हो और त्रिलोकजयी हो। उसे देवता भी युद्ध में न जीत सकें

भगवान विष्णु ने 'तथास्तु' कहा और अंतर्धान हो गए और दंभ प्रसन्नचित अपने घर लौट आया।

गोलोक में श्री राधा ने श्री कृष्ण-पार्षद श्रीदामा को असुर होने का शाप दिया था। शाप मिलने पर वही दंभ की पत्नी के गर्भ में आया। जन्म होने के पश्चात दंभ ने अपने उस पुत्र का नाम शंखचूड़ रखा। जब वह कुछ बड़ा हुआ तो दंभ ने उसे मुनि जैगीषिव्य की देख-रेख में रख दिया।

मुनि जैगीषिव्य ने उसे शिक्षा दीक्षा दी। अपनी कुमार अवस्था में ही शंखचूड़ पुष्कर में पहुंचा और उस महान धार्मिक तपस्थली में ध्यान मग्न रहकर वर्षों तक ब्रह्मा जी की तपस्या करता रहा। उसकी घोर तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी प्रकट होकर बोले – "वत्स ! मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूं। वर मांगो।"

"पितामह ! मुझे ऐसा वरदान दीजिए कि मुझे देवता पराजित न कर सकें।" शंखचूड़ ने कहा।

ब्रह्मा जी ने उसे ऐसा ही वरदान दिया और श्री कृष्ण कवच प्रदान करते हुए उसे आदेश दिया – "शंखचूड़ ! तुम बद्रिकाश्रम चले जाओ। वहां तुम्हारा भाग्य का सितारा उदय होने की प्रतीक्षा कर रहा है।"

आदेश मानकर शंखचूड़ बद्रिकाक्षम पहुंचा। वहां महाराज धर्मध्वज की पुत्री तुलसी भी तपस्या कर रही थी। दोनों का आपस में परिचय हुआ और ब्रह्मा जी की इच्छानुसार दोनों का विवाह हो गया। अपनी पत्नी को लेकर शंखचूड़, पुनः दैत्यपुरी लौट गया। शुक्राचार्य ने उसे दानवों का अधिपति बना दिया।

सिंहासन पर बैठते ही उसने अपना साम्राज्य बढ़ाने के लिए देवलोक पर चढ़ाई कर दी। ब्रह्मा जी के वरदान के कारण वह अजेय हो चुका था, अतः उसे देवों को हराने में कोई कठिनाई नहीं हुई। उसने अमरावती पर कब्जा जमा लिया। इंद्र अमरावती छोड़कर भाग निकले। देवता उसके डर से कंदराओं में जा छुपे।

शंखचूड़ तीनों लोकों का शासक हो गया और सब लोकपालों का कार्य भी उसने संभाल लिया। उसने अपनी प्रजा की भलाई के लिए अनेक कार्य किए। प्रजा उससे बहुत प्रसन्न थी। सर्वत्र सुख और शांति थी। क्योंकि शंखचूड़ स्वयं भी कृष्ण भक्त था। अतः उसकी प्रजा भी भगवान कृष्ण पर पूरी आस्था रखने लगी। उसके राज्य से अधर्म का नाश हो गया।

प्रजा इंद्र और देवताओं को भूलने लगी। इससे देवताओं को बहुत क्षोभ हुआ। इंद्र पितामह ब्रह्मा के

पास पहुंचकर बोले – "पितामह ! आपने शंखचूड़ को अभय होने का वरदान देकर उसे निरंकुश बना दिया है। वह अमरावती पर कब्जा जमाए बैठा है। देवता दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। हमें बताइए हम क्या करें।"

पितामह बोले – "सुरेंद्र ! शंखचूड़ धार्मिक और रीति से अपना शासन चला रहा है। प्रजा उससे प्रसन्न है। उसके राज्य में प्रजा सुखी और संपन्न है, हमें उससे कोई शिकायत नहीं है।"

इंद्र बोलें – "यह सब तो ठीक है पितामह ! लेकिन क्या हम यूं ही भटकते रहेंगे। आखिर अमरावती है तो देवताओं का ही।"

पितामह बोले – "अवश्य है। किंतु शंखचूड़ ने तुम्हें युद्ध में पराजित करके उसे प्राप्त किया है। उसने तुम्हारी प्रजा को भी कोई कष्ट नहीं पहुंचाया है। सिर्फ सिंहासनों का ही फेरबदल हुआ है न।"

इंद्र बोला – "लेकिन पितामह ! हम आपकी संतानें हैं। क्या आप चाहेंगे कि आपकी संतानें यूं ही दर-बदर भटकती रहें। कुछ उपाय कीजिए पितामह !"

पितामह बोले – "मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता देवेंद्र ! जब तक शंखचूंड़ के भाग्य में अमरावती का ऐश्वर्य भोगना है, वह भोगेगा ही। तुम भगवान विष्णु के पास चले जाओ। वे अवश्य कोई उपाय तुम्हें सुझा देंगे।"

वहां से निराश होकर इंद्र श्रीविष्णु के पास पहुंचा और उनकी स्तुति करके बोला – "भगवन ! देवता इस समय भारी संकट में हैं। ब्रह्मा जी ने अपनी असमर्थता जाहिर करके मुझे आपके पास भेज दिया है। कुछ कीजिए प्रभु ! अन्यथा संपूर्ण देव जाति ही नष्ट हो जाएगी।"

विष्णु बोले – "पितामह का कहना ठीक है। मैं भी अकारण शंखचूड़ के संबंधों में हस्तक्षेप करना पसंद नहीं करता। उसकी सारी प्रजा कृष्ण भक्त है और कृष्ण मेरा ही प्रतिरूप है। मैं अपने भक्त पर कष्ट होते नहीं देख सकता।

लेकिन निराश होने की आवश्यकता नहीं सुरराज ! तुम भगवान शिव के पास चले जाओ और उन्हीं से कोई उपाय पूछो। वे अवश्य तुम्हारे कष्ट का निवारण कर देंगे।"

विष्णु की बात सुनकर इंद्र निराश भाव से बैकुंठ से निकल आया। अंत में वह भगवान शिव के पास कैलाश पर्वत न जाकर शिवलोक पहुंचा और भगवान शिव की स्तुति करके अपने आने का प्रयोजन बताया।

भगवान शिव ने उसकी बात सुनी और उसे आश्वस्त किया – "धैर्य रखो सुरराज ! तुम्हारा सिंहासन तुम्हें अवश्य प्राप्त होगा। मैं गंधर्वराज चित्ररथ को अभी दूत बनाकर शंखचूड़ के पास रवाना करता हूं।"

शिव के आदेशानुसार गंधर्वराज चित्ररथ शंखचूड़ की राजधानी पहुंचा। उस समय शंखचूड़ अपने सिंहासन पर विराजमान था। चित्ररथ ने उसका अभिवादन करने के पश्चात अपने आने का कारण बताया – "दैत्यराज ! मैं गंधर्वराज चित्ररथ हूं और भगवान शिव का एक संदेश लेकर आपके पास आया हूं।"

यह सुनकर शंखचूड़ के चेहरे पर आश्चर्य झलक आया। शिव के दूत को सामने पाकर वह सिंहासन से उठकर बोला – "मेरा अहोभाग्य है कि भगवान शिव ने मुझे किसी योग्य समझा। आप संदेश सुनाइए। क्या संदेश भेजा है भगवान रुद्र ने ?"

गंधर्वराज बोला – "दैत्यराज ! भगवान शिव का संदेश है कि तुम देवताओं का राज्य उन्हें वापस लौटा दो और उनकी अधिकार उन्हें दे दो। भगवान शिव ने देवों को अभय होने का वचन दिया है।"

शंखचूड़ बोला – "गंधर्वराज ! भगवान शिव से मेरा प्रणाम कहना और उनसे कह देना कि शंखचूड़ के हृदय में आपके लिए बहुत ही ज्यादा श्रद्धा है। परंतु यदि उन्होंने इंद्र के बहकावे में आकर मुझे दंडित करने का निश्चय किया तो मैं उनकी बात नहीं मानूंगा और उनसे भी युद्ध करने के लिए तैयार हो जाऊंगा।"

चित्ररथ वापस लौटा और उसने भगवान शंकर को शंखचूड़ का उत्तर सुनाया। यह सुनकर शिव क्रोधित हो गए और अपने गणों को युद्ध का आदेश दे दिया।

उधर शंखचूड़ ने अपने पुत्र का अभिषेक कर उसे दानवाधिपति बना दिया और अपनी पत्नी से बोला – "मैंने युद्ध स्वीकार कर लिया है देवी ! ईश्वर करे युद्ध में हमारी विजय हो। अब मुझे अनुमति दो। मेरी सेनाएं तैयार हैं।"

शंखचूड़ अपनी सेनाएं लेकर युद्ध भूमि में जा पहुंचा। दोनों सेनाएं गोमत्रक पर्वत के समीप एक दूसरे के आमने-सामने आ खड़ी हुईं। भगवान शिव ने शंखचूड़ के पास एक बार फिर संदेश भेजा कि वह नादानी न करे और युद्ध से दूर रहकर उनकी बात मान ले। किंतु शंखचूड़ न माना और दोनों सेनाओं में घनघोर युद्ध छिड़ गया।

भगवान शिव और शंखचूड़ आमने-सामने डट गए। दोनों में अनेक अस्त्र-शस्त्रों से युद्ध होने लगा। फिर भगवान शिव ने ज्योंही शंखचूड़ का वध करने के लिए त्रिशूल उठाया तो आकाशवाणी हुई –

"देवाधिदेव ! आप प्रलयंकर हैं। सर्व समर्थ हैं किंतु आपको मर्यादा की रक्षा करनी चाहिए। श्रुति की मर्यादा को नष्ट न करें। जब तक शंखचूड़ के पास हरि का कवच है और जब तक उसकी पतिव्रता पत्नी मौजूद है, तब तक उस पर बुढ़ापा नहीं आ सकता और न ही उसकी मृत्यु हो सकती है।"

आकाशवाणी के खत्म होते ही शिव का त्रिशूल अपने आप रुक गया। तभी भगवान विष्णु प्रकट हुए। शिव बोले – "भगवन ! आपने तो मुझे बड़े धर्मसंकट में डाल दिया है। आप ही ने तो इंद्र को मेरे पास भेजा और जब मैंने उसे अभय करने के लिए युद्ध आरंभ किया तो अब आप ही का कवच आड़े आ रहा है। अब आप ही कोई उपाय सोचिए।"

विष्णु बोले – "शंखचूड़ के शाप का समय अब समाप्त होने ही वाला है भगवन ! अब इसे असुर योनि से मुक्त करके गोलोक भेजना पड़ेगा। यह कृष्ण भक्त है और कृष्ण मेरा ही प्रतिरूप है अतः इसे वापस गोलोक में भेजना होगा।"

फिर विष्णु ने एक ब्राह्मण का वेश धारण किया और शंखचूड़ के पास पहुंचकर बोले – "दानवराज ! मैं एक निर्धन ब्राह्मण हूं। कुछ पाने की आस लिए आपके पास आया हूं।"

शंखचूड़ बोला – "मांगो विप्रवर ! जो भी मेरे पास है उसे दे देने में मुझे किंचित भी विलंब नहीं लगेगा। मेरा सिर भी मांगोगे तो वह भी दे देने में इंकार नहीं करूंगा। आप आदेश तो दें।"

ब्राह्मण वेशधारी विष्णु बोले – "दैत्यराज ! मुझे आपका सिर नहीं आपका कवच चाहिए। बोलिए – देंगे अपना-कवच।"

शंखचूड़ ने अपना कवच उतारकर ब्राह्मण वेशधारी विष्णु को सौंपते हुए कहा – "अवश्य ! यदि भगवान कृष्ण की ऐसी ही इच्छा है तो ऐसा ही होगा। आप कवच ले जाइए।"

ब्राह्मण वेशधारी विष्णु कवच लेकर दैत्यपुरी पहुंचे। फिर उन्होंने शंखचूड़ का वेश धारण किया और राजमहल में जाकर शंखचूड़ की पत्नी तुलसी के पास पहुंचे। तुलसी ने उन्हें अपना पति ही समझा और उनका स्वागत किया। उस रात विष्णु शंखचूड़ के महल में ही ठहरे।

अचानक ही पतिव्रता तुलसी को धोखे का आभास हुआ। वह चौंककर बिस्तर से उठी। बोली – "कौन है तू और मेरे साथ छल करने का तुझमें साहस कैसे हुआ ? जल्दी बोल अन्यथा अपने पतिव्रत तेज से अभी भस्म करती हूं।"

विष्णु अपने वास्तविक रूप में प्रकट हो गए। उन्होंने तुलसी को समझाते हुए कहा – "सुनो तुलसी ! तुम्हारे पति का समय पूरा हुआ। एक शापके कारण ही उसे असुर योनि में आना पड़ा था। अब से वह गोलोक में रहेगा। क्योंकि तुम्हारा पतिव्रत धर्म ही उसकी रक्षा कर रहा था। इसलिए मुझे छल करके तुम्हें कलुषित करना पड़ा।"

तुलसी रोते हुए बोली – "यह आपने अच्छा नहीं किया भगवन ! यूं मेरे साथ छल करके मेरा सतीत्व नष्ट किया। मैं शाप देती हूं कि आज से आपको भी पत्थर बन जाना पड़ेगा। आपमें दया ममता नहीं है। आप पत्थर हैं पत्थर।"

विष्णु बोले – "और मैं तुम्हें वर देता हूं तुलसी कि मेरे पत्थर बन जाने पर तुम्हें भी मेरे पास ही स्थान मिलेगा। भविष्य में लोग तुलसी और शालग्राम की पूजा करेंगे। तुलसी के बगैर शालग्राम की पूजा अधूरी रहेगी।"

उसके बाद विष्णु अंतर्धान हो गए और युद्ध भूमि में खड़े शिव को अपनी दिव्य शक्ति से सब कुछ बता दिया। शंखचूड़ और शिव में पुनः युद्ध आरंभ हो गया किंतु तुलसी के पतिव्रत धर्म नष्ट हो जाने से शंखचूड़ की शक्ति घट गई थी।

जोगेश्वर शिव लिंग – आदि योगी की छाया में एक पवित्र स्थल

स्थान: कोयंबटूर, तमिलनाडु, निकट: ईशा योग केंद्र और 112 फुट ऊँची आदि योगी प्रतिमा भगवान शिव को समर्पित यह मंदिर, प्रकृति की गोद में बसा एक शांत और दिव्य स्थल है। विशाल शिवलिंग यहाँ के मुख्य आकर्षण में से एक है। यह स्थान ध्यान, साधना और आंतरिक शांति के लिए एक आदर्श तीर्थस्थल है।

चारों ओर हरियाली, पहाड़ और आध्यात्मिक ऊर्जा का अद्भुत मेल इसे और भी खास बनाता है। शिवरात्रि और अन्य धार्मिक पर्वों पर यहाँ भव्य पूजा-अनुष्ठान होते हैं, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु भाग लेते हैं।

विशेष अनुभव:
यहाँ की शांत ऊर्जा और शिव तत्व का गहरा अहसास मन को अध्यात्म से जोड़ता है।

यदि आप आदि योगी प्रतिमा के दर्शन करने जा रहे हैं, तो जोगेश्वर शिव लिंग मंदिर के दर्शन जरूर करें। यह आपकी यात्रा को और भी आध्यात्मिक बना देगा। यात्रा करें, दर्शन करें, अनुभव करें!

आज तक बरसाना वासी राधा को अपनी बेटी और नंदगांव वाले कान्हा को अपना बेटा मानते हैं !!

5160 बरस बीत गए परन्तु उन लोगों के भावों में फर्क नहीं आया !!
आज तक बरसाने की लड़की नंदगांव में ब्याही नहीं जाती सिर्फ इसलिए की नया रिश्ता जोड़ लिया तो पुराना भूल जाएगा !! हमारा राधाकृष्ण से प्रेम कम ना हो इसलिए हम नया रिश्ता नहीं जोड़ेंगे आपस में !!
आज भी नंदगांव के कुछ घरों की स्त्रियां घर के बाहर मटकी में माखन रखती हैं कान्हा ब्रज में ही है वेश बदल कर आएगा और माखन खायेगा !!
जहां 10 -12 बच्चे खेल रहे हैं उनमे एक कान्हा जरूर है ऐसा उनका भाव है आज भी !!
लेकिन आज भी बरसाने का कोई व्यक्ति नंदगांव आएगा तो प्यास चाहे तड़प ले पर एक बूँद पानी नहीं पियेगा नंदगांव का क्योंकि उनके बरसाने की राधा का ससुराल नंदगांव है !!
और बेटी के घर का पानी भी नहीं पिया जाता उनका मानना आज भी जारी है !! इतने प्राचीन सम्बन्ध को आज भी निभाया जा रहा है !!
धन्य है ब्रज भूमि का कण कण
करोड़ों बार प्रणाम प्रियतम प्रभु की जनम भूमि, लीलाभूमि ८ प्रेमभूमि

प्रेम पच्चीसा(भाग 18)

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़
सेवानिवृत जेल अधीक्षक बिलासपुर, छत्तीसगढ़

अजोड़ने की ख़बर जब अनीता के पति राकेश को लगती है तो वो अनीता और बेटी राधा से मिलने स्व सहायता केंद्र जाता है । जहां राधा और सभी महिलाएं माया , सुधा जी और मालती के मार्गदर्शन में आत्म-निर्भरता ले लिए जूते, बांस और लकड़ी का सामान , खिलौने, अगरबत्ती बनाते और विक्रय करते जिस से उनका खुशी से जीवन चलता देखकर राकेश का हृदय परिवर्तन होता है। वह सोच रहा था कि कई सालों से शराबखोरी में उसका धन ही नहीं पूरा परिवार झड़प गया है ।

राकेश, जिसका जीवन शराब की लत में डूबकर बिखर चुका था, उस दिन समाज सेवा समूह के केंद्र में खड़ा था। उसकी आँखों में पहले गुस्सा था, जब उसे पता चला कि अनीता ने राधा को अपने साथ इस समूह में शामिल किया। वह सोचता था कि यह सब समय की बर्बादी है, कि अनीता और राधा को घर पर रहकर उसकी बात माननी चाहिए। लेकिन जैसे ही वह केंद्र के अंदर दाखिल हुआ, उसका गुस्सा धीरे-धीरे आश्चर्य में बदलने लगा।

केंद्र में एक जीवंत माहौल था। माया, सुधा जी, और मालती के मार्गदर्शन में महिलाएं हँसते-मुस्कुराते हुए अपने काम में लगी थीं। कोई बांस की टोकरियाँ बना रहा था, कोई लकड़ी के खिलौनों को रंग रहा था, और कोई जूतों की सिलाई में मगन था। राधा, जो पहले घर में चुपचाप रहती थी, अब आत्मविश्वास से भरी हुई थी। वह सुधा जी के साथ मिलकर एक छोटा सा लकड़ी का खिलौना गाड़ी बना रही थी, और उसकी आँखों में चमक थी। अनीता पास ही बैठी थी, एक जोड़ी चप्पल की सिलाई पूरी कर रही थी। उसका चेहरा शांत और संतुष्ट था, जो राकेश ने सालों से नहीं देखा था।

राकेश ने एक कोने में खड़े होकर यह सब देखा। उसका दिल भारी हो गया। उसने याद किया कि कैसे उसकी शराब की लत ने न केवल उसका धन, बल्कि उसके परिवार का सुख-चैन भी छीन लिया था। अनीता और राधा की हँसी, जो कभी उनके घर की शोभा थी, कब की गायब हो चुकी थी। लेकिन यहाँ, इस समूह में, वह हँसी फिर से लौट आई थी।

माया ने राकेश को देखा और पूछा , आप कौन हैं तब राकेश की आँखें भर आई। बोल- मैं राधा का अभागा पिता राकेश हूँ, अनीता के साथ मैंने बहुत ज़ुल्म किए हैं। माय और सुधा जी ने राकेश की ओर मुस्कुराते हुए पास बुलाया। "राकेश जी, आइए, देखिए हम क्या कर रहे हैं। यह सिर्फ़ काम नहीं, एक नया जीवन है।" राकेश कुछ बोल नहीं पाया। उसने देखा कि कैसे हर महिला अपने काम में गर्व महसूस कर रही थी। सुधा जी ने उसे बताया कि इस समूह ने न केवल उन्हें आत्म-निर्भर बनाया, बल्कि उनके बच्चों को सच्चे प्रेम से बेहतर शिक्षा और भविष्य की उम्मीद भी दी।

शर्मिंदा राकेश , चुपचाप अनीता के पास बैठा। "मैंने तुम दोनों को बहुत दुःख दिया है, अनीता," उसने धीमी आवाज़ में कहा। "लेकिन आज जो मैंने देखा, उसने मेरे दिल को छू लिया। मैं बदलना चाहता हूँ। मुझे एक मौका दो।" मेरे पुराने दिन वापस ला दो अनीता मैं बुरा आदमी नहीं हूँ , नशे ने बर्बाद कर दिया।

अनीता ने धड़कते दिल से उसकी आँखों में देखा। वहाँ ईमानदारी थी, जो उसने सालों में नहीं देखी थी। "राकेश, यह आसान नहीं होगा," उसने कहा। "लेकिन अगर तुम सचमुच बदलना चाहते हो, तो मैं और राधा तुम्हारे साथ हैं। यह समूह हमें सिर्फ़ काम नहीं सिखाता, यह हमें एक-दूसरे का साथ निभाना भी सिखाता है।"

अगले दिन, राकेश ने माया से मुलाकात की। उसने शराब छोड़ने की इच्छा जताई और समूह में शामिल होने की बात कही। माया ने उसे बताया कि पुरुषों के लिए भी एक छोटा सा प्रशिक्षण कार्यक्रम रोहन जी शुरू करने वाले हैं , जिसमें वह लकड़ी का फर्नीचर बनाना, टेलरिंग , डिटर्जेंट पाउडर , पेंटिंग सिखाने का प्रशिक्षण चलाएंगे । राकेश ने कहा मेडम मैं अच्छा फोटोग्राफर था, गलत संगत और पीने खाने में सब बर्बाद हो गया । अगर आप अवसर देंगे तो सभी कार्यक्रम कि फोटोग्राफी और सोशल मीडिया का काम कर सकता हूँ। रोहन , राकेश की आँखों में प्रयश्चित और कुछ करने का विश्वास देख रहे थे, उन्होंने तत्काल हामी भरी कि राकेश हमारे साथ कम करेंगे । यह पहला कदम था अंधेरे से रोशनी की ओर एक नई शुरुआत थी परिवार को जोड़ने की ।

उसी दिन से , राकेश ने न केवल शराब छोड़ दी, बल्कि वह समूह में एक कुशल फोटोग्राफर बन गया। एक साल बाद बाद राकेश , अनीता और राधा को लेकर अपने घर गाँव चला गया उसने और अनीता ने मिलकर एक छोटा सा दुकान किराये पर लिया , जहाँ राधा भी अपने बनाए खिलौने बेचती थी। राकेश फोटोग्राफी के साथ- साथ बिजली , पंखे और एयरकंडिशनर मशीन सुधारने का काम भी समूह में सीख चुका था। उनका घर फिर से हँसी और उम्मीद से भर गया। राकेश अब हर सुबह उठकर अनीता और राधा के साथ काम पर जाता, और हर शाम वे एक-दूसरे को अपनी उपलब्धियाँ बताते।

पहले डर था अब हैं जश्न...!

खेल दुनिया में "कश्मीर" हुआ शुमार,
'रात्रि मैच' से उसे मिली नई पहचान।
एक तरफ बाढ़ एवं तबाही का मंजर,
ये दूसरी ओर हैं क्रिकेट महासमुन्दर।

आतंकवाद का रगढ़ा मिटा ये हैं प्रश्न,
जहां पहले डर था वहां अब हैं जश्न।
पुलवामा रखेलोंर की ओर हैं बढ़ रहा,
उम्मीद, शांति व विकास शिखर रहा।

ये युवा खेल के मैदान में बैट उठा रहा,
चौका-छक्का लगा कश्मीर बदल रहा।
'रॉयल पुलवामा प्रीमियर लीग' के वीर,
यह देश देख रहा राज्य की नई तस्वीर।
(संदर्भ-खेल दुनिया में कश्मीर को मिली पहचान)

संजय एम तराणेकर

मैं' और 'हम'

मैं' और 'हम' दो समानार्थी शब्द हैं, लेकिन उनका अर्थ बिल्कुल अलग हैं।
'मैं' अकेलेपन/अंहकार का प्रतीक हैं वहीं 'हम' अपनत्व का भाव है जहां साथ/सहयोग/समर्पण की नींव पर रिश्ते बनते हैं।
जहां 'मैं' सीमा-रेखाएं खींचता है, 'हम' पुल बनता है। सफलता 'मैं' से नहीं, 'हम' से मिलती है।
ध्यान रहे कि अकेले चलने से रास्ता अवश्य छोटा हो सकता है, पर साथ चलने से मंजिल परिपक्व होती है।

कैलासशैलशिखरं प्रतिकम्प्यमानं कैलासशृङ्गसदृशेन दशाननेन। यः पादपद्मपरिवादनमादधान- स्तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।

भावार्थ-
कैलाशपर्वत के शिखर के समान ऊंचे शरीर वाले दशमुख रावण के द्वारा हिलाई जाती हुई कैलासगिरि की चोटी को जिन्होंने अपने चरणकमलों से ताल देकर स्थिर कर दिया, उन शरणदाता भगवान श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूं।

येनासकृद् दितिसुता: समरे निरस्ता विद्याधरोरगगणाश्च वरै: समग्रा:।
संयोजिता मुनिवरा: फलमूल भक्षा- स्तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।

भावार्थ-
जिन्होंने अनेकों बार दैत्यों को युद्ध में परास्त किया है और विद्याधर, नागगण तथा फल-मूल का आहार करने वाले सम्पूर्ण मुनिवरों को उत्तम वर दिये हैं, उन शरणदाता भगवान श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूं।

दग्ध्वाध्वरं च नयने च तथा भगस्य पूष्णस्तथा दशनपंक्तिमपातयच्च।
तस्तम्भ य: कुलिशयुक्तमहेन्द्रहस्तं तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।

भावार्थ-
जिन्होंने दक्ष का यज्ञ भस्म करके भग देवता की आंखें फोड़ डाली और पूषा के सारे दांत गिरा दिये तथा वज्रसहित देवराज इंद्र के हाथ को भी स्तम्भित कर दिया (जड़वत निश्चेष्ट बना दिया), उन शरणदाता भगवान श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूं।

एनस्कृतोपि विषयेष्वपि सक्तभावा ज्ञानान्वयश्रुतगुणैरपि नैव युक्ता।
यं संश्रिता: सुखभुज: पुरुषा भवन्ति तं शंकरं शरणदं शरणं व्रजामि।।

भावार्थ-
जो पापकर्म में निरत और विषयासक्त हैं, जिनमे उत्तम ज्ञान, उत्तम कुल, उत्तम शास्त्र-ज्ञान और उत्तम गुणों का भी अभाव है -- ऐसे पुरुष भी जिनकी शरण में जाने से सुखी हो जाते हैं, उन शरणदाता भगवान श्रीशंकर की मैं शरण लेता हूं।

दिल्ली में यमुना का जल स्तर जाएगा 206 मीटर के पार ! सोमवार को छह बार में छोड़ा गया 18 लाख क्यूसेक पानी

उत्तरी भारत में भारी बारिश के कारण यमुना नदी का जलस्तर दिल्ली में बढ़ रहा है। हरियाणा के हथनी कुंड से भारी मात्रा में पानी छोड़े जाने से बाढ़ का खतरा बढ़ गया है। निचले इलाकों में रहने वालों को राहत शिविरों में जाने की सलाह दी गई है। सरकार ने निगरानी बढ़ा दी है और लोगों से सतर्क रहने का आग्रह किया है।

नई दिल्ली। उत्तरी क्षेत्र में पिछले कई दिनों से हो रही मूसलधार वर्षा से यमुना का जलस्तर बढ़ रहा है। पिछले एक पखवाड़े में दिल्ली में यमुना का पानी तीन बार खतरे के निशान को पार कर चुका है।

अभी भी यह चेतावनी स्तर के ऊपर है परंतु, सोमवार को हरियाणा के हथनी कुंड से प्रति घंटे तीन लाख क्यूसेक से अधिक पानी छोड़े जाने से राजधानी में बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न होने का खतरा बढ़ गया है।

सुबह नौ बजे अधिकतम 3.29 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया है, जिससे देर रात या मंगलवार सुबह तक दिल्ली में यमुना के खतरे के निशान को पार करने की संभावना है।

इससे पहले 11 जुलाई को 3.59 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया था, जिससे लोहा पुल के पास यमुना का स्तर रिकार्ड 208.66 मीटर तक पहुंच गया था।

आईटीओ सहित दिल्ली के कई क्षेत्रों में एक सप्ताह तक पानी भरा रहा था। इसे ध्यान में रखकर सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग ने निगरानी बढ़ा दी है। निचले क्षेत्रों में रहने वालों को राहत शिविर में जाने को कहा जा रहा है।

हथनी कुंड से सोमवार सुबह से ही तीन लाख क्यूसेक से अधिक पानी छोड़ा जा रहा है। एक क्यूसेक प्रति सेकंड एक घन फुट पानी के प्रवाह को मापता है, जो लगभग 28.317 लीटर प्रति सेकंड के बराबर होता है।

इसका असर मंगलवार सुबह तक दिल्ली में दिखेगा। अभी लोहा पुल के पास यमुना का जलस्तर 205 मीटर से नीचे है। इसे ध्यान में रखकर सतर्कता बढ़ा दी गई है।

दिल्ली सरकार के केंद्रीय बाढ़ नियंत्रण केंद्र के प्रभारी ने भी बाढ़ की चेतावनी जारी कर सभी सेक्टर अधिकारियों को निगरानी बढ़ाने, सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग और पुलिस को यमुना के किनारों पर गश्त बढ़ाने को कहा है। कहा गया है कि शीघ्र ही लोहा पुल पर पानी का स्तर 206.50 मीटर के ऊपर पहुंच सकता है।

जुलाई 2023 में आईटीओ सहित कई क्षेत्रों में भर गया था पानी

जुलाई, 2023 में आइटीओ बैराज के 32 में से पांच गेट नहीं खुले थे। ड्रेन नंबर 12 का रेगुलेटर भी टूट गया था जिससे यमुना का पानी आईटीओ के आसपास के क्षेत्रों में फैल गया था। यमुना में पानी बढ़ने के कारण दिल्ली के नालों के गेट बंद करने पड़े थे। इससे भी परेशानी बढ़ गई थी।

आईटीओ क्षेत्र, राजघाट के साथ यमुना खादर में स्थित गढी मांडू गांव, पुराना उस्मानपुर गांव के साथ ही कश्मीरी गेट के नजदीक यमुना बाजार और मोनास्ट्री मार्केट, रिंग रोड पर मजनू का टीला, बदरपुर विधानसभा क्षेत्र के जैतपुर विश्वकर्मा कालोनी, आइटीओ क्षेत्र, राजघाट के साथ ही कई क्षेत्रों में पानी भर गया था।

खुले हैं आईटीओ बैराज के सभी गेट

पिछले दिनों यमुना के खतरे के निशान को पार करने पर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने निचले क्षेत्रों का निरीक्षण किया था। उन्होंने दावा किया था कि बाढ़ रोकथाम के लिए सभी आवश्यक उपाय किए गए हैं।

सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण मंत्री प्रवेश वर्मा ने भी इंद्रप्रस्थ मेट्रो स्टेशन व विश्व स्वास्थ्य संगठन के कार्यालय के नजदीक ड्रेन नंबर 12 के रेगुलेटर का निरीक्षण किया था।

उनका कहना है कि आईटीओ बैराज के सभी गेट खुले हुए हैं। वर्ष 2023 की तरह इस बार कोई गेट बंद नहीं है, जिससे जलप्रवाह में कोई रुकावट नहीं आ रही है।

दिल्ली सरकार की तैयारी

निचले क्षेत्र से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर जाने के लिए मुनादी कराई जा रही है।

लोहा पुल से शास्त्री पार्क मेट्रो स्टेशन जाने वाले मार्ग, मयूर विहार, आइटीओ पुल के नजदीक राहत शिविर तैयार किए गए हैं।

मुख्य निगरानी कक्ष के साथ ही 14 अन्य स्थानों पर 24x7 घंटे काम करने वाला निगरानी केंद्र तैयार किया गया है।

सभी बैराज, रेगुलेटर, पंपिंग स्टेशनों और जल निकासी प्रणालियों की निगरानी की जा रही है।

14 स्थानों पर बोट, जरूरी उपकरण, स्वास्थ्यकर्मी और गोताखोर के साथ अलग-अलग स्थानों पर टीम तैनात की गई। बाढ़ नियंत्रण विभाग के कर्मचारी बोट से पल्ला से जैतपुर तक यमुना खादर की निगरानी कर रहे हैं।

हथनी कुंड से सबसे अधिक 2013 में छोड़ा गया था पानी

यमुना के जलस्तर का सीधा संबंध हथनी कुंड बैराज से छोड़े गए पानी से है। पूर्व के वर्षों में भी यहां से छोड़े गए बड़ी मात्रा में पानी से दिल्ली में बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई थी।

1978: 7 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया था जिससे दिल्ली में यमुना का जल स्तर 207.49 मीटर तक पहुंचा था।

2010: 7.44 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया जिससे जलस्तर 207.11 मीटर तक पहुंचा था।

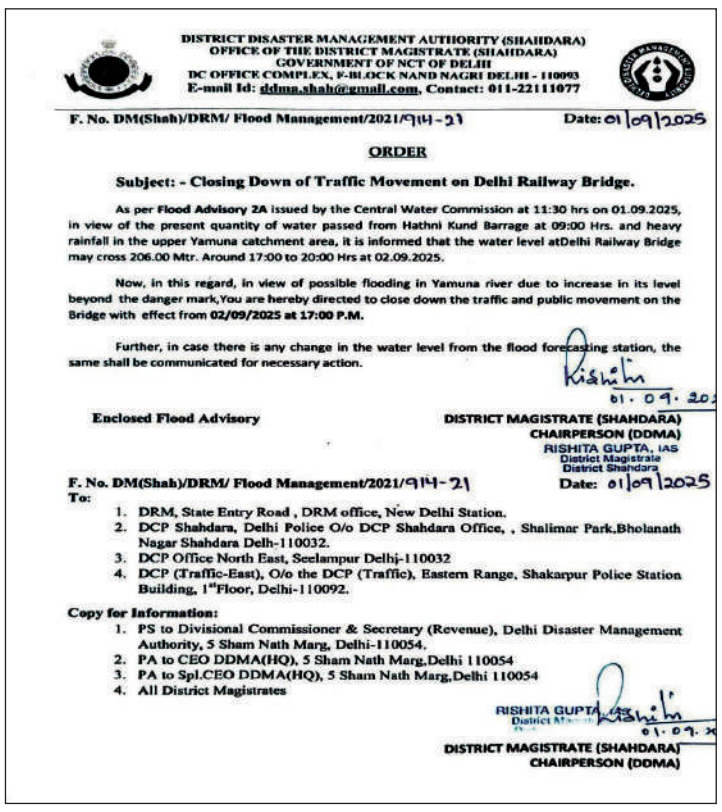

DISTRICT DISASTER MANAGEMENT AUTHORITY (SHAHDARA)
OFFICE OF THE DISTRICT MAGISTRATE (SHAHDARA)
GOVERNMENT OF NCT OF DELHI
DC OFFICE COMPLEX, F-BLOCK NAND NAGRI DELHI - 110093
E-mail Id: ddma.shah@gmail.com, Contact: 011-22111077

F. No. DM(Shah)/DRM/ Flood Management/2021/914-21 Date: 01/09/2025

ORDER

Subject: - Closing Down of Traffic Movement on Delhi Railway Bridge.

As per Flood Advisory 2A issued by the Central Water Commission at 11:30 hrs on 01.09.2025, in view of the present quantity of water passed from Hathni Kund Barrage at 09:00 Hrs. and heavy rainfall in the upper Yamuna catchment area, it is informed that the water level atDelhi Railway Bridge may cross 206.00 Mtr. Around 17:00 to 20:00 Hrs at 02.09.2025.

Now, in this regard, in view of possible flooding in Yamuna river due to increase in its level beyond the danger mark,You are hereby directed to close down the traffic and public movement on the Bridge with effect from **02/09/2025 at 17:00 P.M.**

Further, in case there is any change in the water level from the flood forecasting station, the same shall be communicated for necessary action.

01.09.20[illegible]

Enclosed Flood Advisory

DISTRICT MAGISTRATE (SHAHDARA)
CHAIRPERSON (DDMA)
RISHITA GUPTA, IAS
District Magistrate
District Shahdara

F. No. DM(Shah)/DRM/ Flood Management/2021/914-21 Date: 01/09/2025
To:
1. DRM, State Entry Road , DRM office, New Delhi Station.
2. DCP Shahdara, Delhi Police O/o DCP Shahdara Office, , Shalimar Park,Bholanath Nagar Shahdara Delh-110032.
3. DCP Office North East, Seelampur Delhj-110032
4. DCP (Traffic-East), O/o the DCP (Traffic), Eastern Range, Shakarpur Police Station Building, 1st Floor, Delhi-110092.

Copy for Information:
1. PS to Divisional Commissioner & Secretary (Revenue), Delhi Disaster Management Authority, 5 Sham Nath Marg, Delhi-110054.
2. PA to CEO DDMA(HQ), 5 Sham Nath Marg,Delhi 110054
3. PA to Spl.CEO DDMA(HQ), 5 Sham Nath Marg,Delhi 110054
4. All District Magistrates

RISHITA GUPTA, IAS
District Magistrate
01.09.2[illegible]
DISTRICT MAGISTRATE (SHAHDARA)
CHAIRPERSON (DDMA)

2013: 8.06 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया जिससे जलस्तर 207.32 मीटर तक पहुंचा था।

2023: 3.59 लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया और उस समय यमुना का स्तर रिकार्ड 208.66 मीटर तक पहुंच गया था।

सोमवार को छोड़ा गया पानी और दिल्ली में यमुना का जल स्तर

सुबह 5 बजे 210359 क्यूसेक पानी छोड़ा गया और जल स्तर 205.07 मीटर पहुंच गया।

सुबह7 बजे 272642 क्यूसेक पानी छोड़ा गया और जल स्तर 205.02 मीटर पहुंच गया।

सुबह 9 बजे 329309 क्यूसेक पानी छोड़ा गया और जल स्तर 204.95 मीटर पहुंच गया।

पूर्वाह्न 11 बजे 319363 क्यूसेक पानी छोड़ा गया और जल स्तर 204.80 मीटर पहुंच गया।

दोपहर 1 बजे 323176 क्यूसेक पानी छोड़ा गया और जल स्तर 204.82 मीटर पहुंच गया।

अपराह्न 3 बजे 323176 क्यूसेक पानी छोड़ा गया और जल स्तर 204.88 मीटर पहुंच गया।

हथनी कुंड से तीन लाख क्यूसेक से अधिक पानी छोड़े जाने के कारण यमुना का जलस्तर बढ़ रहा है। सभी सेक्टर अधिकारियों, जिला प्रशासन व दिल्ली पुलिस को हाई अलर्ट पर रखा गया है। यमुना खादर में रहने वालों को सुरक्षित स्थानों पर भेजने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। यमुना किनारे 24 घंटे गश्त शुरू की गई है। नालों के रेगुलेटर और पंपों पर लगातार नजर रखी जा रही है। हर नागरिक को आश्वस्त करना चाहता हूं कि घबराने की कोई जरूरत नहीं है। दिल्ली सरकार पूरी तरह से अलर्ट पर है। नागरिकों को सतर्क रहने अधिकारियों को पूरा सहयोग देने का आग्रह है।

– प्रवेश वर्मा (दिल्ली सरकार के सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण मंत्री)

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा–डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान
संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

रक्षा द सेवियर की ओर से प्रस्तुत
गरबा महोत्सव में विशेष अपील
हमारी रक्षा द सेवियर की ओर से
रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है—
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें :
- पुराने कपड़े
- पुराने कंबल
- पुराने जूते-चप्पल
- बच्चों के लिए बैग
- किताबें

आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है

स्थान :
रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
- दशहरे के दूसरे दिन
- दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
- स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड

स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

संपर्क सूत्र :
इंदु राजपूत – 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

बेहतर होगी दिल्ली की लास्ट माइल कनेक्टिविटी, सड़कों पर उतरेगी दो हजार नई 'देवी' बसें; 146 रूट तैयार

दिल्ली में लास्ट माइल कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने के लिए देवी बस सेवा के तहत 2000 बसें चलाने की योजना है। अभी तक 671 बसें ही चल रही हैं। डीटीसी ने 146 नए रूट तय किए हैं जिनमें सुधार के लिए आईआईटी से परामर्श लिया जा रहा है। रूट 10-12 किलोमीटर के होंगे और पूर्वी दिल्ली से शुरुआत होगी। दिल्ली को 6 जोन में बांटकर रूट बनाए गए हैं।

नई दिल्ली। दिल्ली में लास्टमाइल कनेक्टिविटी के तहत लोगों को उनकी कॉलोनी के पास बस सेवा उपलब्ध कराने के लिए शुरू की गई देवी बस सेवा के तहत अभी तक दिल्ली में 671 के करीब बसें ही सड़कों पर आ सकी हैं, मगर सरकार दिल्ली भर के लिए सभी देवी बसें सड़कों पर उतरने से पहले रूट तय करने की तैयारी में है।

दिल्ली सरकार इस सेवा के तहत सड़कों पर दो हजार बसें उतारी जाएंगी। डीटीसी ने देवी बसों के लिए 146 नए रूट तय किए हैं। सरकार को इसकी रिपोर्ट सौंपी गई है।

दिल्ली सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि रूटों के विभाजन में कुछ खामियां हैं, कुछ कालोनियां छूट रही हैं, रूट में बदलाव कर जिन्हें शामिल किया जा सकता है, कुछ और मेट्रो स्टेशन आदि जोडे.जा सकते हैं। ऐसी खामियों को दूर करने के लिए आईआईटी से कहा गया है। खामियां दूर करने के बाद रिपोर्ट जारी की जाएगी।

रूट इस तरह बनाए गए हैं कि हर रूट पर 1-2 मेट्रो स्टेशन भी आएं। प्रत्येक रूट की लंबाई 10-12 किलोमीटर होगी। पूर्वी दिल्ली से इन बसों के रूट को लान्च करने की तैयारी चल रही है। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि करीब 2 हजार देवी बसों में से मरम्मत और कुछ रिजर्व बसों को छोड़कर रोजाना औसतन 1741 देवी बसों के चलने की उम्मीद है।

यहां बता दें कि लास्टमाइल कनेक्टिविटी के तहत दिल्ली की जनता को सुविधा उपलब्ध कराने के लिए लाई गई देवी बस सेवा के तहत डीटीसी जहां 2080 बसें लेकर आने का लाने के लक्ष्य के साथ चलेगी, वहीं डिम्ट्स के तहत भी देवी बसें लाए जाने का प्रविधान है।

अभी तक ड्रिम्ट्स के तहत 259 बसें आ चुकी हैं और डीटीसी के तहत 410 बसें अब तक सड़कों पर उतर चुकी हैं, जल्द ही कुछ और बसें आने की उम्मीद की जा रही है। दिल्ली सरकार का दावा है कि अगले साल तक सभी 2000 देवी बसें सड़कों पर आ जाएंगी।

डीटीसी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि देवी बसों के लिए रूट तय करने के दौरान यह भी देखा गया कि किन-किन इलाकों में सार्वजनिक परिवहन की सुविधा में कमी है। अब पूरी दिल्ली को 6 जोन में बांटकर रूट बनाए गए हैं।

साउथ-वेस्ट दिल्ली और साउथ दिल्ली जोन में सबसे ज्यादा 32-32 रूट बनाए गए हैं और इन रूटों पर क्रमशः 382 व 307 देवी बसें चलाई जाएंगी।

इसी तरह उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली जोन में 27 रूट बनाए गए हैं, जिस पर 352 देवी बसें चलाई जाएंगी। यमुनापार में 19 रूट बनाए गए हैं और इस रूट पर 219 देवी बसें चलेंगी। पश्चिमी दिल्ली में 17 रूट बनाए गए हैं, जिस पर 313 देवी बसें चलेंगी। मध्य-उत्तरी दिल्ली जोन में 19 रूट बनाए गए हैं और इस रूट पर 168 देवी बसें चलेंगी।

इन मार्गों पर पड़ने वाले डीटीसी बस स्टैंड पर तो बसें रुकेंगी ही, लेकिन जिन इलाकों में डीटीसी बस स्टैंड नहीं हैं, वहां जगह होने पर देवी बसों के लिए अलग से स्टैंड भी बनाए जाएंगे। जहां जगह नहीं होगी, वहां पोल व बोर्ड लगाकर देवी बसों के स्टैंड व रूट नंबर की जानकारी दी जाएगी।

मोदी सरकार को बड़ा संभल कर चीन के साथ आगे बढ़ने की जरूरत - संजय सिंह

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी ने एक बार फिर मोदी सरकार को चीन के साथ बहुत ही सोच समझ कर समझदारी पूर्वक संबंध बनाने की नसीहत दी है। ₹आप₹ वरिष्ठ नेता और सांसद संजय सिंह ने कहा कि मोदी सरकार को बड़ा संभल कर चीन के साथ आगे बढ़ने की जरूरत है। भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान चीन, तुर्की और अज़रबैजान से पाकिस्तान को हथियार-मिसाइलें मिलीं थी। इसके बावजूद मोदी जी चीन का ध्यानबाद कर रहे हैं। जिस चीन ने हमेशा पाकिस्तान का साथ दिया है। आज उसी का भाजपा वाले गुणगान कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तान को पूरी तरह से हथियार, मिसाइलें, ड्रोन सब कुछ अगर कहीं से मिला, तो वह चीन, अजरबैजान और तुर्की से मिला है। भारत सरकार और सेना के अधिकारियों ने यह माना है कि हम सिर्फ पाकिस्तान से नहीं, बल्कि पाकिस्तान और चीन दोनों से लड़ रहे थे। यह अब सार्वजनिक सत्य है। इसमें कुछ छिपाया नहीं जा सकता।

संजय सिंह ने कहा कि हमारा मानना है कि भारत को चीन के साथ रिश्ते बहुत सोच-समझकर और सावधानी से बनाने चाहिए। मोदी सरकार को थोड़ा धीरे चलना चाहिए। मैं फिर कह रहा हूँ कि बाबूजी, धीरे चलना, प्यार में जरा संभलना।" ऐसा नहीं होना चाहिए जो अभी मोदी जी कर रहे हैं। मोदी जी तुरंत पहुँचकर गले लगाने लगते हैं। कभी झूला झुलाने लगते हैं, कभी साष्टांग दंडवत हो जाते हैं, कभी तारीफों के पुल बाँधने लगते हैं। आखिर मोदी जी, किस बात के लिए चीन को धन्यवाद दे रहे हैं? क्या इसलिए कि हमारी 26 बहनों के माथे का सिन्दूर उजाड़ गया, गलवान घाटी में हमारे 20 जवान शहीद हुए,

चीन नॉर्थ-ईस्ट से लेकर लद्दाख तक भारत में घुसपैठ करता है? या इसलिए कि युद्ध के वक्त चीन ने पाकिस्तान और उसके आतंकवादियों का साथ दिया?

उन्होंने कहा कि चीन कह रहा है कि पाकिस्तान आतंकवाद से पीड़ित देश है। इससे ज्यादा शर्मनाक बात और क्या हो सकती है? फिर भी, मोदी सरकार द्वारा छह साल में 40 लाख करोड़ रुपये का व्यापार चीन को दिया गया। छह साल में भारत में चीन से 40 लाख करोड़ रुपये का आयत हुआ है। मोदी भक्त 40 लाख करोड़ लिखते-लिखते थक जाएँगे। करोड़ों रुपए के व्यापार के बाद भी चीन ने भारत और पाकिस्तान की लड़ाई के दौरान चीन ने भारत का नहीं, बल्कि पाकिस्तान का साथ दिया। फिर मोदी भक्त जिनपिंग के गुणगान में जुटे हैं।

संजय सिंह ने कहा कि मोदी सरकार की विदेश नीति ठीक नहीं है। पीएम मोदी के लिए बहुत सोच-समझकर कदम उठाने की जरूरत है। यह वही नरेंद्र मोदी जी हैं, जो कभी कहते थे कि लाल आँख दिखाओ। अब उनकी लाल, नीली, पीली नहीं दिख रही है। बस अब कभी अमेरिका धमकाता है, तो कभी चीन। चीन ने क्षेत्रीय अखंडता का पालन नहीं किया। इसलिए चीन के साथ कोई भी कदम बहुत सोच-समझकर उठाना चाहिए।

लेगेसी ओपन 2025: जेपी ग्रीन्स में दिखा महिलाओं और पुरुषों का गोल्फ मुकाबला

मुख्य संवाददाता

ग्रेटर नोएडा: जेपी ग्रीन्स गोल्फ कोर्स का स्पोर्ट्स डे के दिन नज़ारा कुछ अलग ही था। ग्रीन पर खेले गए लेगेसी ओपन लेडीज़ बनाम जेंटलमेन गोल्फ टूर्नामेंट 2025 ने परंपरा तोड़ी और गोल्फ को एक नए अंदाज़ में पेश किया। पहली बार महिला खिलाड़ियों ने पुरुषों के खिलाफ सीधे मुकाबला किया और खेल को उत्सव का रंग दे दिया।

इस अनोखी अवधारणा के पीछे थे आलोक पस्कर। आयोजन की ज़िम्मेदारी संभाली स्पॉटलाइट ने, जिसके संचालक राजीव वर्मा ने पूरे आयोजन को ऐसी बारीकी से सजाया कि हर व्यवस्था परफेक्ट नज़र आई।

खिलाड़ियों की धूम

इस टूर्नामेंट में कुल 120 खिलाड़ी उतरे। इनमें 50 महिलाएँ और 70 पुरुष गोल्फर शामिल रहे। हर शॉट के साथ रोमांच बढ़ता गया। दर्शक दीर्घा में बैठे परिवारों और खेल प्रेमियों ने भी इस अलग अंदाज़ के मुकाबले का भरपूर आनंद लिया। टूर्नामेंट का आयोजन राष्ट्रीय खेल दिवस 2025 की विशेष श्रृंखला के तहत हुआ। इससे इसका महत्व और भी बढ़ गया।

कड़े मुकाबलों के बाद ये 5 खिलाड़ी रहे शीर्ष पर:

बेस्ट नेट: राज सिंह, विमेन ग्रॉस: अब्बाका रावत, विमेन नेट: आन्या, मेंस ग्रॉस: आशीष कपूर, मेंस नेट: डू यंग ली। विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। माहौल तालियों और उत्साह से गूंज उठा।

इस आयोजन को आलोक पस्कर और जेके टेक ने किया उद्घाटन। साथ ही अरमान रोबोटिक्स एंड ऑटोमेशन और एचपी का भी अहम सहयोग रहा। इन कंपनियों की भागीदारी ने इस टूर्नामेंट को और मज़बूती दी। खास आभार जताया गया जेपी ग्रीन्स के ध्रुवपाल सिंह का, जिनकी सक्रिय भूमिका से आयोजन को सफलता और पहचान दोनों मिली।

आयोजक राजीव वर्मा ने कहा, "खिलाड़ियों का उत्साह और दर्शकों की भागीदारी यह साबित करती है कि इस तरह के आयोजन की ज़रूरत है। अब हम कोलकाता, चंडीगढ़, पुणे और अन्य शहरों में भी इस टूर्नामेंट को ले जाने की योजना बना रहे हैं।"

वहीं आलोक पस्कर ने ऐलान किया कि वे अगले पांच साल तक इस टूर्नामेंट को प्रायोजित करेंगे। अगला संस्करण 16 अक्टूबर 2026 को होगा, जो और भी बड़े स्तर पर आयोजित किया जाएगा।

लेगेसी ओपन 2025 सिर्फ़ गोल्फ टूर्नामेंट नहीं रहा। यह खेल भावना, समावेशिता और समुदाय को जोड़ने का एक उत्सव बन गया। महिलाओं और पुरुषों को एक ही मैदान पर आमने-सामने उतारकर इस आयोजन ने रूढ़ियाँ तोड़ीं और गोल्फ में नई परंपरा की शुरुआत की। यह पहल अब एनसीआर और देशभर के खेल कैलेंडर में अपनी मज़बूत जगह बनाने की ओर बढ़ रही है।

जमीअत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष का असम दौरा पीड़ित परिवारों से मुलाक़ात

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली: असम में अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचार और नफ़रत व कट्टरता की बढ़ती लहर के बीच जमीअत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना महमूद असअद मदनी की क़ियादत में एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल आज असम पहुँचा। प्रतिनिधिमंडल ने उन राहत शिविरों का दौरा किया, जहाँ बुलडोज़र कार्रवाइयों के कारण बेघर हुए सैकड़ों परिवार शरण लिए हुए हैं।

प्रतिनिधिमंडल ने अब तक लगभग 300 किलोमीटर की यात्रा पूरी करते हुए कई प्रभावित इलाक़ों का दौरा किया और पीड़ित परिवारों से मुलाक़ात की। मौलाना मदनी ने विशेष रूप से बैतबारी कैंप में लोगों से विस्तार से बातचीत की और उनकी तकलीफ़ें सुनीं।

मौलाना मदनी ने इस मौके पर कहा: हमारी लड़ाई अतिक्रमण हटाने के खिलाफ नहीं है, बल्कि न्यायपालिका के आदेशों को नज़रअंदाज़ करके लोगों को बेघर करना और कानून की जगह डर, धमकी और ताक़त का इस्तेमाल करना इंसाफ़ और इंसानियत दोनों के ख़िलाफ़ है। जमीअत उलेमा-ए-हिंद हमेशा से मज़लूमों के साथ खड़ी रही है और आगे भी खड़ी रहेगी। इसके लिए हम फाँसी के फंदे तक का सामना करने के लिए तैयार हैं। यही हमारे बुज़ुर्गों की रौशन और प्रेरणादायक परंपरा रही है।"

प्रतिनिधिमंडल में अध्यक्ष मौलाना मदनी के अलावा जमीअत उलेमा-ए-हिंद के महासचिव मौलाना हकीमुद्दीन क़ासमी, मौलाना मुफ़्ती जावेद इक़बाल (अध्यक्ष, जमीअत उलेमा बिहार), मौलाना खालिद किशनगंज (नाज़िम, जमीअत उलेमा किशनगंज), मौलाना नवेद आलम क़ासमी, क़ारी नोशाद आदिल (आर्गनाइज़र, जमीअत उलेमा-ए-हिंद), मौलाना हाशिम क़ासमी (कोकराझार, असम) और मौलाना सलमान क़ासमी (आर्गनाइज़र, जमीअत उलेमा-ए-हिंद) शामिल थे।

प्रिया वल्लभ कुंज में मनाया गया श्रीराधा जन्म महा-महोत्सव ब्रज में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से भी अत्यधिक धूम होती है श्रीराधाष्टमी की

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। छीपी गली/पुराना बजाजा स्थित प्रिया वल्लभ कुंज में श्रीहित उत्सव चैरिटेबल ट्रस्ट के तत्वावधान में अष्ट दिवसीय श्रीराधा जन्म महा-महोत्सव एवं अष्टयाम सेवा सुख के समापन के अवसर पर आयोजित सन्त-विद्वत सम्मेलन आयोजित किया गया।जिसमें अपने विचार व्यक्त करते हुए पुरुषोत्तम शरण शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी एवं भागवताचार्य पंडित रामगोपाल शास्त्री ने कहा कि ब्रज को ठाकुरनी श्रीराधा रानी स्वयं भगवान श्रीकृष्ण की आल्हादिनी शक्ति स्वरूपा हैं।इसीलिए ब्रज में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी से भी अत्यधिक धूम श्रीराधाष्टमी की होती है।

ठाकुरश्री प्रियावल्लभ मन्दिर के सेवायत आचार्य विष्णु मोहन नागार्च एवं आचार्य रसिक वल्लभ नागार्च ने कहा कि हमारे श्रीराधावल्लभ संप्रदाय में श्रीराधा और कृष्ण में कोई भी भेद नहीं माना गया है।यह दोनों एक प्राण द्वय देह हैं।

इससे पूर्व श्रीराधावल्लभ संप्रदाय के प्रख्यात संत निकुंज लीला प्रविष्ट बाबा गोपाल दास रलघु सखीर द्वारा रचित भजनों की एल्बम रराधे नामर के यूट्यूब प्रसारण पोस्टर का संतों, विद्वानों व धर्माचार्यों की सन्निधि में विमोचन किया गया।

एल्बम के प्रमोटर डॉ. गोपाल चतुर्वेदी (वृन्दावन) ने बताया कि सांवरिया म्यूजिक के द्वारा प्रस्तुत व आर.के. खुराना फिल्म्स द्वारा निर्मित रराधे नामर एल्बम में बाबा गोपाल दास महाराज (लघु सखी) द्वारा लिखे गए भजनों को प्रस्तुत किया गया है।जिसमें सचिन सरल द्वारा म्यूजिक दिया गया है और इन भजनों को प्रख्यात भजन गायक चेतन शर्मा (भटिंडा) द्वारा आवाज दी गई है।साथ ही उन्होंने ही इन भजनों में कंपोजिंग की है।यह एल्बम बाबा गोपाल दास चेरिटेबल सोसायटी, भटिंडा (पंजाब) द्वारा निकाली गई है।

ज्ञात हो कि बाबा गोपाल दास रलघु सखीर महाराज परम रसिक व सिद्ध सन्त थे। उन्होंने असंख्य व्यक्तियों को प्रभु भक्ति व श्रीवृन्दावन रसोपासना के मार्ग से जोड़कर उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया।

महोत्सव के अंतर्गत श्रीहित उत्सव चैरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा श्रीराधावल्लभ संप्रदायाचार्य आचार्य श्रीहित विशाल लाल गोस्वामी महाराज को रश्रीहित परमानंद सम्मानर एवं डॉ. गंगा प्रिया (ऋषिकेश) को रश्रीहित निधि सम्मानर से अलंकृत किया गया।साथ ही सनातन धर्म के लिए समर्पित प्रमुख समाजसेवी नीरज शर्मा (वारासिवनी-बालाघाट, मध्यप्रदेश) को भी सम्मानित किया गया।उन्हें यह सम्मान आचार्य विष्णु मोहन नागार्च, डॉ. गोपाल चतुर्वेदी व पार्षद रसिक वल्लभ नागार्च आदि ने संयुक्त रूप से प्रशस्ति पत्र, ठाकुर प्रियावल्लभ लालजी का चित्रपट, पटुका प्रसादी माला, शॉल, श्रीफल आदि भेंट कर सम्मानित किया गया।संचालन डॉ. राजेश शर्मा ने किया।

इस अवसर पर परम हितधर्मी व शिक्षाविद् डॉ. चंद्रप्रकाश शर्मा, आचार्य ललित वल्लभ नागार्च, महंत मधुमंगल शरण शुक्ल, श्रीमती कमला नागार्च, भरत शर्मा, रासबिहारी मिश्र, तरुण मिश्रा, पार्षद वैभव अग्रवाल, राजीव बंसल, जुगल किशोर शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा, हित शरण, हितवल्लभ नागार्च, रामशंकर दुबे, हेमन्त, कीर्ति, हितानंद, रसानंद, प्रेमानंद, दिव्यानंद आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।महोत्सव का समापन संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।

भागवत पीठ में 49 वां श्रीमद्भागवत जयंती एवं श्रीराधा जन्म महोत्सव धूमधाम से प्रारंभ

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। रुक्मिणी विहार रोड़ (निकट केशव धाम) स्थित भागवत पीठ आश्रम में सत्य सनातन सेवार्थ संस्थान के द्वारा ब्रज विभूति परिव्राजकाचार्य स्वामी ब्रजरमणाचार्य महाराज व विद्वत शिरोमणि भागवत भूषण आचार्य पीठाधिपति स्वामी किशोरीरमणाचार्य महाराज की पावन स्मृति में 49 वां श्रीमद्भागवत जयंती एवं श्रीराधा जन्म महोत्सव अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ प्रारंभ हो गया है।इसी के साथ श्रीमद्भागवत मूल पारायण व तुलसी सहस्त्रार्चन आदि के अनुष्ठान भी प्रारंभ हो गए हैं।

आचार्य/भागवत पीठाधीश्वर भागवत प्रभाकर मारुति नंदनाचार्य रवागीश जीर महाराज ने कहा कि अखिल कोटि ब्रह्माण्ड नायक परब्रह्म परमेश्वर भगवान नारायण के अवतार महर्षि वेदव्यासजी महाराज द्वारा रचित श्रीमद्भागवत महापुराण में समस्त धर्म ग्रंथों का सार निहित है।

युवराज श्रीधराचार्य महाराज ने कहा कि आचार्य/भागवत पीठ में श्रीमद्भागवत जयंती एवं श्रीराधा जन्म महोत्सव मनाने की परंपरा 48 वर्ष प्रारंभ हुई थी।तभी से यह महोत्सव प्रतिवर्ष यहां विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ मनाया जाता है।

मीडिया प्रभारी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि महोत्सव के अंतर्गत 04 सितंबर को नवोदित वक्ताओं की प्रवचन प्रतियोगिता होगी।इसके अलावा 06 सितंबर को अपराह्न 04 बजे से विराट संत-विद्वत सम्मेलन आयोजित होगा।जिसमें देश के कई प्रख्यात संत, विद्वान एवं धर्माचार्य आदि भाग लेंगे।इसी के साथ नवोदित वक्ताओं की प्रवचन प्रतियोगिता में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण किए जाएंगे।साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में अविस्मरणीय सेवाएं देने वाली गणमान्य विभूतियों का सम्मान किया जाएगा।

महिला ने हल्का दरोगा पर आर्थिक सांठ गांठ कर जमीन पर निर्माण कराने का लगाया आरोप

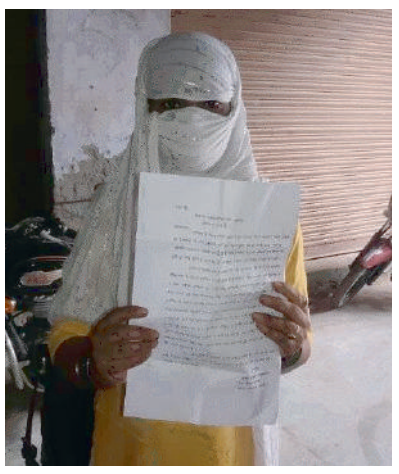

सहसबान: महिला ने उप जिलाधिकारी को शिकायती पत्र देकर दरोगा पर अवैध निर्माण कराने का आरोप लगाया है ,बता दे। पिंकी पत्नी ज्ञान प्रकाश ग्राम बेरपुर मानपुर निवासी का आरोप है, मेरा एक प्लांट ग्राम गंगापुर में है, जिस पर दो दिन पहले हल्का दरोगा ने योगेश पुत्र नाथू सिंह उक्त लोगों से मिलकर खाली पड़े प्लॉट की नींव को भरवा कर अवैध कब्जा करा दिया वहीं महिला का आरोप है, कि उक्त लोग पहले से ही महिला के प्लाट पर अवैध कब्जा करने की नीयत से उस पर निर्माण करना चाहते थे जिसकी शिकायत करने पर दरोगा ने डांट फटकार कर कोतवाली से भगा दिया जिसको लेकर महिला ने उप जिलाधिकारी को शिकायती पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई है।

गौशालाओं में पायी जाने वाली अनियमितताओं के लिए राष्ट्रीय बजरंग दल बदायूं टीम ने जिलाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

परिवहन विशेष न्यूज

जनपद बदायूं में गौशालाओं में गौवंशों की दुर्दशा के वीडियो और फोटो आये दिन सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे। वायरल वीडियो में ग्राम प्रधान, सचिव और पशु चिकित्सक की लापरवाही साफ़ नजर आती है। राष्ट्रीय बजरंग दल की बदायूं टीम ने संज्ञान लेकर गौशालाओं में गवंशों की स्थिति में सुधार लाने और लापरवाह लोगो के खिलाफ कार्यवाही करने के लिए जिलाधिकारी बदायूं में ज्ञापन सौपा। ज्ञापन में कई बिंदुओं पर कार्यवाही की मांग की गई। उसमे किसानो की समस्या में कमी लाने के लिए भी बिंदु रखा गया। 15 दिन की समय सीमा में सुधार ना होने की स्थिति में धरना प्रदर्शन की चेतावनी दी। मौके पर जिलाध्यक्ष करन दक्ष, प्रान्त उपाध्यक्ष शुभम शर्मा, प्रान्त महामंत्री पंकज गुप्ता, प्रान्त गौरक्षा प्रमुख विकेन्द्र शर्मा, जिला महामंत्री शिवम् वर्मा, जिला मंत्री श्याम शर्मा, नगर मंत्री गौरव माहेश्वरी, पशु प्रेमी विभोर शर्मा, दीपेश दिवाकर, यश दिवाकर तथा अन्य सदस्य मौजूद रहे।

खासपुर गोटिया में जल ग्रामीणों को पेयजल ना मिलने से ग्रामीणों में आक्रोश

बदायूं: विकास खण्ड सालारपुर की ग्रामपंचायत खास पुर गौंटिया में जल जीवन मिशन के अंतर्गत पानी की टंकी का निर्माण कराया गया था। जहां शासन के द्वारा हर घर जल को मंजूरी मिली तो वही टंकी का कार्य पूर्ण हो जाने के बाबजूद कुछ दिनों तक पानी देने के बंद कर दिया गया है। ग्रामीणों का आरोप है की चार महीने पहले पानी आया करता था। लेकिन अब जनरेटर भी खराब पड़ा है और पानी भी नहीं आ रहा है। ग्रामीणों ने मिलकर इसकी शिकायत मुख्यमंत्री पोर्टल पर दर्ज कराई है।

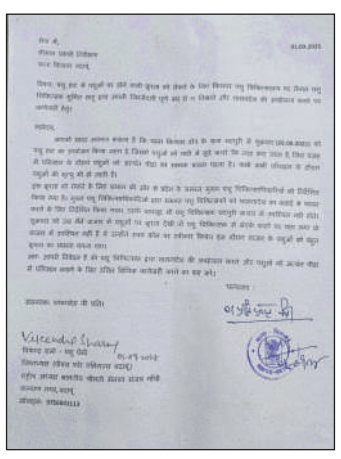

थाना बिनावर क्षेत्र के घटपुरी बाजार ने पशुओं पर होने वाली क्रूरता को ना रोकने के लिए पशु प्रेमी विकेंद्र शर्मा ने पशु चिकित्सक सुमित साहू पर कार्यवाही के लिए दी तहरीर। बाजारों में क्रूरता रोकने के किये शासन की ओर से समस्त मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारियों को निर्देशित किया गया, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी ने जनपद के सभी पशु चिकित्साकों को आदेश का अक्षरस: पालन करने के लिए निर्देशिति किया, परन्तु पशु चिकित्सक ने आदेश की अवहेलना की। जिस पर पशु प्रेमी ने कार्यवाही की मांग की।

थाना बिनावर क्षेत्र में आए दिन हो रहे मिट्टी के अवैध खनन को रोकने में ना काम साबित हो रहा खनन विभाग

परिवहन विशेष न्यूज

बिनावर: जनपद बदायूं के थाना बिनावर क्षेत्र के गांव सुभानपुर जंगल में दिन शुक्रवार की रात्रि हो रहे अवैध खनन की सूचना सूत्रों द्वारा मीडिया कर्मी को मिली। इस दौरान मीडियाकर्मी ने अवैध कर रहे खनन माफिया से खनन से संबंधित परमिशन के डॉक्यूमेंट दिखाने के लिए कहा, तो उक्त खनन माफिया ने मीडिया कर्मी से कहा कि तुम मुझे क्यों परेशान कर रहे हो, हमारी जेसीबी मशीन पड़वा दो। इसी क्रम में खनन माफिया ने मीडिया कर्मी से यह भी कहा कि 42 लाख खर्च किए हैं तुम एक टायर खरीद कर तो दिखाओ, हमारी मशीन पकड़बाने के लिए कलेजा चाहिए। किस तरह से खनन माफिया बबलू ने फोन कॉल के माध्यम से मीडिया कर्मी को धमकाया। जिसका ऑडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है।

विश्व नारियल दिवस 2 सितंबर 2025- मानव स्वास्थ्य, संस्कृति और वैश्विक समृद्धि का प्रतीक गणेश पूजा में नारियल अनिवार्य होता है,क्योंकि यह विघ्नहर्ता के आशीर्वाद का प्रतीक है।

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर प्रकृति ने मानव को अनेक उपहार दिए हैं, जिनमें पेड़-पौधे, फल-फूल और जल हमारे अस्तित्व का आधार हैं। इन्हीं उपहारों में नारियल एक ऐसा फल है जिसे रजीवन वृक्षर कहा जाता है। यह केवल एक खाद्य पदार्थ ही नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवन के लिए उपयोगी संसाधन है। नारियल का पेड़, उसका फल, जटा, पत्तियाँ, लकड़ी, सब कुछ मानव सभ्यता को पोषण, आश्रय, औषधि और रोजगार प्रदान करता है।आज मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह बातें इसलिए कर रहा हूं क्योंकि नारियल के महत्व को रेखांकित करने के लिए हर वर्ष 2 सितंबर 2025 को रविश्व नारियल दिवसर मनायाजा रहा है। 2009 में एशिया-प्रशांत नारियल समुदाय के गठन के बाद से इस दिवस की शुरुआत हुई। यह संगठन विश्व के उन देशों का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ नारियल की खेती बड़े पैमाने पर होती है। आज विश्व नारियल दिवस केवल एक कृषि पर्व नहीं है, बल्कि यह स्वास्थ्य, संस्कृति, पर्यावरण और वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ा एक आंदोलन बन चुका है।नारियल दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य नारियल उत्पादकों और उपभोक्ताओं को जोड़ना, किसानों को सशक्त बनाना और सतत विकास के मार्ग पर आगे बढ़ना है। एपीसीसी का गठन 2 सितंबर 2009 को इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में हुआ था। इसमें भारत, श्रीलंका, फिलीपींस, इंडोनेशिया, थाईलैंड, वियतनाम, मलेशिया, पापुआ न्यू गिनी और फिजी जैसे देश शामिल हैं।यह संगठन किसानों को आधुनिक खेती तकनीक, फसल संरक्षण, अनुसंधान और अंतरराष्ट्रीय बाजार तक पहुँच प्रदान करने में सहायक है।विश्व स्तरपर लगभग 12 करोड़ किसान परिवार नारियल की खेती पर निर्भर हैं।फिलीपींस, इंडोनेशिया और भारत मिलकर विश्व का लगभग 70 पर्सेंट नारियल उत्पादन करते हैं। नारियल तेल, कोयर, फर्नीचर, सौंदर्य प्रसाधन, औषधियाँ और पेय पदार्थ अरबों डॉलर के वैश्विक व्यापार का हिस्सा हैं, जो दर्शाता है कि नारियल केवल एक स्थानीय फसल नहीं बल्कि एक वैश्विक वस्तु है।

साथियों बात अगर हम भारत में नारियल को केवल एक फल नहीं बल्कि श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक मानने की करें तो, इसे रश्रीफलर कहा जाता है,जिसका अर्थ हैसमृद्धि देने वाला फल।भारतीय धार्मिक परंपराओं में बिना नारियल के कोई भी पूजा पूर्ण नहीं मानी जाती। गणेश पूजा में नारियल अनिवार्य होता है, क्योंकि यह विघ्नहर्ता के आशीर्वाद का प्रतीक है।दक्षिण भारत में विवाह, गृहप्रवेश और मंदिरों की पूजा में इसका विशेष महत्व है। बौद्ध और जैन धर्म में भी नारियल को पवित्रता और शांति का प्रतीक माना गया है।नारियल के कठोर खोल को अहंकार और वासनाओं का प्रतीक माना जाता है, जिसे फोड़ने पर शुद्ध गूदा और जल प्राप्त होता है। यह आत्मा की पवित्रता और ईश्वर से एकत्व का प्रतीक है।मंदिरों में नारियल चढ़ाने की परंपरा केवल भारत तक सीमित नहीं है। नेपाल, श्रीलंका, थाईलैंड और बाली (इंडोनेशिया) जैसे देशों में भी यह परंपरा देखने को मिलती है। दक्षिण भारत के मंदिरों में नारियल फोड़ना आत्मसमर्पण का प्रतीक है और इससे जुड़े छोटे-छोटे कारोबार हजारों लोगों को रोज़गार भी उपलब्ध कराते हैं। बौद्ध भिक्षु प्रार्थना के समय नारियल जल अर्पित करते हैं। इस प्रकार, नारियल धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से लोक और परलोक दोनों से जुड़ा हुआ है और यह कई देशों की आध्यात्मिक परंपराओं में गहराई से समाया हुआ है।

साथियों बात अगर हम नारियल का वृक्ष रकल्पवृक्षर कहलानें की करें तो,क्योंकि इसका कोई भी हिस्सा बेकार नहीं जाता। फल से हमें जल और गूदा मिलता है, जो पोषण और ऊर्जा का स्रोत है। गूदे से निकाला गया नारियल तेल बालों, त्वचा और भोजन के लिए औषधि के रूप में उपयोग होता है।जटा से रस्सी, चटाई, कालीन, ब्रश और गद्दे बनाए जाते हैं। पत्तियों का प्रयोग झोपड़ी, टोकरियाँ और सजावटी वस्तुएँ बनाने में होता है, जबकि तना फर्नीचर, पुल और नाव बनाने के लिए उपयुक्त है। जड़ें औषधि और रंगाई में प्रयोग की जाती हैं। यही कारण है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नारियल को रट्री ऑफ़ लाइफर यानें जीवन का वृक्ष कहा जाता है।

साथियों बात अगर हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नारियल को देखने की करें तो विज्ञान की दृष्टि से भी नारियल एक रन्यचुरल सुपरफॉडर है।इसमें विटामिन बी, सी और ई प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। पोटेशियम, कैल्शियम, मैग्नीशियम और आयरन जैसे खनिज शरीर को ऊर्जा और मजबूती प्रदान करते हैं। इसमें प्रोटीन और फाइबर भी अच्छी मात्रा में उपलब्ध हैं।नारियल जल को प्राकृतिक और्स कहा जाता है, जो शरीर को हाइड्रेट करता है और गर्मी या बीमारी के दौरान ऊर्जा देता है। हृदय और किडनी रोगों में यह विशेष रूप से लाभकारी है। नारियल तेल एंटीवायरल और एंटीबैक्टीरियल गुणों से युक्त है और मधुमेह तथा रक्तचाप नियंत्रित करने में सहायक है।आधुनिक शोध बताते हैं कि नारियल का प्रयोग वजन घटाने, डिटॉक्स और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। यही कारण है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन और आयुर्वेद दोनों ने नारियल को स्वास्थ्य के लिए अमृत समान माना है।

साथियों बात अगर हम नारियल वृक्ष की आयु और उत्पादनक्षमता के लिए भी अद्वितीय होने की

करें तो,यह 60 से 80 फीट तक ऊँचा होता है और लगभग 70 से 80 वर्षों तक जीवित रहता है। करीब 15 वर्षों के बाद इसमें नियमित रूप से फल लगना शुरू होता है और एक पेड़ अपनी आयु में हजारों नारियल देता है। यह दीर्घायु वृक्ष किसानों को पीढ़ियों तक आय देता है और उन्हें स्थिरता प्रदान करता है। इसी कारण इसे रगरीब का वृक्षर (पुवर मैन्स ट्री) कहा जाता है क्योंकि यह हर वर्ग को लाभ पहुँचाता है।

साथियों बात अगर हम नारियल उद्योग वैश्विक मूल्य श्रृंखला का हिस्सा होने की करेंतो,फिलीपींस नारियल तेल का सबसे बड़ा निर्यातक है, जबकि इंडोनेशिया उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर है। भारत तीसरे स्थान पर है और घरेलू खपत में सबसे आगे है। श्रीलंका कोयर उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। विश्व नारियल बाजार का आकार 2024 में लगभग 12 अरब डॉलर था और 2030 तक इसके 20 अरब डॉलर तक पहुँचने की संभावना है।अमेरिका यूरोप और जापान में नारियल पानी और ऑर्गेनिक नारियल तेल की मांग तेजी से बढ़ रही है, जिससे यह उद्योग और अधिक वैश्विक बनताजा रहाहै।

साथियों बात अगर हम नारियल वृक्ष केवल भोजन और व्यापार ही नहीं, बल्कि पर्यावरण और समाज के लिए भी महत्वपूर्ण होने की करें तो, यह समुद्र किनारे मिट्टी का क्षरण रोकते हैं और तटीय सुरक्षा प्रदान करते हैं। एक नारियल वृक्ष सालाना लगभग 30–35 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है, जिससे पर्यावरण को शुद्ध बनाने में मदद मिलती है। यह विश्वभर में लगभग 6 करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से रोज़गार देता है। गरीब किसानों की जीवनरेखा कहे जाने वाले इस वृक्ष ने करोड़ों लोगों को स्थायी जीविका दी है।फिर भी नारियल खेती पर जलवायु परिवर्तन का गहरा प्रभाव पड़ रहा है। समुद्र स्तर में वृद्धि से तटीय नारियल बागान डूबने लगे हैं। सूखा और अनियमित वर्षा से उत्पादन घट रहा है। कीट और रोगों की संख्या बढ़ी है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए एफएओ और एपीसीसी मिलकर नई किस्मों पर शोध कर रहे हैं।भारत ने रकेंद्रीय नारियल अनुसंधान संस्थानर बनाया है, जबकि श्रीलंका और फिलीपींस ने कोयर और नारियल तेल आधारित उद्योगों में नवाचार को बढ़ावा दिया है।विश्व नारियल दिवस हमें यह याद दिलाता है कि नारियल केवल एक फल नहीं बल्कि भविष्य की सतत जीवन शैली का आधार है। ऑर्गेनिक खेती को बढ़ावा देकर, किसानों को तकनीक और बाजार तक पहुँच प्रदान करके और नारियल आधारित ग्रीन उद्योग विकसित करके हम इस वृक्ष की क्षमता को और अधिक बढ़ा सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करना भी आवश्यक है, ताकि छोटे किसान भी वैश्विक बाजार से लाभान्वित हो सकें।

साथियों बात अगर हम नारियल का वृक्ष केवल एक पौधा नहीं, बल्कि मानव सभ्यता का सहारा होने की करें तो, यह धर्म में श्रद्धा, संस्कृति में पहचान, विज्ञान में औषधि और अर्थव्यवस्था में उद्योग का आधार है। विश्व नारियल दिवस 2025 हमें यह संदेश देता है कि हमें इस रजीवन वृक्षर की रक्षा करनी है और इसे मानवता की समृद्धि के लिए आगे बढ़ाना है। यदि विश्वभर के देश मिलकर नारियल उत्पादन, अनुसंधान और सतत विकास की दिशा में काम करें तो यह वृक्ष आने वाली पीढ़ियों को भी अमृत प्रदान करता रहेगा।नारियल केवल एक फल नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवन का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में यह समर्पण और पवित्रता का संदेश देता है, विज्ञान में यह स्वास्थ्य का स्रोत है और पर्यावरण के लिए यह स्थिरता का दूत है। विश्व नारियल दिवस हमें यह याद दिलाता है कि प्रकृति ने जो यह अद्भुत उपहार दिया है, उसकी रक्षा करना और उसका सतत उपयोग करना हमारी जिम्मेदारी है।आज आवश्यकता है कि हम नारियल उत्पादन बढ़ाने,किसानों को तकनीकी सहयोग देने और इसके औषधीय व पोषण संबंधी गुणों को अधिकाधिक जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लें। तभी नारियल वास्तव में मानव जीवन को समृद्ध और स्वस्थ बनाने में अपनी पूर्ण भूमिका निभा सकेगा।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि विश्व नारियल दिवस केवल एक कृषि पर्व नहीं है, बल्कि यह स्वास्थ्य, संस्कृति, पर्यावरण और वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ा एक आंदोलन बन चुका है।

कावासाकी ZX-6R नए रंगरूप में लॉन्च; क्विकशिफ्टर, TFT स्क्रीन जैसे फीचर्स के साथ 636cc इंजन से लैस

कावासाकी ने भारतीय बाजार में 2026 Kawasaki ZX-6R लॉन्च की है जो नए रंग और ग्राफिक्स के साथ आई है। इस अपडेटेड बाइक की कीमत में भी वृद्धि हुई है। मैकेनिकल स्पेसिफिकेशन में कोई बदलाव नहीं किया गया है। यह लाइम ग्रीन रंग में उपलब्ध है और इसमें 636cc का इन-लाइन-फोर सिलेंडर इंजन है। इसमें स्लिप और असिस्ट क्लच टीएफटी स्क्रीन और ट्रैक्शन कंट्रोल जैसे कई फीचर्स हैं।

नई दिल्ली। कावासाकी ने भारतीय बाजार में 2026 Kawasaki ZX-6R को लॉन्च किया है। इसे नए कलर और ग्राफिक्स के साथ लेकर आया गया है। बाइक को अपडेट करने के साथ ही इसकी कीमत को भी बढ़ाया गया है। कावासाकी की इस मोटरसाइकिल के मैकेनिकल स्पेसिफिकेशन में कोई बदलाव नहीं किया गया है। आइए विस्तार नई कावासाकी ZX-6R के बारे में विस्तार में जानते हैं।

2026 कावासाकी ZX-6R को केवल एक ही कलर ऑप्शन में पेश किया जाता है, जिसका नाम लाइम ग्रीन है। इसमें फेयरिंग और बॉडी पर सफेद और नीली धारियां हैं, जो इसे पुराने लाइम ग्रीन ऑप्शन की तुलना में ज्यादा बेहतरीन कंट्रास्ट लुक देती हैं।

मैकेनिकल तौर पर 2026 कावासाकी ZX-6R में किसी तरह का बदलाव नहीं किया गया है। इसमें पहले की तरह ही 636cc का इन-लाइन-फोर सिलेंडर, लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो रैम एयर के साथ 129 hp की पावर और 69 Nm का टॉर्क जनरेट करता है।

कावासाकी की इस मोटरसाइकिल में कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसमें स्लिप और असिस्ट क्लच, TFT स्क्रीन, पावर मोड्स, और क्विकशिफ्टर दिया गया है। इसके साथ ही तीन लेवल का ट्रैक्शन कंट्रोल, डुअल-चैनल एबीएस, और केआईबीएस (कावासाकी इंटेलिजेंट एंटी-लॉक ब्रेक सिस्टम) भी मिलता है। ZX-6R अभी भी अपने सेगमेंट में एकमात्र इन-लाइन-फोर सिलेंडर स्पोर्ट्सबाइक होने के कारण एक आकर्षक ऑप्शन बनी हुई है।

टीवीएस Orbiter vs Ather Rizta: जानें कौन सा इलेक्ट्रिक स्कूटर है आपके लिए बेहतर?

टीवीएस मोटर ने भारत में सबसे सस्ता इलेक्ट्रिक स्कूटर TVS Orbiter लॉन्च किया है जो Ather Rizta को टक्कर देगा। TVS Orbiter में 3.1 kWh की बैटरी है जो 158 किलोमीटर की रेंज देती है जबकि Ather Rizta 123 किमी से 160 किमी तक की रेंज के साथ आता है। TVS Orbiter की टॉप स्पीड 68 किमी प्रति घंटा है और इसकी कीमत 99900 रुपये है।

नई दिल्ली। भारत में इलेक्ट्रिक स्कूटर का बाजार काफी तेजी से बढ़ रहा है। इस सेगमेंट में टीवीएस मोटर ने अपना सबसे सस्ता इलेक्ट्रिक स्कूटर TVS Orbiter को लॉन्च किया है। यह एक किफायती इलेक्ट्रिक स्कूटर है जो Ather Rizta जैसे ईवी स्कूटर को टक्कर देगा। यह दोनों ही इलेक्ट्रिक स्कूटर कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आते हैं और ये दोनों स्कूटर कम्यूटर सेगमेंट के लिए बने हैं, लेकिन दोनों का अप्रोच काफी अलग है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको इन दोनों (TVS Orbiter vs Ather Rizta) ही इलेक्ट्रिक स्कूटर की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि कौन सा आपके लिए बेहतर है?

TVS Orbiter vs Ather Rizta: डिजाइन

TVS Orbiter का डिजाइन फ्यूचरिस्टिक है, जो नए राइडर्स के लिए आरामदायक लगता है। इसका वजन 112 किलोग्राम है, जिससे इसे शहर के भीड़-भाड़ वाले ट्रैफिक में चलाना आसान हो जाता है। Ather Rizta थोड़ा भारी है, लेकिन इसका लुक काफी प्रीमियम है। इसकी चौड़ी सीट उन लोगों के लिए बेहतर है जो स्कूटर को सिर्फ एक वाहन से ज्यादा मानते हैं।

TVS Orbiter vs Ather Rizta: रेंज और बैटरी

TVS Orbiter में 3.1 kWh की फिक्स्ड बैटरी दी गई है, जो सिंगल चार्ज में 158 किलोमीटर की IDC रेंज देती है। Ather Rizta को 2.9 kWh और 3.7 kWh बैटरी पैक ऑप्शन के साथ पेश किया जाता है, जिनकी रेंज 123 किमी से 160 किमी तक है।

TVS Orbiter vs Ather Rizta: परफॉर्मेंस

TVS Orbiter में 2.5 kW की मोटर लगी हुई है, जिसकी टॉप स्पीड 68 किमी प्रति घंटा है। इस इलेक्ट्रिक स्कूटर को रोजाना के ट्रैफिक के लिए ट्यून किया गया है। Ather Rizta में ज्यादा पावरफुल पीएमएसएम मोटर है, जो 4.3 kW की पीक पावर और 22 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसकी टॉप स्पीड 80 किमी प्रति घंटा है।

TVS Orbiter vs Ather Rizta: फीचर्स

TVS Orbiter कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। इसमें क्रूज कंट्रोल, हिल-होल्ड असिस्ट, रिवर्स असिस्ट, ब्लूटूथ कनेक्टिविटी और जियो-फेंसिंग जैसे फीचर्स मिलते हैं। ऐसा लगता है कि TVS ने पहली बार इलेक्ट्रिक स्कूटर खरीदने वालों को ध्यान में रखते हुए इसे बनाया है और जरूरी फीचर्स को इसमें शामिल किया है।

Ather Rizta पूरी तरह से सॉफ्टवेयर पर केंद्रित है। इसमें 7-इंच की एंड्रॉइड टच टीएफटी डिस्प्ले, गूगल मैप्स, वॉयस कमांड और एक कनेक्टेड ऐप इकोसिस्टम दिया गया है। यह एक स्मार्टफोन की तरह लगता है। कुछ लोगों के लिए यह एक बड़ा प्लस पॉइंट हो सकता है, जबकि कुछ को कम्यूटर स्कूटर में इतनी सारी डिजिटल चीजें शायद अनावश्यक लगें।

TVS Orbiter vs Ather Rizta: कीमत

TVS Orbiter कंपनी का सबसे सस्ता इलेक्ट्रिक स्कूटर है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत 99,900 रुपये है। Ather Rizta को भारतीय बाजार में 1.08 लाख रुपये से 1.47 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जाता है।

पीएम मोदी ने पहले Xi Jinping और फिर Putin की कार में किया सफर, दोनों गाड़ियों में क्या है खास?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी चीन यात्रा के दौरान Hongqi L5 लिमोजीन का इस्तेमाल कर रहे हैं जो राष्ट्रपति शी जिनपिंग की पसंदीदा कार है। 6.0-लीटर V12 इंजन वाली यह कार 8.5 सेकंड में 0 से 100 किमी प्रति घंटा की स्पीड पकड़ सकती है। करीब 7 करोड़ रुपये की कीमत वाली इस कार में बुलेटप्रूफ ग्लास और आर्मर प्लेटिंग जैसे सेफ्टी फीचर्स हैं।

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इन दिनों दो दिवसीय चीन यात्रा पर हैं। वहां पर पीएम मोदी शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन में शामिल होने पहुंचे हैं। वहां पर पीएम मोदी चीन की Hongqi L5 लिमोजीन का इस्तेमाल कर रहे हैं। यह वही कार है, जिसका इस्तेमाल राष्ट्रपति शी जिनपिंग करते हैं। शी ने 2019 में प्रधानमंत्री मोदी के साथ वार्ता के लिए महाबलीपुरम की अपनी यात्रा के दौरान Hongqi L5 में यात्रा की थी। हम यहां पर आपको Hongqi L5 लिमोजीन के बारे में विस्तार में बता रहे हैं।

इसके स्पेसिफिकेशन्स की बात करें तो, इसमें 6.0-लीटर V12 इंजन का इस्तेमाल किया जाता है, जो 400 hp से ज्यादा की पावर जनरेट करता है। यह करीब 8.5 सेकंड में 0 से 100 किमी प्रति घंटा की स्पीड पकड़ सकती है। इसकी टॉप स्पीड करीब 210 किमी प्रति घंटा है। यह कार 5.5 मीटर से अधिक लंबी है और इसका वजन 3 टन से ज्यादा है।

इसमें कई बेहतरीन फीचर्स दिए गए हैं। कार के अंदर लेदर अपहोल्स्ट्री, लकड़ी की ट्रिम और जेड (jade) जैसे सांस्कृतिक इनले के साथ बेहद बड़ी सीटें हैं। इसके पिछली सीटों में मसाज, हीटिंग और वेंटिलेशन के साथ-साथ मनोरंजन स्क्रीन भी दी गई है। इसके अलावा, इस लग्जरी कार में एडाप्टिव क्रूज़ कंट्रोल, पार्किंग सेंसर और 360-डिग्री कैमरे जैसे सेफ्टी फीचर्स भी हैं।

Hongqi L5 के सेफ्टी फीचर्स

शी जिनपिंग की आधिकारिक यात्राओं के लिए यह पसंदीदा कार है, जिसकी वजह से इसे कई बेहतरीन सेफ्टी फीचर्स से लैस किया गया है। इसमें L5 बुलेटप्रूफ ग्लास, बुलेटप्रूफ व्हील्स, और अंदर की तरफ आर्मर प्लेटिंग जैसी टॉप-क्लास सेफ्टी फीचर्स दिए गए हैं।

Hongqi L5 की कीमत

Hongqi L5 की कीमत करीब 5 मिलियन युआन (करीब 7 करोड़ रुपये है। इसकी वजह से यह चीन की सबसे महंगी प्रोडक्शन कार है। विरासत 1958 से शुरू होती है, जब इसकी CA72 कारें केवल कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं के लिए बनाई जाती थीं। माओत्से तुंग के युग में, Hongqi कारें पूरी तरह से हाथ से बनाई जाती थीं। 1981 में इनका उत्पादन बंद हो गया था, लेकिन 1990 के दशक के मध्य में इसे फिर से शुरू किया गया। 2018 में, FAW ने Hongqi को एक नए डिजाइन और रेमेड इन चाइनाह लग्जरी पहचान के साथ फिर से लॉन्च किया। इसके बाद, इसकी बिक्री में भारी उछाल आया, जो 2018 में 33,000 से बढ़कर 2021 में 300,000 हो गई। रिपोर्ट्स के अनुसार, 2024 में Hongqi की बिक्री 411,000 यूनिट्स को पार कर गई।

राष्ट्रपति पुतिन की कार Aurus Senat

Aurus Senat एक लग्जरी लिमोजीन है। इसे रूसी वाहन निर्माता ऑरस मोटर्स के जरिए बनया गया है। यह रूसी राज्य अनुसंधान संस्थान NAMI, सॉलर्स जेएससी और यूएई की तावाजुन होल्डिंग का एक संयुक्त उद्यम है।

Aurus Senat के प्रोडक्शन का इतिहास

2018 में पेश की गई, Senat व्लादिमीर पुतिन की आधिकारिक राजकीय कार है। यह रूस के घरेलू स्तर पर लग्जरी और बख्तरबंद वाहन बनाने के कार्यक्रम कोर्टेज का हिस्सा है। इसका डिजाइन सोवियत-युग की जिस-110 लिमोजीन से प्रेरित है। Aurus Senat का प्रोडक्शन 2013 में शुरू हुआ था, और इसका प्रोडक्शन आधिकारिक तौर पर 2021 में येलाबुगा में सॉलर्स जेएससी फैक्ट्री में शुरू हुआ। इसे पहली बार पुतिन के 2018 के उद्घाटन समारोह के दौरान सार्वजनिक रूप से दिखाया गया था, और तब से इसने मर्सिडीज-बेंज S 600 गार्ड पुलमैन की जगह राष्ट्रपति की राजकीय कार के रूप में ले ली है। 2024 में, इसे उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन को एक राजनयिक भेंट के रूप में भी दिया गया था।

Aurus Senat के फीचर्स

इसमें 4.4-लीटर ट्विन-टर्बोचार्ज्ड V8 इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इसका इंजन 598 हॉर्सपावर और 880 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसमें 9-स्पीड ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन दिया गया है। इसकी टॉप स्पीड लगभग 160 किमी प्रति घंटा है और यह लगभग 9 सेकंड में 0 से 100 किमी प्रति घंटा की रफ्तार पकड़ लेती है। यह कार 5,630 मिमी लंबी, 2,000 मिमी चौड़ी और 1,700 मिमी ऊंची है।

Aurus Senat को कई बेहतरीन सेफ्टी फीचर्स से लैस किया गया है। इसमें एक्टिव क्रूज कंट्रोल, लेन डिपार्चर वार्निंग और इलेक्ट्रॉनिक ट्रैक्शन कंट्रोल जैसी सुरक्षा विशेषताएं भी हैं। इसका इंटीरियर उच्च-स्तरीय लेदर, लकड़ी की ट्रिम और अत्याधुनिक इंफोटेनमेंट सिस्टम के साथ बेहद शानदार है।

Aurus Senat की कीमत

Aurus Senat का सालाना 120 यूनिट का प्रोडक्शन होता है। इसकी कीमत करीब 18 मिलियन रूबल (लगभग 2.5 करोड़ रुपये) है। ऑरस मोटर्स की योजना कोर्टेज परियोजना के तहत एसयूवी और वैन के साथ अपने लाइनअप का विस्तार करने की है।

तेजी से पॉपुलर हो रहा मोटर स्पोर्ट्स, फॉर्म्युला 3 रेसिंग के लिए कितना तैयार है भारत?

अखिलेश रेड्डी का मानना है कि मोटरस्पोर्ट्स में स्थायी सर्किट महत्वपूर्ण हैं। FIA नियमों के अनुसार तीन लेआउट जरूरी हैं। चेन्नई स्ट्रीट सर्किट से पहले स्थायी ट्रैक्स पर काम होगा। वे भारत में मोटरस्पोर्ट्स को लेकर उत्साहित हैं और युवा पीढ़ी को मंच देना चाहते हैं। उनका लक्ष्य ओलंपिक स्तर की प्रतियोगिता नहीं है बल्कि जागरूकता बढ़ाना है। भविष्य में फॉर्मूला 3 जैसी प्रतियोगिताएं हो सकती हैं।

नई दिल्ली। भारत में मोटरस्पोर्ट्स की लोकप्रियता धीरे-धीरे बढ़ रही है और इस दिशा में सबसे अहम भूमिका निभा रहे हैं रेसिंग प्रमोशन प्राइवेट लिमिटेड (RPPL) के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, अखिलेश रेड्डी। हाल ही में हमने उनसे भारतीय मोटरस्पोर्ट्स के भविष्य और अपनी योजनाओं पर विस्तार से बातचीत की। आइए जानते हैं कि उन्होंने भारतीय मोटरस्पोर्ट्स के भविष्य को लेकर क्या कुछ कहां?

स्थायी सर्किट और स्ट्रीट रेसिंग की तैयारी

अखिलेश रेड्डी का मानना है कि किसी भी बड़े मोटरस्पोर्ट इवेंट से पहले स्थायी सर्किट बनाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि FIA नियमों के अनुसार तीन अलग-अलग लेआउट होने चाहिए, इसलिए पहले परमानेंट सर्किट पर काम करना सही रणनीति होगी। इसके बाद ही स्ट्रीट सर्किट्स जैसे प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाया जाएगा। चेन्नई का स्ट्रीट सर्किट फिलहाल चर्चा में है, लेकिन उससे पहले स्थायी ट्रैक्स पर काम प्राथमिकता होगी।

अंतरराष्ट्रीय अनुभव और चुनौतियां

अखिलेश रेड्डी ने बताया कि यूरोप और अमेरिका के ड्राइवर्स अक्सर अपने देशों से बाहर कम आते हैं, लेकिन भारत में मोटरस्पोर्ट्स को लेकर उत्साह बढ़ रहा है। उन्होंने इसे एक चुनौती और अवसर दोनों बताया। उनका कहना है कि यहां की युवा पीढ़ी को प्लेटफॉर्म देने की जरूरत है, ताकि वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा दिखा सकें।

ओलंपिक और नई कैटेगरीज

अखिलेश रेड्डी ने साफ किया कि अभी ओलंपिक स्तर की प्रतियोगिता लाने का लक्ष्य नहीं है, पहले लोगों में जागरूकता बढ़ाना और इन्फ्रास्ट्रक्चर तैयार करना जरूरी है। उन्होंने बताया कि आने वाले 2-3 सालों में भारत में 2-3 सर्किट और विकसित हो जाएंगे। साथ ही उन्होंने संकेत दिया कि निकट भविष्य में फॉर्मूला 3 जैसी प्रतियोगिताएं भी राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित हो सकती हैं।

महिलाओं की भागीदारी

अखिलेश रेड्डी ने गर्व से बताया कि पहले भारत में महिला ड्राइवर्स बहुत कम थीं, लेकिन पिछले 2 सालों में 3-4 महिला ड्राइवर्स ने अच्छा प्रदर्शन किया है। यह दर्शाता है कि मोटरस्पोर्ट्स में अब महिलाओं की भागीदारी भी तेजी से बढ़ रही है।

व्यक्तिगत प्रेरणा

जब उनसे उनकी प्रेरणा के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि मोटरस्पोर्ट्स के प्रति उनका जुनून बचपन से है। भले ही वे खुद पेशेवर ड्राइवर नहीं बन पाए, लेकिन अब वे अपनी कोशिशों से नए युवाओं के लिए अवसर और बेहतर प्लेटफॉर्म बनाना चाहते हैं।

आईवीएफ के माध्यम से निर्मित भ्रूणों के आनुवंशिक परीक्षण से अधिक उम्र में माँ बनने में मदद मिलेगी

विजय गर्ग

35 वर्ष से अधिक आयु में परिवार शुरू करने वाली महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है, लेकिन इस आयु वर्ग की महिलाओं में गुणसूत्र संबंधी असामान्यताओं वाले भ्रूण होने का खतरा अधिक होता है। इससे गर्भधारण में कठिनाई और गर्भपात का खतरा बढ़ जाता है। शोधकर्ताओं ने बताया कि ऐसी स्थिति में, आईवीएफ से निर्मित भ्रूणों का आनुवंशिक परीक्षण, पीजीटी-ए, महिलाओं को अधिक उम्र में बच्चे पैदा करने में मदद कर सकता है।

किंग्स कॉलेज लंदन के शोधकर्ताओं के नेतृत्व में पहला यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण 35-42 वर्ष की महिलाओं पर केंद्रित था। परीक्षण में भ्रूण में गुणसूत्र संबंधी असामान्यताओं की जांच के लिए प्रीइम्प्लांटेशन जीन परीक्षण (PGT-A) का उपयोग किया गया था। अध्ययन के

परिणाम क्लिनिकल मेडिसिन में प्रकाशित हुए हैं। परिणामों से पता चला है कि PGT-A परीक्षण ने तीन भ्रूण स्थानांतरण के बाद उच्च जीवित जन्म दर दिखाई। यह PGT-A समूह में 72 प्रतिशत और नियंत्रण समूह में 52 प्रतिशत था। PGT-A समूह की महिलाओं ने कम स्थानांतरण के साथ गर्भधारण किया, जिससे गर्भधारण का समय कम हो गया, जो प्रजनन आयु की महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। डॉ. डॉ. यूसुफ बिबिजून ने कहा कि इन निष्कर्षों से पता चलता है कि इस आयु वर्ग में PGT-A का लक्षित उपयोग ज्यादातर महिलाओं को जल्द गर्भधारण करने में मदद कर सकता है किंग्स फर्टिलिटी में प्रजनन उपचार ले रही 100 महिलाओं पर किए गए इस पायलट अध्ययन का उद्देश्य वृद्ध रोगियों पर ध्यान केंद्रित करके साक्ष्य की कमी को पूरा करना और 35-42 वर्ष की आयु की महिलाओं में गर्भावस्था और जीवित जन्म दर पर परीक्षण के प्रभाव का पता लगाना था। हालाँकि, इन निष्कर्षों की पुष्टि के लिए एक बड़े बहु-केंद्रीय परीक्षण की आवश्यकता है।

कृत्रिम प्रकाश संश्लेषण के प्रयास

विजय गर्ग

पेड़-पौधे सूर्य के प्रकाश से ऊर्जा का निर्माण करने की अद्भुत क्षमता रखते हैं। इसे ₹प्रकाश संश्लेषण₹ या ₹फोटो सिंथेसिस₹ कहा जाता है। लंबे समय से विज्ञानी इस प्रक्रिया से प्रेरणा लेकर और विशेष प्रोटीनों की मदद से इसे प्रयोगशाला में दोहराने का प्रयास कर रहे हैं, ताकि ऊर्जा का एक स्वच्छ और प्रभावी स्रोत प्राप्त किया जा सके। हाल में स्विट्जरलैंड के बेसल विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने पेड़-पौधों से प्रेरित होकर एक ऐसा अणु विकसित किया है, जो प्रकाश से चार आवेशों को संग्रहित कर सकता है। इसे कृत्रिम प्रकाश संश्लेषण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है, जिससे कार्बन - तटस्थ ईंधन की खोज में तेजी आने की संभावना है।

कृत्रिम प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया जटिल है और इसमें बहु - इलेक्ट्रान अभिक्रियाओं की आवश्यकता होती है। यह प्रक्रिया मंद प्रकाश में भी कार्य करती है, जिससे तकनीक वास्तविक सौर ईंधन उत्पादन के और करीब पहुंच जाती है। प्रकाश के प्रभाव में अणु एक ही समय में दो धनात्मक और दो ऋणात्मक आवेश संग्रहित करता है। हाल में विकसित किए गए नए अणु में पांच भाग हैं। एक तरफ दो भाग इलेक्ट्रान छोड़कर धनात्मक आवेशित होते हैं, जबकि दूसरी तरफ दो भाग इलेक्ट्रान ग्रहण कर ऋणात्मक आवेशित होते हैं। बीच का भाग सूर्य के प्रकाश को अवशोषित कर इलेक्ट्रान स्थानांतरण की प्रक्रिया शुरू करता है। शोधकर्ताओं ने दो प्रकाश स्रोतों के चरणबद्ध उपयोग से चार आवेश उत्पन्न किए। पहला स्रोत एक धनात्मक और एक ऋणात्मक आवेश बनाता है, जो विपरीत सिरों तक पहुंचते हैं। दूसरे स्रोत से यही प्रक्रिया दोहराई जाती है, जिससे अणु में कुल चार आवेश हो जाते हैं। चरणबद्ध उत्तेजना से काफी मंद प्रकाश का उपयोग संभव हो जाता है, जिसका अर्थ है कि यह सूर्य के प्रकाश की तीव्रता के करीब पहुंचता है। पहले के शोधों में शक्तिशाली लेजर प्रकाश की आवश्यकता होती थी।

इस अध्ययन के निष्कर्ष कृत्रिम प्रकाश संश्लेषण के लिए महत्वपूर्ण इलेक्ट्रान स्थानांतरण की समझ में सुधार करने में मदद करेंगे। शोध के प्रमुख लेखक प्रोफेसर ओलिवर वेंगर के अनुसार, ₹हमने दिखाया है कि सूर्य के प्रकाश से विभिन्न आवेशों को कुशलतापूर्वक कैसे संग्रहित किया जा सकता है। इन इलेक्ट्रान स्थानांतरणों को समझने से हम सौर ऊर्जा को भंडारण योग्य, टिकाऊ ईंधन में बदलने के और करीब पहुंचते हैं।₹ कृत्रिम प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया पर्यावरण के अनुकूल ईंधनों की कुंजी बन सकती है। इसमें हाइड्रोजन, मेथनाल और सिंथेटिक पेट्रोल जैसे तथाकथित 'सौर ईंधन' शामिल हैं। जलाए जाने पर ये ईंधन केवल उतनी ही कार्बन डाइआक्साइड उत्पन्न करेंगे जितनी उपयोगी ईंधन बनाने के लिए आवश्यक है। ये पूरी तरह से कार्बन - तटस्थ होंगे।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

डाइटिंग के दौरान बचे ये गलतियां करने से

विजय गर्ग

डाइटिंग के दौरान इन गलतियों को करने से बचना बेहद जरूरी है। आइए जानें उन मिस्टेक्स के बारे में, जिन्हें हमें वेट लॉस के दौरान नजरअंदाज करना चाहिए। जानकारी के अनुसार डाइट में लो-फैट प्रोडक्ट्स बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन याद रखें कि लो फैट का मतलब लो कैलोरी नहीं होता। इसलिए आप अपने आहार में कितना फैट, शुगर और कैलोरीज ले रहे हैं, यह जानने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि आप अपने न्यूट्रिशनल लेवल को जांचें और डाइटिंग के दौरान गलतियां न करें। वजन कम करने वाले लोगों को लगता है कि ब्रेकफास्ट स्किप करने का अर्थ है कैलोरीज को कम करना, लेकिन ऐसा करने से आपको पूरा दिन भूख लगेगी। इससे आप अनप्लांड स्नैक्स ले सकते हैं, जो वेट लॉस में आपके लिए सबसे बड़ी गलती साबित हो सकती है। हालांकि, माइंडलेस स्नैकिंग करने से आपका वजन बढ़ सकता है। लेकिन, इसका अर्थ यह नहीं है कि आप बिलकुल भी स्नैक्स न लें। हेल्दी स्नैक्स लेना वजन कम करने के लिए महत्वपूर्ण है। हेल्दी स्नैकिंग से मेटाबॉलिज्म बढ़ता है, खासतौर पर अगर यह प्रोटीन रिच हो तो। बहुत अधिक कैलोरीज लेना वजन के बढ़ने का कारण बन सकता है। इसलिए अगर आप अधिक कॉफी या अल्कोहोलिक पेय पदार्थों का सेवन करते हैं, तो यह आपकी बहुत बड़ी गलती हो सकती है। अधिक पानी पीना कैलोरीज बर्न करने के लिए बहुत जरूरी है। इसलिए खुद को हाइड्रेट रखें। इससे भी मेटाबॉलिज्म बढ़ता है, जिससे वजन कम होने में मदद मिलती है। वैसे यह ध्यान रखें कि जरूरत से ज्यादा पानी का सेवन ना करें। मालूम हो कि वजन कम करने के लिए बहुत से प्रयासों और संकल्प की जरूरत होती है। जब हम वजन कम करने की कोशिश कर रहे होते हैं, तो उस दौरान हर उस टिप को फॉलो करने की कोशिश करते हैं, जो हमें दिया जाता है। लेकिन, अधिकतर यह समझना बहुत मुश्किल हो जाता है कि कौन से टिप फॉलो करें और कौन सा नहीं ?

द शैडो स्कूलिंग

विजय गर्ग

कक्षा की घंटी अब भारत के शहरों में एक स्कूल के दिन के अंत का संकेत नहीं देती है। कक्षा XI और XII में लगभग आधे शहरी छात्रों के लिए, असली पीस स्कूल के बाद शुरू होता है - कोचिंग केंद्रों के तंग, फ्लोरोसेंट-लिट हॉल में। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के व्यापक मॉड्यूलर सर्वेक्षण: शिक्षा 2025 के अनुसार, इस ब्रैकेट में 44.6 प्रतिशत शहरी छात्र निजी ट्यूशन में नामांकित हैं। ग्रामीण नंबर बहुत पीछे नहीं हैं, तीन में से एक छात्र अतिरिक्त मदद मांग रहा है। साथ में, भारत के 37 प्रतिशत वरिष्ठ स्कूली छात्र समग्र सीखने में संलग्न होने के बजाय मॉक टेस्ट का पूर्वाभ्यास करते हुए अपने प्रारंभिक वर्ष बिता रहे हैं।

इस डेटा से पता चलता है कि केवल अकादमिक महत्वाकांक्षा नहीं बल्कि एक प्रणालीगत विफलता है। निजी ट्यूशन, एक बार संघर्षरत शिक्षार्थियों के लिए एक समर्थन प्रणाली, एक अपरिहार्य अस्तित्व उपकरण बन गया है। माता-पिता ने स्कूलों की अपर्याप्तता से इस्तीफा दे दिया, स्वेच्छा से कोचिंग केंद्रों को मोटी फीस का भुगतान किया, अपने बच्चों को डर था कि अन्यथा वे पीछे पड़ जाएंगे स्कूल स्वयं जटिल हैं, पतले प्रच्छन्न ₹उपचारात्मक कक्षाएं₹ चला रहे हैं जो अपनी दीवारों के भीतर शिक्षण की अक्षमता को उजागर करते हैं। मौलिक प्रश्न पूछा जाना चाहिए: यदि सीखने को आउटसोर्स किया जाता है तो कक्षाओं का मूल्य क्या है?

इस ट्यूशन संस्कृति ने शिक्षा की भावना की पुष्टि की है। जिज्ञासा और रचनात्मकता

को बढ़ावा देने के बजाय, सीखने को एक उच्च-दांव धीरज परीक्षण - अंक, रैंक और प्रवेश के लिए कम कर दिया गया है। वित्तीय बोझ कुचल रहा है। शहरी परिवार निजी कोचिंग पर सालाना 10,000 के करीब खर्च करते हैं, ग्रामीण औसत को दोगुना करते हैं। मार्जिन पर घरों के लिए, ये खर्च बैक-ब्रेकिंग हैं, फिर भी एक ऐसे समाज में अपरिहार्य है जहां गुणवत्ता उच्च शिक्षा तक पहुंच संकुचित हो रही है। जो लोग निजी ट्यूशन का खर्च नहीं उठा सकते हैं, वे फंसे हुए हैं, एक अयोग्य प्रणाली के शिकार हैं जो विशेषाधिकार को बनाए रखता है।

मनोवैज्ञानिक लागत भी उतनी ही गंभीर है। किशोरावस्था, अन्वेषण और आत्म-खोज की अवधि के लिए, अथक अभ्यास द्वारा अपहरण कर लिया गया है। छात्र दबाव में बकसुआ करते हैं, अक्सर बर्नआउट में घूमते हैं, और दुखद मामलों में, आत्महत्या करते हैं। कि यह एक राष्ट्रीय शिक्षा नीति के साथ एक देश में सामान्यीकृत हो गया है जिसमें शामिल करने, नवाचार और समग्र सीखने का वादा नीति निष्क्रियता का एक हानिकारक संकेत है।

कोचिंग उद्योग का विनियमन, जैसा कि केंद्र ने 2024 में प्रयास किया था, आवश्यक है लेकिन पर्याप्त नहीं है। शैडो स्कूलिंग पनपती है क्योंकि मुख्यधारा की स्कूली शिक्षा ढह रही है। जब तक स्कूल अपने उद्देश्य को पुनः प्राप्त नहीं करते हैं - पाठ्यक्रम को मजबूत करके, शिक्षक प्रशिक्षण में निवेश करके, और उच्च शिक्षा के अवसरों का विस्तार करके - निजी ट्यूशन वास्तविक कक्षा के रूप में बहाना जारी रखेगा। भारत को एक असहज सत्य का सामना करना चाहिए: हम एक पीढ़ी को शिक्षार्थियों की नहीं, बल्कि बचे हुए लोगों की परवरिश कर रहे हैं। इस ट्रेडमिल से अपने बच्चों को बचाने के लिए, हमें कक्षा में विश्वास बहाल करना चाहिए और परीक्षण स्कोर से परे सफलता को फिर से परिभाषित करना चाहिए।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलौट पंजाब

दृष्टि का दायरा

हम सभी के जीवन में दृष्टिकोण का बहुत महत्व है। हम अपने आसपास की चीजों, वातावरण और स्वयं को लेकर क्या धारणा रखते हैं, वही लगभग हमारे जीवन की परिभाषा बन जाती है। अगर हम अपने जीवन से खुश और संतुष्ट हैं, तो फिर अधिक फर्क नहीं पड़ता कि दूसरे हमारे जीवन के बारे में क्या दृष्टिकोण रखते हैं। वहीं अगर हम खुद को लेकर नकारात्मक, आलोचनात्मक रवैया रखते हैं, तो हमें लगभग हर दृष्टि ही घूरती हुई नजर आने लगती है। हर परिस्थिति में सकारात्मक बने रहने के लिए हमें कई उदाहरण दिए जाते रहे हैं, जिसमें एक आधे भरे या आधे खाली गिलास का सिद्धांत भी प्रमुख है। हमारे सामने एक गिलास रख दिया जाता है, जिसमें आधा पानी भर दिया जाता है। अब हमसे पूछा जाता है कि यह गिलास आधा खाली है या भरा हुआ। हमारे जवाब से यह निर्धारित किया जाता है कि जीवन को लेकर हमारा नजरिया सकारात्मक है या नकारात्मक।

ऐसे ही अनगिनत उदाहरणों से हमें सकारात्मक बनाए रखने का प्रयास किया जाता रहा है। जो उपलब्ध है, जो मिल रहा है, उस पर अपनी दृष्टि बनाए रखिए। कहा भी गया है कि संतोषी सदा सुखी, जो कि गलत भी नहीं है। प्रयास हमेशा करते रहना और जो हमारे पास है उसे तनावमुक्त होकर स्वीकार कर लेना, यह सुखी जीवन की चाबी कही जा सकती है।

जब हमारे वास्तविक अधिकारों की बात होने लगती है, तब नकारात्मक, सकारात्मक विचारधारा या हर हाल में संतुष्टि से भरे जीवन से परे यह समझना भी बेहद आवश्यक हो जाता है कि किसी दुकान में शीशे की अलमारी में रखी हुई वस्तु जरूरत की है भी या नहीं। उस वस्तु की जरूरत हमें वर्तमान में या भविष्य में रहेगी, कहीं वह हमारे लिए अवांछित तो नहीं है! हमारा उससे कोई संबंध है भी या नहीं! यह सोच सकारात्मक या नकारात्मक दृष्टिकोण में हमें नहीं बांटती, बल्कि हमें मौका देती है उचित चुनाव करने का, हमारे अधिकारों पर विमर्श करने का, उन विश्लेषणों से खुद को बचा लेने का जो केवल उचित मुद्दों से भटकाव के लिए हमारे समक्ष रख दिए गए हैं, जिनका वास्तव में हमारे जीवन की बेहतरी से कोई सीधा संबंध ही नहीं है।

सदाचार का पाठ पढ़ाकर कई बार हमारे सामने ऐसी चीजें रख दी जाती हैं जो किसी और की स्वार्थपूर्ति के लिए बनाई गई होती हैं। ऐसे में हमें खुद को आशावान बने रहने के दबाव से मुक्त कर देना चाहिए। चीजों, परिस्थितियों के प्रति आशावादी होना जितना आवश्यक है, उतना ही जरूरी है उनका हमारे जीवन में प्रासंगिक होना। हमेशा परिस्थितियों के वशीभूत बने रहकर जो मिला है उसमें किसी पीड़ित की तरह संतुष्ट बने रहने की कोशिश करने से बेहतर है, अपने सही अधिकारों के लिए आवाज उठाना, सवाल पूछना और बेहतरी के लिए कर्मबद्ध हो जाना। विकास इसी प्रक्रिया से संभव हो पाता है, जब हम गैरजरूरी चीजों का बहिष्कार करने का

साहस खुद में जुटा पाते हैं और वास्तविक आवश्यकताओं की दिशा में अग्रसर होते हैं। ऐसा करने से हम न केवल खुद के जीवन में प्रगति लाते हैं, बल्कि अगली पीढ़ी की राहें भी आसान कर देते हैं।

अपने जीवन से जुड़े विषयों या मुद्दों के बारे में अवगत रहना, अपने ध्यान को अपने लक्ष्य पर केंद्रित बनाए रखना भी जीवन के प्रति उम्मीद से भरा दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। निश्चित ही हम सभी की जरूरतें भिन्न परिस्थितियों में अलग हो सकती हैं। मगर कुछ मूलभूत जरूरतें सभी मनुष्यों को सामान्य रूप से रहती हैं। ऐसे में हमें यह देखना चाहिए कि क्या सभी को समान रूप से सुविधाएं उपलब्ध हैं और क्या सभी के गिलास में इतना पानी है कि सबकी प्यास बुझ पा रही है। कहीं ऐसा तो नहीं है कि केवल कुछ लोगों के हिस्से में ही आधा भरा हुआ गिलास आया है। क्या गिलास के भीतर वाकई जरूरत का सामान भरा हुआ है या यह केवल प्रलोभन है!

सकारात्मक और नकारात्मक दृष्टिकोण से पहले यह देखना बेहद आवश्यक है कि क्या यह सही विषय है, जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता भी है। अक्सर हम अपना जीवन दूसरों की नजरों से देखते, समझते आए हैं, जिसके चलते हमारे निर्णय भी हमारी इसी डरी हुई सोच का परिणाम होने लगते हैं। हमारी उम्मीदों को हम कम करते जाते हैं, खुद को सिकुड़ते जाते हैं। मन के भीतर भले गहरे अंधेरे में डूब रहे होते हैं, पर ऊपर से बनावटी खुशी को ओढ़ लेते हैं। अपनी मूलभूत जरूरतों के लिए, अधिकारों के लिए हमें हमेशा बिना डरे कदम उठाना चाहिए। जब हम साहसी होकर उन चीजों को जगह देने लगते हैं जो वास्तव में हमारे लिए आवश्यक हैं, तब पाते हैं कि कई सारी गैरजरूरी चीजें हमारे जीवन से अपने आप ही समाप्त होने लगती हैं जो हमने अपने भय, झिझक के चलते संग्रहीत कर रखी थीं।

जब हम अपने आप में सहज हो जाते हैं, खुद को और अपनी जरूरतों को समझने लगते हैं, तब हम सही अर्थों में उम्मीदों और खुशियों से भरा उन्मुक्त जीवन जीने लगते हैं। अपने सही अधिकारों के लिए आवाज उठाना हर परिस्थिति में एक सकारात्मक कदम कहा जा सकता है जो हमारे जीवन को ही नहीं, समाज को भी सही दिशा की ओर आगे बढ़ाने में सक्षम है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

न्यायालय की फटकार और डॉक्टरों की लिखावट

"जहाँ पर्ची के हर अक्षर स्पष्ट होंगे, वहीं मरीज का जीवन और अधिकार सुरक्षित रहेंगे।"

"पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट का हालिया आदेश एक मील का पत्थर है। अदालत ने डॉक्टरों को साफ और स्पष्ट पर्ची लिखने का निर्देश देकर सीधे मरीज के जीवन और अनुच्छेद 21 से इसे जोड़ा है। यह आदेश केवल लिखावट की औपचारिकता नहीं, बल्कि जीवन सुरक्षा का अभिन्न हिस्सा है। सरकार यदि डिजिटल पर्ची और हेल्थ रिकॉर्ड की नीति को लागू करती है, तो स्वास्थ्य सेवाओं में पारदर्शिता, विश्वास और सुरक्षा का नया अध्याय शुरू होगा। यह निर्णय पूरे देश में लागू होने योग्य है।"

– डॉ. सत्यवान सौरभ

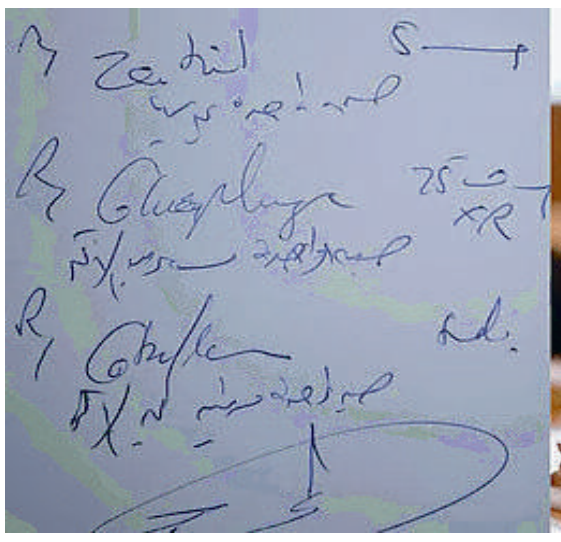

पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट ने हाल ही में एक ऐसा आदेश दिया है, जो न केवल हरियाणा-पंजाब बल्कि पूरे देश की स्वास्थ्य व्यवस्था पर गहरी छाप छोड़ेगा। अदालत ने स्पष्ट कहा कि डॉक्टरों को अब मरीजों की पर्ची साफ लिखनी होगी। बेहतर होगा कि डॉक्टर अपनी लिखावट कैपिटल लेटर्स में करें या फिर टाइप/डिजिटल रूप में पर्ची दें। यह फैसला सिर्फ लिखावट की औपचारिकता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सीधे मरीज की सुरक्षा और जीवन के अधिकार (अनुच्छेद 21) से जुड़ा हुआ है।

भारत में अक्सर यह शिकायत सुनने को मिलती रही है कि डॉक्टरों की लिखावट इतनी उलझी होती है कि फार्मासिस्ट या मरीज को समझ ही नहीं आता कि कौन-सी दवा, कितनी मात्रा में और कितने समय तक लेनी है। ऐसे में गलत दवा या गलत खुराक से मरीज की हालत बिगड़ जाना आम बात है। कई बार तो यह लापरवाही मौत तक का कारण बन चुकी है। यह स्थिति केवल छोटे शहरों या ग्रामीण इलाकों तक सीमित नहीं है। बड़े-बड़े कॉर्पोरेट अस्पतालों में भी प्रिस्क्रिप्शन का यह संकट मौजूद है। लिहाज़ा हाईकोर्ट का हस्तक्षेप एक जीवन रक्षक पहल के रूप में देखा जाना चाहिए।

यह विषय केवल चिकित्सकीय नहीं बल्कि सामाजिक भी है। ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों में अक्सर मरीज कम पढ़े-लिखे होते हैं। जब वे डॉक्टर की पर्ची लेकर दवा की दुकान पर पहुँचते हैं तो उनकी समझ से बाहर होता है कि कौन-सी दवा कितनी बार लेनी है। कई बार दवा विक्रेता भी लिखावट को गलत समझ लेता है। इससे मरीज गलत समय पर दवा खा लेता है, डोज़ बिगड़ जाती है और बीमारी बढ़ जाती है। यह समस्या गर्भवती महिलाओं, बच्चों और बुजुर्ग मरीजों में और भी गंभीर हो जाती है।

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21 हर नागरिक को जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार देता है। अदालत ने सही कहा कि मरीज को अपनी बीमारी और इलाज की जानकारी मिलना उसका मौलिक अधिकार है। यदि प्रिस्क्रिप्शन ही अस्पष्ट और अधूरी जानकारी वाला हो तो यह अधिकार स्वतः ही बाधित होता है। इस संदर्भ में यह आदेश केवल चिकित्सा पद्धति के तकनीकी सुधार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नागरिक अधिकारों के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

न्यायालय ने अपने आदेश में यह भी कहा कि जब तक देशभर में ई-प्रिस्क्रिप्शन (कंप्यूटर से बनी पर्ची) की व्यवस्था पूरी तरह लागू नहीं हो जाती, तब तक सभी डॉक्टर कैपिटल लेटर्स में लिखें। यह सुझाव व्यावहारिक भी है और भविष्य की दिशा भी तय करता है। डिजिटल हेल्थ रिकार्ड और ई-प्रिस्क्रिप्शन के कई लाभ हैं – मरीज का पूरा मेडिकल इतिहास सुरक्षित रहता है, फार्मासिस्ट को गलतफहमी की गुंजाइश नहीं रहती, दवा कंपनियों और हेल्थ इंश्योरेंस तक पारदर्शिता सुनिश्चित होती है और मरीज चाहे गांव का हो या महानगर का, उसे स्पष्ट जानकारी मिलती है।

हाईकोर्ट ने नेशनल मेडिकल कमीशन (NMC) को भी निर्देश दिया है कि मेडिकल कॉलेजों में छात्रों को साफ-सुथरी लिखावट और स्पष्ट प्रिस्क्रिप्शन की ट्रेनिंग दी जाए। यह कदम बहुत अहम है क्योंकि आने वाले समय में वही छात्र डॉक्टर बनेंगे। यदि मेडिकल शिक्षा के शुरुआती दौर से ही छात्रों को साफ लिखने और स्पष्ट पर्चा देने की आदत डाल दी जाए, तो आने वाले वर्षों में यह समस्या स्वतः ही खत्म हो सकती है। यह सुधार मेडिकल एथिक्स का हिस्सा बनना चाहिए।

अदालत ने राज्य सरकारों और केंद्र शासित प्रदेशों को भी नीति बनाने का निर्देश दिया है। इस नीति के तहत छोटे क्लिनिक और ग्रामीण डॉक्टरों को कंप्यूटर आधारित प्रिस्क्रिप्शन सिस्टम के लिए आर्थिक सहायता दी जा सकती है। जिला स्तर पर सिविल सर्जन की निगरानी में जागरूकता बैठकों का आयोजन किया जाए और स्वास्थ्य विभाग समय-समय पर निरीक्षण कर यह सुनिश्चित करे कि डॉक्टर पर्चे पढ़ने योग्य लिख रहे हैं। यदि सरकार इस आदेश को गंभीरता से लागू करती है तो यह न केवल मरीजों के जीवन की सुरक्षा करेगा बल्कि स्वास्थ्य सेवा में पारदर्शिता और विश्वास को भी मजबूत करेगा।

अंतरराष्ट्रीय अनुभव बताते हैं कि प्रिस्क्रिप्शन की स्पष्टता स्वास्थ्य सेवाओं में क्रांतिकारी सुधार लाती है। पश्चिमी देशों में डॉक्टरों द्वारा हाथ से लिखे पर्चे अब लगभग अतीत की बात हो चुके हैं। अमेरिका, यूरोप और जापान जैसे देशों में ज्यादातर अस्पतालों और क्लिनिकों में ई-प्रिस्क्रिप्शन ही मानक बन चुका है। भारत में भी डिजिटल इंडिया मिशन और आयुष्मान भारत डिजिटल हेल्थ मिशन के तहत इलेक्ट्रॉनिक हेल्थ रिकॉर्ड को बढ़ावा दिया जा रहा है। हाईकोर्ट का आदेश इन पहलों को और गति देगा।

हालाँकि, चुनौतियाँ कम नहीं हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली और इंटरनेट की कमी से डिजिटल व्यवस्था लागू करना कठिन होगा। छोटे क्लिनिकों के लिए कंप्यूटर, प्रिंटर और सॉफ्टवेयर की लागत बड़ी बाधा है। डॉक्टरों पर पहले से ही प्रशासनिक बोझ है, ऐसे में अतिरिक्त प्रशिक्षण और औपचारिकताएँ असुविधा पैदा कर सकती हैं। यह भी सही है कि मरीजों की भाषा और समझ अलग-अलग होती है। अतः केवल अंग्रेज़ी या कैपिटल लेटर्स काफी नहीं होंगे, बल्कि स्थानीय भाषा में भी स्पष्टता जरूरी है।

फिर भी, यदि इसे चरणबद्ध और वित्तीय सहयोग के साथ लागू किया जाए तो यह समस्या स्थायी रूप से सुलझ सकती है। सरकार चाहे तो इसे आयुष्मान भारत योजना से जोड़ सकती है और अस्पतालों को अनुदान देकर डिजिटल प्रिस्क्रिप्शन अनिवार्य बना सकती है। साथ ही फार्मासिस्टों को भी यह अधिकार होना चाहिए कि वे अस्पष्ट प्रिस्क्रिप्शन को दवा देने से पहले डॉक्टर से सत्यापित करें।

डॉक्टरों की लिखावट अब केवल मज़ाक या व्यंग्य का विषय नहीं रह गई, बल्कि यह सीधे-सीधे जीवन और मृत्यु का प्रश्न है। अदालत ने मरीज के अधिकार और डॉक्टर की जिम्मेदारी को स्पष्ट रूप से जोड़ा है। यदि यह आदेश पूरे देश में लागू हो जाए तो न केवल स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता सुधरेगी बल्कि मरीज और डॉक्टर के बीच विश्वास भी मजबूत होगा। चिकित्सा का पहला उद्देश्य जीवन बचाना है और यदि लिखावट जैसी साधारण-सी चीज़ इसमें बाधा बने, तो यह चिकित्सा के धर्म और कर्तव्य दोनों के विपरीत है।

इसलिए यह आदेश डॉक्टरों, सरकार और समाज तीनों के लिए चेतावनी भी है और अवसर भी। चेतावनी इस बात की कि अब लापरवाही बर्दाश्त नहीं होगी, और अवसर इस मायने में कि भारत स्वास्थ्य सेवाओं को आधुनिक और सुरक्षित बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम उठा सकता है।

कुत्ते की पूँछ - कुत्तों की पूछ

चंद्र मोहन

अभी हाल ही में एक पोस्टर देखने को मिला. बलात्कार करने वाले बेल पर और कुत्ते जेल में.

आजकल कुत्ते बड़ी चर्चा में हैं. सुप्रीम कोर्ट ने भी कुत्तों पर एक फतवा जारी किया. व्हाट्सएप्प में भी कुत्तों पर रोज कुछ न कुछ पड़ने और देखने को मिलता रहता है. कभी किसी कुत्ते ने लिफ्ट में किसी को काट खाया. कभी बच्चों को खेलते हुए किसी कुत्ते ने काट खाया.

हालांकि आवारा कुत्तों और पालतू कुत्तों में अंतर बहुत है लेकिन शरारत करना और बेवजह काट लेना एक जैसा ही हो गया है.

कुत्ता एक वफादार जानवर माना जाता है.

प्यारे से क्यूट से दिखने वाले कुत्ते. खूंखार से दिखनेवाले कुत्ते. घर और बाहर आती जाती कारों के पीछे भागते कुत्ते एक अलग सी पहचान लिए रहते हैं.

सुबह सवेरे सैर करने निकलो तो गुप्ता जी, शर्मा जी और वर्मा जी अपने अपने प्यारे और धाकड़ से खूंखार दिखने वाले कुत्तों के संग सैर करते नजर आ ही जाते हैं. कॉलोनी और मोहल्ले में गुप्ता जी, शर्मा जी या फिर वर्मा जी की पहचान भी उनके कुत्तों की वजह बन चुकी है.

मैंने बहुत पहले नवभारत टाइम्स मे एक लेख लिखा था 'एक कुत्ते का इंटरव्यू', लेकिन आज कोई कुत्ता मुझे इंटरव्यू देने के लिए राज़ी ही नहीं हो रहा. कुत्ते की टेड़ी पूँछ तो हमेशा चर्चा में रही और कई कहावतें भी बनी लेकिन आजकल जो कुत्तों की पूछ हो रही है वह भी चर्चा का विषय हो गया है.

कुत्तों के काटने के कारणों को समझना और आक्रामकता के संकेतों को समझना, कुत्तों और उनके मालिकों के बीच के बंधन को मज़बूत कर सकता है और साथ ही सभी की सुरक्षा भी सुनिश्चित कर सकता है।

कुत्ते क्यों काटते हैं : श्वान संचार का एक रूप

काटना, जिसे अक्सर एक नकारात्मक या आक्रामक व्यवहार माना जाता है, कुत्तों का एक स्वाभाविक व्यवहार है। यह उनके सहज व्यवहार, पर्यावरणीय कारकों या सीखे हुए अनुभवों पर आधारित संचार का एक रूप है। कुत्तों के काटने के सामान्य कारणों पर एक नज़र डालते हैं:

डर:

कुत्तों के काटने का एक सबसे आम कारण डर है। कुत्ते किसी अपरिचित या डरावनी स्थिति से ख़तरा महसूस कर सकते हैं, जिससे वे बचाव में काटने लगते हैं। यह उनका यह कहने का तरीका है, ₹ मुझे डर लग रहा है, कृपया पीछे हट जाएँ।₹

क्षेत्र की सुरक्षा:

कुत्तों में अपने क्षेत्र की रक्षा करने की एक अंतर्निहित प्रवृत्ति होती है, जिसमें उनका घर, आँगन और यहाँ तक कि उनके मानव परिवार के सदस्य भी शामिल हैं। जब उन्हें अपने क्षेत्र पर कोई ख़तरा महसूस होता है तो उनकी सुरक्षात्मक प्रवृत्ति उन्हें काटने के लिए प्रेरित कर सकती है।

दर्द:

दर्द में पड़े कुत्ते में, इंसानों की तरह, बातचीत के प्रति सहनशीलता कम हो सकती है। एक नेकनीयत पालतू जानवर या यहाँ तक कि एक कोमल स्पर्श को भी ख़तरा समझकर काटने की प्रतिक्रिया हो सकती है।

शिकार करने की प्रवृत्ति:

कुछ कुत्तों में शिकार करने की तीव्र प्रवृत्ति होती है जो तेज़ गति से चलने वाली वस्तुओं या जानवरों से जागृत हो सकती है। यह सहज व्यवहार कभी-कभी काटने का कारण बन सकता है, खासकर उन नस्लों में जिनमें शिकार करने की तीव्र प्रवृत्ति होती है।

आक्रामकता के संकेत: कुत्ते के काटने से बचाव

कुत्तों के काटने से बचाव के लिए आक्रामकता के संकेतों को समझना और पहचानना ज़रूरी है। कुत्ते अक्सर काटने से पहले चेतावनी के तौर पर कुछ खास व्यवहार दिखाते हैं। इन संकेतों को पहचानने से काटने से बचाव में मदद मिल सकती है:

गुर्राना:

बेचैनी या बेचैनी का संकेत देने वाले कुत्तों के शुरुआती संकेतों में से एक। यह पीछे हटने की एक स्पष्ट मौखिक चेतावनी है।

दांत दिखाना:

जब कोई कुत्ता अपने दांत दिखाता है, तो यह आक्रामकता या भय का दृश्य संकेत होता है, जो यह दर्शाता है कि यदि खतरा कम नहीं हुआ तो कुत्ता काट सकता है।

शरीर का अकड़ना:

यदि कोई कुत्ता अचानक अपने शरीर को अकड़ लेता है तो यह तीव्र बेचैनी या किसी रक्षात्मक कार्रवाई जैसे कि काटने की तैयारी का संकेत होता है।

ध्यान केंद्रित करके घूरना:

कुत्तों की भाषा में सीधी, केंद्रित घूरना चुनौती या आक्रामकता का संकेत हो सकता है। यह अक्सर किसी अधिक आक्रामक कार्रवाई से पहले होता है।

इन संकेतों और कुत्तों के काटने के कारणों को समझना उन सभी लोगों के लिए ज़रूरी है जो कुत्तों के साथ रहते हैं, चाहे वे पालतू जानवरों के मालिक हों, उनकी देखभाल करने वाले हों, या फिर ऐसे समुदाय के सदस्य हों जहाँ कुत्ते मौजूद हों। यह सिर्फ़ काटने से रोकने के बारे में नहीं है बल्कि एक ऐसा माहौल बनाने के बारे में भी है जहाँ कुत्ते सुरक्षित, समझे जाने वाले और हमारे जीवन में अच्छी तरह से घुल-मिल जाने का एहसास दिलाएँ।

कुत्ते के व्यवहार के पीछे छिपे संदेशों को समझकर, हम अंतर्निहित समस्याओं को दूर करने के लिए सक्रिय कदम उठा सकते हैं चाहे वह प्रशिक्षण, समाजीकरण, चिकित्सा देखभाल के माध्यम से हो, या बस कुत्ते को उसकी ज़रूरत के अनुसार जगह देकर हो। अंततः, कुत्ते के व्यवहार को समझने से कुत्तों और इंसानों के बीच का बंधन मज़बूत होता है जिससे हमारा साझा जीवन सभी के लिए अधिक सुखद और सुरक्षित बनता है।

नज़र आती आज़ादी, छिपी हुई कैद

कांच की दीवारें, यह शब्द अपने आप में एक तीखी विडंबना छिपाए हुए है। सामने सब कुछ साफ दिखता है—सपने, अवसर, खुशियाँ—पर जैसे ही हाथ बढ़ाओ, एक ठंडी, कठोर दीवार रास्ता रोक लेती है। आधुनिक जीवन की यह पारदर्शी कैद हमें एक विचित्र भंवर में फँसाती है। हम ऐसे युग में जीते हैं, जहाँ सब कुछ खुला और पारदर्शी लगता है, फिर भी अदृश्य बाधाएँ हर कदम पर हमें जकड़ लेती हैं। चाहे वह कॉर्पोरेट दफ्तरों की चमकती कांच की दीवारें हों, समाज की झूठी समानता का पाखंड हो, या रिश्तों की सतही नज़दीकियाँ—ये सभी हमें यह भ्रम देते हैं कि हम आज़ाद हैं, जबकि हकीकत में हम इन पारदर्शी दीवारों के पीछे बंधे हैं।

आधुनिक कॉर्पोरेट संस्कृति में कांच की दीवारें एक शक्तिशाली प्रतीक बन चुकी हैं। चमचमाते ग्लास केबिन, पारदर्शी मीटिंग रूम और ओपन-प्लान ऑफिस यह दावा करते हैं कि यहाँ सब कुछ खुला और समावेशी है। मगर यह पारदर्शिता कितनी सच्ची है? कर्मचारी एक-दूसरे को देखते हैं, बॉस की हर हरकत पर नज़र रखते हैं, लेकिन क्या सचमुच कुछ बदलता है? निर्णय, तरक्की और नीतियाँ अब भी चंद लोगों के कब्जे में रहती हैं। कांच की दीवारें भले ही पारदर्शी हों, वे सत्ता के केंद्र तक पहुँच को अवरुद्ध करती हैं। एक मेहनती मध्यमवर्गीय कर्मचारी दिन-रात खटता है, तरक्की का सपना बुनता है, पर अक्सर उसे कोई न कोई अदृश्य दीवार रोक लेती है—चाहे वह पक्षपात हो, नेटवर्किंग की कमी हो, या ऐसी नीतियाँ जो सिर्फ़ ऊपरी तबके के लिए बनी हों। यह तथाकथित पारदर्शिता दरअसल निगरानी का एक परिष्कृत जाल है, जो कर्मचारी को यह भ्रम देता है कि वह व्यवस्था का हिस्सा है, जबकि वह बाहर ही खड़ा रह जाता है।

डिजिटल युग में समाज एक पारदर्शी मंच सा लगता है। सोशल मीडिया पर हर कोई अपनी ज़िंदगी की चमक बिखेरता है—तस्वीरें, उपलब्धियाँ, खुशियाँ—सब कुछ दुनिया के सामने। यह भ्रम देता है कि हम एक खुले, बराबरी वाले समाज में जी रहे हैं। मगर यह पारदर्शिता केवल सतही है। गहराई में समाज आज भी वर्ग, जाति, धर्म और लिंग की दीवारों से जकड़ा हुआ है। एक गरीब परिवार का बच्चा शिक्षा और नौकरी का सपना देखता है, पर आर्थिक तंगी और सामाजिक भेदभाव की दीवारें उसे कुचल देती हैं। एक महिला कार्यस्थल पर समानता की बात सुनती है, मगर अवसरों की दौड़ में पुरुषों से पीछे छूट जाती है। ये कांच की दीवारें हमें विश्वास दिलाती हैं कि सब कुछ संभव है, मेहनत से हर मंज़िल हासिल हो सकती है। लेकिन जब कोशिशें बार-बार ठोकर खाती हैं, तब जाकर पता चलता है कि अवसरों का वह चमकता संसार हमारे लिए नहीं, बल्कि कुछ खास लोगों के लिए बना है।

आधुनिक रिश्ते "खुलेपन" और "ईमानदारी" का दम भरते हैं। व्हाट्सएप, वीडियो कॉल्स और सोशल मीडिया ने हमें हर पल जोड़ रखा है। मगर क्या यह नज़दीकी सच्ची है? पति-पत्नी, दोस्त, या परिवार के सदस्य एक-दूसरे की ज़िंदगी के हर अपडेट से वाकिफ़ रहते हैं, पर भावनाओं की गहराई तक पहुँचना जैसे नामुमकिन हो गया है। हम पोस्ट लाइक करते हैं, स्टेटस पर कमेंट करते हैं, लेकिन मन की असल बातें—डर, इच्छाएँ, सपने—अनकही रह जाती हैं। यह सतही संवाद एक कांच की दीवार खड़ी करता है, जो हमें एक-दूसरे को देखने तो देता है, पर सच्ची आत्मीयता से दूर रखता है। इस पारदर्शी दिखावे में हम अपनों के बीच होते हुए भी अकेलेपन की कैद में जीते हैं।

कांच की दीवारों का सबसे खतरनाक रूप उनकी अदृश्यता है। अगर ये पत्थर की होतीं, तो हम उन्हें तोड़ने की जिद पकड़ लेते। मगर ये पारदर्शी दीवारें हमें छलती हैं, यह भ्रम देती हैं कि आज़ादी हमारी मुट्ठी में है, कि सब कुछ सामने है। यह भ्रम हमें लड़ने से रोकता है। हम सोचते हैं कि मेहनत से प्रमोशन, खुलकर बोलने से स्वीकृति, और अपडेट्स शेयर करने से रिश्तों की गर्माहट मिल जाएगी। लेकिन हकीकत में ये दीवारें हमें जकड़ लेती हैं, हमें वहीं ठिठका देती हैं। यह पारदर्शी कैद आधुनिक जीवन की सबसे मार्मिक त्रासदी है।

इस कैद से निकलने की पहली सीढ़ी है इन दीवारों को पहचानना। जब तक हम इस भ्रम को नहीं तोड़ेंगे, बदलाव की सोच भी नहीं जागेगी। कॉर्पोरेट जगत में पारदर्शिता का मतलब चमकते ग्लास केबिन नहीं, बल्कि सच्ची समानता और सहभागिता है। कर्मचारियों को निर्णयों में शामिल करना, पक्षपात को जड़ से उखाड़ना और अवसरों को सबके लिए खोलना होगा। समाज में दिखावटी समानता को छोड़कर वास्तविक न्याय की ओर बढ़ना होगा—जाति, वर्ग और लिंग की दीवारों को ढहाकर, हर व्यक्ति को उसकी योग्यता का हक देना होगा। रिश्तों में सतही संवाद की जगह गहरे, ईमानदार संवाद को अपनाना होगा। अपनी खुशियों के साथ-साथ कमज़ोरियों और डर को साझा करने का साहस जुटाना होगा। तभी हम इन कांच की दीवारों को चकनाचूर कर सच्ची आज़ादी पा सकेंगे।

इन कांच की दीवारों को तोड़ना कोई आसान जंग नहीं। इसके लिए साहस चाहिए—सच को बेबाकी से कहने का साहस, अन्याय के खिलाफ़ डटकर खड़े होने का साहस, और अपने दिल की गहराइयों को खोलने का साहस। बिना इस हिम्मत के हम इन पारदर्शी दीवारों की कैद में जकड़े रहेंगे—सपनों को निहारते, अवसरों को छूने की चाह में तड़पते, और अपनों को पास देखकर भी उनसे कोसों दूर।

आधुनिक जीवन की यह कटु विडंबना हमें झकझोरती है—क्या हम वाकई आज़ाद हैं? या हम एक ऐसी कैद में जी रहे हैं, जो इतनी पारदर्शी है कि उसका अहसास ही नहीं होता? अब समय है कि हम इन कांच की दीवारों को पहचानें, उनके छल को उजागर करें, और उन्हें चकनाचूर करने की हिम्मत जुटाएँ। सच्ची आज़ादी तभी मिलेगी, जब हम इन दीवारों के पार न केवल देखें, बल्कि वहाँ तक पहुँचें। तभी हम एक ऐसा जीवन जी सकेंगे, जहाँ सपने, अवसर और रिश्ते महज भ्रम नहीं, बल्कि हमारी हकीकत बनें।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में लोगों की सुविधा हेतु लगाए गए 11 मेडिकल कैंपों में 24 घंटे तैनात रहेंगी मेडिकल टीमें

– साँप के काटने से लेकर हर बीमारी का होगा इलाज

अमृतसर, 1 सितम्बर (साहिल बेरी)

रावी में आई बाढ़ से प्रभावित इलाकों अजनाला और रमदास में लोगों की सुविधा के लिए डिप्टी कमिश्नर अमृतसर श्रीमती साक्षी साहनी के निर्देशानुसार 11 विशेष मेडिकल कैंप लगाए गए हैं, जिनमें 24 घंटे पेशेवर डॉक्टरों की टीमें तैनात रहेंगी। यह जानकारी देते हुए अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्री रोहित गुप्ता ने बताया कि ये कैंप इस प्रकार स्थापित किए गए हैं कि किसी भी गाँव से आने वाले व्यक्ति को आसानी से पहुँचने की सुविधा मिले और न्यूनतम समय में वह कैंप तक पहुँच सके।

उन्होंने बताया कि इन मेडिकल कैंपों में सारा इलाज और दवाइयाँ निःशुल्क उपलब्ध कराई जाएँगी।

कैंपों की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि ये मेडिकल कैंप घोनेवाल माछीवाल, प्राइमरी हैल्थ सेंटर रमदास, गुरुद्वारा कोट रजादा, हैल्थ एंड वेलनेस क्लीनिक सूफियां, हैल्थ एंड वेलनेस क्लीनिक जगदेव खुर्द, प्राइमरी हैल्थ सेंटर सुधार, गुरुद्वारा धनंई, गुरुद्वारा थोभा, फोकल प्वाइंट च्मयारी से हरड़ खुर्द रोड, सिविल अस्पताल अजनाला और बावली व अड़ाया गाँव का कैंप फौज की सहायता से कोट मौली में शुरू किया गया है।

उन्होंने क्षेत्रवासियों से अपील की कि किसी भी मेडिकल आपात स्थिति, जिसमें साँप के काटने जैसी स्थिति भी शामिल है, में घबराएँ नहीं और तुरंत इन कैंपों में डॉक्टरों से संपर्क करें। साथ ही उन्होंने बताया कि इस संबंध में सहायता के लिए हमारे हेल्पलाइन नंबर 0183-2229125 पर भी संपर्क किया जा सकता है।

जॉइंट डायरेक्टर पंजाब स्टेट काउंसिल फॉर साइंसेज़ एंड टेक्नोलॉजी ने किया मास्टर संजीव धर्माणी का विशेष सम्मान *पर्यावरण हेतु किए जा रहे विशेष प्रयासों के लिए हुए सम्मानित

श्री आनंदपुर साहिब

पंजाब स्टेट काउंसिल फॉर साइंसेज़ एंड टेक्नोलॉजी की ओर से ₹एनवायरमेंट एजुकेशन प्रोग्राम 2025₹ का आयोजन जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक शिक्षा) रूपनगर द्वारा श्री दशमेश अकादमी में किया गया। इस प्रोग्राम में पंजाब स्तर पर छह जिलों फतेहगढ़ साहिब, रूपनगर, जालंधर, शहीद भगत सिंह नगर, साहिबजादा अजीत सिंह नगर और पटियाला ने भाग लिया। इस दौरान स्टेट अवॉर्डी, प्रसिद्ध लेखक एवं पर्यावरण-प्रेमी मास्टर संजीव धर्माणी को पर्यावरण के लिए निरंतर किए जा रहे विशेष प्रयासों हेतु विशेष रूप से जॉइंट डायरेक्टर, पंजाब स्टेट काउंसिल फॉर साइंसेज़ एंड टेक्नोलॉजी (PSCST) तथा एनवायरमेंट एजुकेशन प्रोग्राम पंजाब के कोऑर्डिनेटर डॉ. के.एस. बाठ द्वारा प्रशंसा-पत्र एवं सम्मान चिन्ह भेंट कर इस पंजाब-स्तरीय (पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समर्थित) बड़े कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। इस मौके पर जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक शिक्षा) प्रेम कुमार मित्तल, डॉ. रीना चड्ढा जनरल मैनेजर इंडियन पॉल्यूशन कंट्रोल एसोसिएशन, डॉ. मंदाकिनी ठाकुर प्रोजेक्ट साइंटिस्ट, पंजाब स्टेट काउंसिल फॉर साइंसेज़ एंड टेक्नोलॉजी, डॉ. सोनू वालिया प्रिंसिपल श्री दशमेश अकादमी, जिला कोऑर्डिनेटर रूपनगर सुखजीत सिंह कैथ, डॉ. विशालि सिंह पाई जैम फाउंडेशन पुणे महाराष्ट्र, ब्यूटी शर्मा, राजेश धर्माणी, चरणजीत बंगा तथा विभिन्न जिलों से आए हुए अध्यापक व विद्यार्थी उपस्थित थे। इस दौरान मास्टर संजीव धर्माणी ने सभी आयोजकों और पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग के अधिकारियों का धन्यवाद किया।

अमृतसर के क्लब – सर्विस क्लब, अमृतसर क्लब और लम्सडेन क्लब ने बाढ़ पीड़ितों के लिए दी 3 लाख की सहायता

अमृतसर, 1 सितंबर (साहिल बेरी)

अमृतसर ज़िला प्रशासन और अजनाला हलके के विधायक श्री कुलदीप सिंह ढालीवाल द्वारा बाढ़ पीड़ितों की मदद के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना केवल सोशल मीडिया पर ही नहीं हो रही, बल्कि लोग आर्थिक सहयोग देकर भी उनके साथ खड़े हो रहे हैं।

आज अमृतसर शहर के तीन प्रमुख क्लबों – सर्विस क्लब, अमृतसर क्लब और लम्सडेन क्लब – के पदाधिकारियों ने अजनाला पहुँचकर डिप्टी कमिश्नर अमृतसर को राहत कार्यों में सहयोग के लिए 3 लाख रुपये की सहायता राशि के चेक भेंट किए। इस अवसर पर डिप्टी कमिश्नर ने सभी गणमान्य व्यक्तियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि आपके इस सहयोग से हमें और अधिक प्रोत्साहन मिला है और हम इसी आशीर्वाद से और अधिक तत्परता के साथ लोगों की सेवा करेंगे।

इस मौके पर सर्विस क्लब के प्रधान सुखदेव सिंह छीना, उप प्रधान कुलदीप राज सरीन, जनरल सचिव कुलविंदर सिंह अरोड़ा; अमृतसर क्लब के प्रधान श्री ललित मोहन चंदोक, जनरल सचिव श्री अनिल कुमार बॉबी तथा लम्सडेन क्लब के उप प्रधान रविंदर सिंह रूबी और जनरल सचिव अश्वनी कुमार उपस्थित रहे।

अमनदीप अस्पताल ने उजाला सिग्नस के साथ साझेदारी में बाढ़ प्रभावित पंजाब में जीवन रक्षक स्वास्थ्य सेवा सहायता प्रदान की

अमृतसर (साहिल बेरी)

पंजाब और कई उत्तरी राज्यों में हाल ही में आई बाढ़ ने बड़े पैमाने पर तबाही मचाई है, गाँव जलमग्न हो गए हैं, फसलें नष्ट हो गई हैं और पशुधन को भारी नुकसान हुआ है। इस मानवीय संकट के बीच, अमनदीप अस्पताल और उजाला सिग्नस ने सबसे अधिक प्रभावित समुदायों को तत्काल स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए कदम बढ़ाया है।

बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में चिकित्सा देखभाल की तत्काल आवश्यकता को समझते हुए, अस्पतालों ने स्वास्थ्य शिविर स्थापित करने, मुफ्त दवाइयाँ वितरित करने और मौके पर एक एम्बुलेंस तैनात करके आपातकालीन सहायता प्रदान करने के लिए चिकित्सा टीमों को तुरंत तैनात किया। डॉक्टरों, नर्सों और सहायक कर्मचारियों ने समय पर उपचार सुनिश्चित करने और बाढ़ के बाद होने वाली बीमारियों के प्रकोप को रोकने के लिए अथक प्रयास किया।

सामुदायिक कल्याण के प्रति व्यक्तिगत प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए, मुख्य हड्डी रोग विशेषज्ञ एवं निदेशक डॉ. अवतार सिंह और

निदेशक डॉ. अमनदीप कौर ने स्वयं प्रभावित गाँवों का दौरा किया। उन्होंने स्वास्थ्य सेवाओं का निरीक्षण किया, ग्राम प्रधानों से बातचीत की और निवासियों को इस संकट के दौरान अस्पतालों के अटूट सहयोग का आश्वासन दिया।

डॉ. अवतार सिंह ने कहा, ₹स्वास्थ्य सेवा अस्पताल की चारदीवारी से परे भी फैली हुई है। प्राकृतिक आपदा के समय, यह हमारा कर्तव्य बन जाता है कि हम उन लोगों तक सीधे उपचार, करुणा और आशा पहुँचाएँ जिन्हें इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है।₹

बह गई सड़कों पर चलने और बाढ़ के पानी में चलने जैसी चुनौतियों के बावजूद, टीमों ने उन इलाकों में अपनी उपस्थिति सुनिश्चित की जो कई दिनों से बिजली से कटे हुए थे। कई ग्रामीण चार दिनों से ज़्यादा समय से बिजली के बिना थे, जिससे स्वास्थ्य सेवा एक बेहद ज़रूरी जीवनरेखा बन गई।

अमनदीप अस्पताल और उजाला सिग्नस इस आपदा के बाद पंजाब के लोगों के जीवन को फिर से बनाने और स्वास्थ्य बहाल करने में उनके साथ खड़े रहने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हैं।

अमनदीप अस्पताल ने 5 बेड से शुरू होकर अब 750 बेड तक का विस्तार किया है। अब इस अस्पताल में 170 से ज्यादा अनुभवी सर्जन और डॉक्टर हैं, जिन्होंने अब तक 5 लाख से अधिक जिंदगियों को बेहतर किया है।

अस्पताल का लक्ष्य 2031 तक 3500 बेड

सांसद ने बाढ़ पीड़ितों के लिए मोटरबोट, एम्बुलेंस और राहत सामग्री दान की

अमृतसर 1 सितंबर (साहिल बेरी)

राज्यसभा सांसद डॉ. विक्रमजीत सिंह साहनी ने पंजाब की भीषड़ बाढ़ में राहत बचाओ के लिए कई मोटरबोट, एम्बुलेंस, राशन और स्वच्छता किट, सैनिटरी पैड और पशुओं के लिए चारा दान किया।

बाढ़ प्रभावित विभिन्न क्षेत्रों में राहत सामग्री पहुँचाने के लिए एक हेलिकॉप्टर की भी व्यवस्था की गई है।

राहत सामग्री ले जा रहे दर्जनों ट्रकों को डॉ. साहनी, उपायुक्त साक्षी साहनी, पुलिस आयुक्त जीएस भुल्लर और महापौर मोती भाटिया ने अमृतसर से हरी झंडी दिखाई।

मोटरबोट चकफूल गाँव में पहुँचाई जाएँगी, उसके बाद अजनाला केंद्र और साकीनाला, चमैरी और रामदास गाँवों में राहत सामग्री पहुँचाई जाएगी।

डॉ. साहनी ने कहा कि यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि गरीब किसानों ने अपनी आजीविका खो दी है और उनके घर और खेत पानी में डूब गए हैं जिससे तबाही मची है।

डॉ. साहनी ने फसल और संपत्ति के नुकसान के आकलन और मुआवजे के लिए विशेष गिरदावरी का आदेश देने के लिए पंजाब सरकार की सराहना की।

पंजाब में बाढ़ आखिर क्यों – क्या प्रकृति रुष्ट है?

"प्रकृति चेतावनी देती है, रुष्ट नहीं होती – असली वजह इंसानी लापरवाही और असंतुलित विकास"

पंजाब में बाढ़ को केवल प्राकृतिक आपदा कहना सही नहीं होगा। नदियों का स्वरूप, असामान्य बारिश और जलवायु परिवर्तन तो कारण हैं ही, लेकिन असली दोषी अनियोजित निर्माण, अवैध खनन, ड्रेनेज की उपेक्षा और धान-प्रधान कृषि पद्धति भी है। प्रकृति चेतावनी देती है, रुष्ट नहीं होती। यदि हम नदियों को उनका मार्ग दें, जल का विवेकपूर्ण उपयोग करें और फसल विविधिकरण अपनाएँ, तो बाढ़ की मार को कम किया जा सकता है। पंजाब को चाहिए कि वह पर्यावरण के साथ संतुलन बनाकर विकास की नई राह तय करे।

- डॉ प्रियंका सौरभ

पंजाब, जिसे देश की अन्नदाता भूमि कहा जाता है, आज बाढ़ की विभीषिका से बार-बार जूझ रहा है। खेत जलमग्न हो जाते हैं, गाँव डूब जाते हैं, सड़कें और मकान ढह जाते हैं। हर बार यह सवाल उठता है कि आखिर पंजाब में बाढ़ क्यों आती है? क्या यह केवल प्रकृति की रुष्टता है या फिर इसके पीछे कहीं न कहीं हमारी अपनी भूलें भी जिम्मेदार हैं? सच यह है कि प्रकृति कभी किसी से नाराज़ नहीं होती, वह केवल अपने नियमों और संतुलन के आधार पर काम करती है। जब हम इंसान उसकी मर्यादाओं को लांघते हैं, तो परिणाम हमें बाढ़, सूखा, प्रदूषण और आपदा के रूप में भुगतने पड़ते हैं।

पंजाब की धरती पाँच नदियों की भूमि कहलाती है। सतलुज, ब्यास, रावी, चिनाब और झेलम ने इस राज्य की पहचान बनाई। इनमें से अधिकांश नदियाँ हिमालय से निकलती हैं और मानसून के मौसम में बर्फ़ पिघलने व वर्षा के कारण जलस्तर अचानक बढ़ा देती हैं। नदियों की धाराएँ तेज़ होती हैं और जब वे मैदानों में प्रवेश करती हैं तो पानी फैलकर बाढ़ का रूप ले लेता है। भाखड़ा, पोंग और रणजीत सागर जैसे बड़े बांध भले ही बाढ़ नियंत्रण और सिंचाई के लिए बने हों, लेकिन जब इनसे अचानक पानी छोड़ा जाता है तो आसपास के इलाके जलमग्न हो जाते हैं। यह प्राकृतिक कारणों के साथ-साथ प्रबंधन की कमी को भी उजागर करता है।

पिछले कुछ वर्षों में मानसून का पैटर्न काफी बदल गया है। पहले जहाँ बरसात धीरे-धीरे और लंबे समय तक होती थी, अब अचानक भारी वर्षा कम समय में हो जाती है। इससे नदियों और नालों में पानी का दबाव तेजी से बढ़ता है और फ्लैश फ्लड जैसी स्थिति पैदा हो जाती है। जलवायु वैज्ञानिक मानते हैं कि ग्रीनहाउस गैसों का बढ़ना और ग्लोबल वार्मिंग इसका बड़ा कारण है। इससे हिमालयी ग्लेशियर तेज़ी से पिघल रहे हैं। परिणामस्वरूप गर्मियों और बरसात के मौसम में नदियों का जलस्तर अनियंत्रित ढंग से बढ़ जाता है।

प्राकृतिक बाढ़ को विनाशकारी बनाने में सबसे बड़ी भूमिका इंसानी हस्तक्षेप की है। नदियों के किनारों और तलहटी में अंधाधुंध निर्माण कार्य हुए। गाँव और शहर नालों व पुरानी जलधाराओं पर बस गए। रेत और बजरी का अत्यधिक खनन नदियों की गहराई और धार बदल देता है। जब पानी का मार्ग रुकता है तो वह आसपास की बस्तियों में घुस आता है। पंजाब में ड्रेन और नहरों का जाल तो है लेकिन अधिकांश जगह इनकी सफाई व मरम्मत समय पर नहीं होती। नतीजतन बारिश का पानी निकलने की जगह वापस गाँव-शहरों में भर जाता है। इसके साथ ही धान जैसी फसलों ने भूजल का अत्यधिक दोहन किया। मिट्टी की जलधारण क्षमता कम हुई और प्राकृतिक जलसंचयन तंत्र टूट गया।

पंजाब हरित क्रांति का केंद्र रहा। यहाँ गेहूँ और चावल की खेती ने देश को अन्न सुरक्षा दी, लेकिन इसके दुष्परिणाम भी सामने आए। धान की फसल पानी की अत्यधिक मांग करती है। हर साल लाखों ट्यूबवेल से भूजल निकाला गया। इससे भूमिगत जलस्रोत तेजी से सूख गए। जब ऊपर से भारी बारिश या बाढ़ आई तो जमीन उसे सोख नहीं पाई और जलभराव की समस्या बढ़ गई। वनों की कटाई और हरित क्षेत्र के सिकुड़ने से भी प्राकृतिक संतुलन बिगड़ा। नदियों के किनारे पेड़ों की जड़ें पानी को रोकती और मिट्टी को बांधती थीं, लेकिन अब कटान तेज़ हो गया है।

पंजाब में बाढ़ केवल प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक संकट भी है। हजारों एकड़ फसलें बर्बाद हो जाती हैं। किसान कर्ज़ में डूब जाते हैं। ग्रामीण आबादी बेघर हो जाती है और पलायन के लिए मजबूर होती है। सड़कों, पुलों और बिजली के ढांचे को भारी क्षति पहुँचती है। बीमारियों का प्रकोप फैलता है, खासकर डायरिया, मलेरिया और डेंगू जैसी बीमारियाँ। मानसिक आघात से समाज में असुरक्षा और हताशा की भावना पनपती है।

वास्तव में प्रकृति का कोई भाव नहीं होता। वह केवल संतुलन चाहती है। जब हम उसकी मर्यादाओं का उल्लंघन करते हैं, तब वह चेतावनी के रूप में बाढ़, सूखा या आपदा के रूप में सामने आती है। इसलिए यह कहना कि प्रकृति नाराज़ है, सही नहीं है। सच तो यह है कि इंसान ने प्रकृति को नाराज़ करने लायक हालात पैदा कर दिए हैं।

समाधान स्पष्ट हैं। नदियों के किनारे बाढ़ क्षेत्र को चिन्हित कर वहाँ निर्माण पूरी तरह प्रतिबंधित किया जाना चाहिए। पुराने नालों और ड्रेनों की नियमित सफाई व चौड़ाई बढ़ाई जानी चाहिए। अवैध खनन पर सख्ती से रोक लगनी चाहिए ताकि नदियाँ अपने प्राकृतिक स्वरूप में बह सकें। धान के स्थान पर मक्के, दालों और सब्जियों की खेती को बढ़ावा दिया जाए, जिससे पानी की खपत कम होगी और भूजल का स्तर सुधरेगा। राज्य और केंद्र सरकार को मिलकर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने के लिए दीर्घकालिक योजना बनानी होगी। साथ ही स्थानीय लोगों को बाढ़ से बचाव और प्रबंधन के लिए प्रशिक्षित करना भी आवश्यक है।

पंजाब में बाढ़ का संकट केवल प्राकृतिक कारणों से नहीं है। यह हमारी विकास नीतियों की असंतुलित दिशा का परिणाम है। यदि हमने अभी भी सबक नहीं लिया तो आने वाले वर्षों में बाढ़ और भयावह हो सकती है। प्रकृति हमें बार-बार चेतावनी दे रही है कि उसके साथ छेड़छाड़ मत करो। हमें याद रखना होगा कि प्रकृति से लड़ाई नहीं, बल्कि उसके साथ तालमेल ही स्थायी समाधान है। पंजाब में बाढ़ केवल आपदा नहीं, बल्कि हमारी नीतियों, आदतों और प्राथमिकताओं की परीक्षा है।

भारत - चीन के संबंधों में एक नई उड़ान

संजय सिन्हा

भारत और चीन के संबंधों में सुधार होने जा रहा है। चीन दौरे पर पहुंचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से तियानजिन में मुलाकात की। दोनों नेताओं की मुलाकात तियानजिन में हुई जहां चीनी राष्ट्रपति शंघाई सहयोग संगठन के शिखर सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है। यह द्विपक्षीय मुलाकात एससीओ शिखर सम्मेलन के इतर हुई जिसमें दोनों नेताओं ने आपसी रिश्ते को मजबूत फिर से मजबूत करने पर जोर दिया। चीनी राष्ट्रपति ने बैठक के दौरान अपने संबोधन में कहा कि भारत और चीन के लिए सही विकल्प यह है कि दोनों दोस्त और साझेदार बने।

जिनपिंग ने दोनों देशों को पूर्व की प्राचीन सभ्यताएं बताया और रूस के कजान में हुई अपनी पिछली मुलाकात को याद किया। दोनों के बीच 50 मिनट तक बातचीत हुई। द्विपक्षीय वार्ता में कैलाश मानसरोवर यात्रा, सीमा समझौते और दोनों देशों के बेहतर होते रिश्ते पर बातचीत हुई। इस दौरान जिनपिंग ने कहा कि पीएम मोदी से मिलकर खुशी हुई। जिनपिंग ने कहा, 'प्रधानमंत्री महोदय, आपसे फिर मिलकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। मैं शंघाई सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन के लिए चीन में आपका स्वागत करता हूं।'

उन्होंने आगे कहा, 'दोनों देशों के लिए यह सही है कि ऐसे साझेदार बनें जो एक-दूसरे की सफलता में सहायक हों। ड्रैगन और हाथी एक साथ आएं। चीन और भारत दो प्राचीन सभ्यताएं हैं। हम विश्व के दो सबसे अधिक आबादी वाले देश हैं। हम ग्लोबल साउथ के भी अहम सदस्य हैं। हम दोनों अपने लोगों की भलाई के लिए जरूरी सुधार लाने और मानव समाज की प्रगति को बढ़ावा देने की ऐतिहासिक जिम्मेदारी निभाते हैं।'

आपको बता दें कि कुछ दिनों पहले चीन के विदेश मंत्री ने भारत का दौरा किया था। चीन के विदेश मंत्री के भारत दौरे से जो संकेत उभरे, वे न केवल भारत के लिए नए कूटनीतिक मोर्चे के तहत भावी मुश्किलों से निपटने की तैयारी की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं, बल्कि इससे यह भी साबित होता है कि मौजूदा विश्व में विकसित या मजबूत देशों को इस तरह का भ्रम नहीं रखना चाहिए कि वे मनमाने तरीके से किसी अन्य देश पर अपनी नीतियां थोप सकेंगे हालांकि अब भारत जल्दबाजी में किसी फैसले तक पहुंचने के बजाय सावधानी से परिस्थितियों का आकलन करने और अपने हित को तरजीह देने की नीति के तहत कदम बढ़ा रहा है।

अमेरिका अपनी सुविधा के मुताबिक जिस तरह शुल्क थोपने की नीति पर चल रहा है, उसमें भारत के सामने कुछ जटिल परिस्थितियां खड़ी हो रही हैं। इन्हीं से निपटने के लिए रूस और चीन के साथ भारत नए समीकरण बनने की संभावनाएं देख रहा है। मगर साथ ही भारत के लिए अपनी संप्रभुता का सवाल भी सबसे ऊपर है। दरअसल, यह जगजाहिर रहा है कि चीन के साथ सीमा पर भारत के लिए किस तरह के जटिल हालात बनते रहे हैं। शायद यही वजह है कि चीन के विदेश मंत्री से भारतीय विदेश मंत्री ने साफ कहा कि संबंधों में सुधार जरूरी है लेकिन उसके लिए पहले सीमा पर तनाव घटाना होगा।

प्रधानमंत्री मोदी ने इस मुलाकात से पहले जापान का दौरा किया, जहां उन्होंने जापानी प्रधानमंत्री शिगेरु इशिबा के साथ मुलाकात की। यह दौरा भारत की रणनीति को दिखाता है, जिसमें वह अमेरिका के साथ तनाव के बीच अपने व्यापार और निवेश को विविधता देने की कोशिश कर रहा है। मोदी ने अपने एक बयान में कहा, 'भारत-चीन संबंध न केवल हमारे लोगों के लिए, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक शांति और समृद्धि के लिए अहम हैं।' उन्होंने यह भी जोड़ा कि दोनों देशों के बीच स्थिर और मैत्रीपूर्ण संबंध एक बहुध्रुवीय एशिया और विश्व के लिए ज़रूरी हैं।

आर्थिक चर्चा : सनातन अर्थशास्त्र हो सकता है ट्रम्प टैरिफ का जवाब

पंकज जायसवाल

27 अगस्त 2025 को अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भारत पर 25% का नया टैरिफ (आयात शुल्क) थोप दिया। यह टैरिफ रूस से भारत के बढ़ते व्यापार के एवज में दंडात्मक कार्रवाई के रूप में लगाया गया। सामान्य परिस्थितियों में यह एक मात्र आर्थिक निर्णय माना जा सकता था परंतु इसकी टाइमिंग ने इसे भारत के लिए कहीं अधिक अर्थपूर्ण बना दिया। जिस दिन से यह टैरिफ लागू हुआ, उसी दिन भारत में गणपति उत्सव का आरंभ हुआ, गणपति जिन्हें सुख, समृद्धि और वैभव के प्रतीक माना जाता है। इस तरह, एक ओर जहां भारत श्रद्धा और उल्लास में डूबा था, वहीं दूसरी ओर ट्रम्प का टैरिफ भारत की अर्थव्यवस्था पर चोट करने की मंशा के साथ लागू हुआ।

यही कारण है कि इस टैरिफ को केवल आर्थिक दबाव के रूप में नहीं देखा जा सकता, बल्कि यह सांस्कृतिक चुनौती का भी संकेत है। विघ्नहर्ता गणपति के आगमन के दिन इस टैरिफ का लागू होना भारत के उत्सवधर्मी समाज की आस्था को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से ललकारने जैसा है। प्रश्न यह है कि क्या भारत इस चुनौती को केवल राजनयिक और आर्थिक वार्ताओं से ही टाल पाएगा, या फिर इसकी जड़ में जाकर अपनी पारंपरिक, सनातन अर्थव्यवस्था से इसका सामना करेगा। विघ्नहर्ता मुहूर्त पर लादे गए इस विघ्न का मुकाबला हम कैसे करेंगे ?

टैरिफ यानी आयात शुल्क का सीधा असर भारत-अमेरिका व्यापार पर पड़ेगा। यह भारत के उन क्षेत्रों को चोट पहुँचाने की कोशिश है जहाँ अमेरिका को लगता है कि भारत उसके हितों को चुनौती दे रहा है किंतु इतिहास गवाह है कि भारत की असली शक्ति केवल वैश्विक व्यापारिक संबंधों में नहीं बल्कि अपनी विशाल घरेलू मांग और आत्मनिर्भर सामाजिक-आर्थिक ढांचे में रही है।

भारत का उपभोक्ता बाजार दुनिया में सबसे बड़ा और सबसे गतिशील है। भारत के गाँव से लेकर कस्बे और महानगर तक हर स्तर पर एक स्वाभाविक खपत-चक्र मौजूद है जो विशेष रूप से त्योहारों के समय चरम पर पहुँचता है। यही वह ताकत है जिसे भारत ने बार-बार वैश्विक दबावों के समय अपनी ढाल बनाया है।

उत्सवधर्मी होना हमारी अर्थव्यवस्था की ताकत है. भारत मूलतः उत्सवधर्मी देश है। यहाँ धार्मिक और सांस्कृतिक पर्व केवल आस्था का विषय नहीं बल्कि आर्थिक गतिविधियों का सबसे बड़ा इंजन भी हैं। गणेशोत्सव से आरंभ होकर विजयादशमी, दीपावली, धनतेरस और छठ पर्व तक का यह सिलसिला लगभग दो महीने तक चलता है। यही अवधि भारतीय उपभोग अर्थव्यवस्था का स्वर्णकाल होती है।

कृषि की नई फसल बाजार में आती है, गाँवों और कस्बों में नगदी का प्रवाह बढ़ता है और शहरी क्षेत्रों में बोनस और वेतनवृद्धि जैसे कारक उपभोग क्षमता को बढ़ाते हैं। खुदरा, वस्त्र, इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोबाइल, आभूषण, मिठाई, गृह-उपयोगी वस्तुएँ हर क्षेत्र में बिक्री कई गुना बढ़ जाती है। अनुमान है कि भारत की वार्षिक खपत का लगभग

35–40 प्रतिशत हिस्सा इसी पर्व-काल में होता है।

मौजूदा विदेशी टैरिफ का असर तभी होगा जब हम निर्यात में हो रहे गिरावट के मुकाबले नए बाजार की खोज और घरेलू खपत में वृद्धि कर इसकी क्षतिपूर्ति कर लें और भारत की विशेषता यह है कि यहाँ उत्सवधर्मी खपत का बड़ा हिस्सा स्थानीय उत्पादन, लघु उद्योग, हस्तशिल्प, स्वदेशी वस्त्र और क्षेत्रीय उत्पादों से पूरा होता है। ग्रामीण भारत में तो आज भी त्योहार स्थानीय बाजारों की रौनक बढ़ाते हैं जहाँ "मेड इन इंडिया" ही नहीं बल्कि "मेड इन लोकल" उत्पाद बिकते हैं। बीच में भारत के लोग विदेशी ब्रांड की तरफ आकर्षित हो रहे थे लेकिन ट्रम्प के इस रवैये से यदि भारत के लोग स्व की तरफ मुड़ गए तो ट्रम्प टैरिफ से हो रहे नुक्सान की भरपाई के साथ साथ भारत अपने दम पर खड़ा हो जायेगा. यही वह बिंदु है जहाँ "सनातन अर्थशास्त्र" की भूमिका सामने आती है।

सनातन अर्थशास्त्र ही भारत की मूलभूत आर्थिक शक्ति है. "सनातन अर्थशास्त्र" को केवल प्राचीन ग्रंथों से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि इसे भारत की जीवन-पद्धति, सामाजिक ढांचे और आर्थिक प्रवाह की व्यावहारिक परिभाषा माना जा सकता है। इसकी चार प्रमुख विशेषताएँ हैं, पहला कृषि और उत्सवधर्मिता का जुड़ा होना. सभी त्यौहार कृषि से जुड़े हैं जो भारत के आर्थिक ताने बाने को टिकाऊ बनाता है. दूसरा स्थानीय उत्पादन और स्वदेशी पर बल. गाँव-गाँव में शिल्प, कृषि, और लघु उद्योग का आधार। तीसरा उपभोग आधारित अर्थचक्र फसल, त्योहार और उपभोग का स्वाभाविक चक्र, जो हर साल करोड़ों लोगों की आर्थिक गतिविधियों को पुनर्जीवित करता है। चौथा आत्मनिर्भरता और विविधता भारत में हर क्षेत्र अपनी आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा स्वयं पूरा करने की क्षमता रखता है।

गांधीजी ने स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से इसी सनातन अर्थशास्त्र को स्वतंत्रता संग्राम की रीढ़ बनाया था और अपने चरखे से ही साम्राज्यवाद को चुनौती दी थी। आज "आत्मनिर्भर भारत" का नारा भी उसी परंपरा का आधुनिक रूप है। जब विदेशी दबाव बढ़ता है, तब यही सनातन आर्थिक ढांचा भारत को गिरने नहीं देता। हमारी जीवन व्यवस्था ही सनातन है इसलिए हमारी अर्थव्यवस्था भी सनातन है जो कभी भी समाप्त नहीं हो सकती है, जीवंत इकॉनमी बन हम बार बार उठ खड़े होते हैं. सस्टेनेबिलिटी की प्रैक्टिस ही हमारी और सनातन अर्थव्यवस्था का मूल है.

विदेशी ब्रांड के मोह से मुक्त हो यह स्वजागरण का अवसर है. पिछले कुछ दशकों में भारत का मध्यमवर्ग विदेशी ब्रांडों और उत्पादों की ओर आकर्षित हुआ है। उपभोग का बड़ा हिस्सा मल्टीनेशनल कंपनियों की ओर चला गया किंतु ट्रम्प टैरिफ जैसे कदम भारत को यह याद दिलाने का काम कर सकते हैं कि विदेशी निर्भरता किसी भी क्षण संकट में बदल सकती है। यदि भारत का उपभोक्ता वर्ग इन चार प्रमुख महापर्वों गणेशोत्सव, दशहरा, दीपावली और छठ में स्वदेशी उत्पादों की ओर उमड़ पड़े, तो न केवल ट्रम्प टैरिफ का असर निष्प्रभावी हो जाएगा बल्कि भारत का घरेलू बाजार और अधिक मजबूत होकर उभरेगा। यह समय भारत के लिए आत्मचिंतन का भी अवसर है। विदेशी दबाव को पराजित करने का सबसे प्रभावी तरीका यही है कि हम अपनी खपत और उत्पादन की ताकत को पहचानें और उसे व्यवहार में उतारें।

निष्कर्ष यही है यह ट्रम्प टैरिफ भारत के लिए चेतने और फिर से आर्थिक आत्मनिर्भर होने का अवसर हो सकता है. अगर शुरुवाती झटकों को सह लिया तो हम मजबूत होकर उभर सकते हैं. ट्रम्प टैरिफ का उद्देश्य भारत की अर्थव्यवस्था पर चोट करना है, किंतु इसकी टाइमिंग ही इसे भारत के लिए अवसर में बदल सकती है। गणपति के आगमन से आरंभ होने वाला उत्सवकाल भारत की अर्थव्यवस्था को ऊर्जा देने वाला सबसे बड़ा विघ्नहर्ता स्रोत है। यदि इस समय भारत अपने सनातन अर्थशास्त्र स्थानीय उत्पादन, स्वदेशी उपभोग और आत्मनिर्भरता पर भरोसा करे, तो न केवल टैरिफ का झटका बेअसर होगा, बल्कि यह भारत को और अधिक मजबूत भी बनाएगा। गणपति सुख और समृद्धि के प्रतीक हैं। यह विडंबना ही है कि जिस दिन ट्रम्प ने भारत पर आर्थिक प्रहार की योजना बनाई, उसी दिन भारत ने उत्सव और ऊर्जा का नया अध्याय शुरू किया। अंततः यह चुनौती भारत को दबाने के बजाय जगाने वाली साबित हो सकती है।

सनातन अर्थशास्त्र ही भारत का असली उत्तर है टैरिफ के खिलाफ भी और भविष्य की किसी भी आर्थिक चुनौती के खिलाफ भी।

800 एकड़ भूमि पर बनेगा नया भुवनेश्वर

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुबनेश्वर: नया भुवनेश्वर बसाया जाएगा। राजधानी के बाहरी इलाके मालीपाड़ा, दशपुर, धनरुआ और गोथापटना इलाकों में 800 एकड़ ज़मीन पर नया भुवनेश्वर बसाया जाएगा। विकास मंत्री डॉ. कृष्ण चंद्र महापात्र ने यह जानकारी दी है। मुख्यमंत्री की कल की घोषणा के बाद, नए भुवनेश्वर शहर को लेकर उत्साह बढ़ रहा है।नए शहर के चित्र और डिज़ाइन तैयार करने की ज़िम्मेदारी सिंगापुर सरकार ने ली है। इसे गुजरात के डोलेरा स्मार्ट सिटी की तर्ज पर बनाने पर विचार किया जा रहा है। भविष्य को ध्यान में रखते हुए, बीडीए अपना दायरा बढ़ाकर नए शहर की तैयारी कर रहा है। टीपी योजना में, बीडीए लोगों को सार्वजनिक उपयोगिताओं, जलापूर्ति और सड़क निर्माण के लिए ज़्यादा से ज़्यादा जगह उपलब्ध कराने की व्यवस्था कर रहा है।

आगामी परियोजनाओं में पार्क, अस्पताल, लोगों के लिए आवासीय क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र पर भी ध्यान केंद्रित किया जाएगा। पैदल यात्रियों के लिए पैदल चलने की व्यवस्था, खुली जगह और आर्थिक गतिविधियों की व्यवस्था भी है। सिंगापुर सरकार इसकी डीपीआर तैयार कर रही है और इसके लिए ज़रूरी धनराशि भी दे दी गई है। सिंगापुर अगले एक-दो महीनों में राज्य सरकार को डीपीआर सौंप देगा। हम शहर का विस्तार करने और शहर के पुनर्विकास की योजना बना रहे हैं। बीडीए का अधिकार क्षेत्र कटक सीमा तक बढ़ा दिया गया है। टीपी योजना का काम तेज़ी से चल रहा है। हमारी सरकार इसे और ज़्यादा महत्व दे रही है। मंत्री ने कहा कि सरकार का ध्यान इस बात पर है कि लोगों को ज़्यादा से ज़्यादा लाभ कैसे मिल सके।

खनन कारोबारी रंजन दाश के पते पर ईडी ने छापा मारा

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : ओड़िशा की राजधानी भुवनेश्वर में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की छापेमारी जारी है। ईडी शनिवार से ही खनन कारोबारी रंजन दाश के घर और दफ्तर पर छापेमारी कर रही है। इस दौरान भारी मात्रा में नकदी के साथ 10 लग्जरी कारें और 3 सुपर बाइक जब्त की गई हैं। इन 10 महंगी गाड़ियों में लेटेस्ट पोर्श और बीएमडब्ल्यू भी शामिल हैं।इसके अलावा ईडी अधिकारियों ने बैंक लॉकरों से 1 करोड़ रुपये मूल्य के सोने के आभूषण भी जब्त किए हैं। ईडी ने देश के सबसे बड़े बैंक ऋण धोखाधड़ी मामलों में से एक में मनी लॉन्ड्रिंग का मामला दर्ज किया है। इस मामले की जांच के दौरान, श्री दाश के स्वामित्व वाली अनमोल माइंस प्राइवेट लिमिटेड (एएमपीएल) और मेसर्स अनमोल रिसोर्सेज प्राइवेट लिमिटेड (एआरपीएल) पर कई छापे मारे गए। शनिवार को भुवनेश्वर के नयापल्ली में खनिक शक्ति रंजन दाश के घर से शुरू हुई छापेमारी में आकर्षक संपत्ति बरामद हुई। शुरुआत में हिमाचल प्रदेश पुलिस में अवैध वित्तीय लेनदेन और ऋण धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया गया था। बाद में, शिमला में प्रवर्तन निदेशालय के जोनल कार्यालय ने मनी लॉन्ड्रिंग का मामला दर्ज किया और छापेमारी की।

रांची के रातू रोड देवी मंडप सरोवर नगर शिव मंदिर में गणपति पूजा एवं राधाष्टमी पर डांस प्रतियोगिता आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

रांची के रातू रोड स्थित देवी मंडप सरोवर नगर शिव मंदिर में गणपति पूजा के उपलक्ष्य में एवं राधा अष्टमी के दिन पूजा पंडाल में भव्य डांस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाली बच्चियों ने राधा रानी एवं भगवान श्रीकृष्ण का रूप धारण कर नृत्य प्रस्तुत किया और पूरे माहौल को भक्तिमय एवं उल्लासपूर्ण बना दिया।

कार्यक्रम में भाजपा रांची महानगर के नेता अभिषेक सिंह राठौड़ एवं युवा नेत्री रौशनी सिंह राठौड़ ने प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित एवं प्रोत्साहित किया। अभिषेक सिंह राठौड़ ने इस अवसर पर कहा कि वे पूर्व में भी गणपति पूजा पंडालों में नन्हे-मुन्ने बच्चों को नृत्य कार्यक्रम में सम्मानित एवं पुरस्कृत कर प्रोत्साहित करने का कार्य करते आए हैं।

इस मौके पर मुख्य रूप से राजेश पाठक, रविंद्र शर्मा, उर्मिला शर्मा, ममता तिवारी, सुदामा देवी, पुष्पा देवी, सरिता पाठक, सोनी देवी, सुरेश सिंह, संजीत चौबे, शेखर चौबे, बबीता शर्मा, गगन कुमार, अनामिका कुमारी, श्री राधे कुमारी, सारांश पाठक, सौर पाठक एवं जयेश कुमार उपस्थित रहे।

परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ ने "शिक्षा भूषण सम्मान 2025" से शिक्षकों को किया सम्मानित

- राज्य के नवाचारी और उत्कृष्ट शिक्षकों को मिला शिक्षा भूषण सम्मान।
- शिक्षकों की मांगों की पूर्ति के लिए महासंघ है समर्पित।

पटना। शिक्षा में नवाचार को बढ़ावा देने वाले और शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले शिक्षकों को परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ ने पटना स्थित विद्यापति मार्ग के बिहार राज्य पंचायत परिषद् के सभागार में ₹शिक्षा भूषण सम्मान 2025₹ से सम्मानित किया। कार्यक्रम की शुरुआत में परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ जिला इकाई नालंदा के जिला महासचिव स्वर्गीय राजीव रंजन के चित्र पर पुष्पांजलि एवं माला अर्पित करते हुए 2 मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

दीप प्रज्वलन कार्यक्रम में बिहार सरकार के माननीय मंत्री पर्यटन विभाग श्री राजू सिंह,महासंघ के प्रदेश संयोजक प्रणय कुमार, प्रदेश कार्यकारी संयोजक श्री नवनीत कुमार, पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता श्री नलिन कुमार सहित कई गणमान्य शामिल हुए।

प्रदेश कार्यकारी संयोजक श्री नवनीत कुमार ने अपने स्वागत भाषण में शिक्षा एवं शिक्षकों की बेहतरी के लिए कई उपाय बताते हुए उनकी समस्याओं के ससमय समाधान हेतु सरकार से आग्रह किया।

प्रदेश संयोजक श्री प्रणय कुमार ने राज्य के विभिन्न जिलों से आए हुए चयनित शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षक समाज की रीढ़ हैं। हमें विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य का दामन नहीं छोड़ना है।

प्रधान शिक्षक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष अशोक कुमार ने शिक्षकों शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षकों के समस्याओं के समाधान हेतु परिवर्तनकारी शिक्षक महासंघ का एक शिष्टमण्डल जल्द ही विभाग के उच्च अधिकारियों से मिलेगा। प्रमुख वक्ताओं में अखिलेश कुमार सिंह, विजय सिंह परिवर्तनकारी, मृत्युंजय ठाकुर, जमील अहमद विद्रोही, देवेंद्रसिंह, दाउद अली, मनोज सिंह, राजीव कुमार,प्रवीण कुमार आदि शामिल रहे।

चयनित शिक्षकों को स्मृति चिन्ह,अंग वस्त्र और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

सम्मानित होने वालों में संजीत कुमार शर्मा, जितेंद्र पांडे, नलिन निरंजन, अभय कुमार, प्रीति कुमारी, रमेश कुमार, राजीव कुमार, मुकेश कुमार सहित सैकड़ो शिक्षक प्रमुख रूप से शामिल रहे।

महासंघ के प्रदेश मीडिया प्रभारी मृत्युंजय ठाकुर ने कहा कि संगठन की ओर से हम प्रतिवर्ष राज्य के नवाचारी शिक्षकों के लिए सम्मान कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें सम्मानित करने का काम करेंगे।

श्री ठाकुर ने बताया कि राज्य के सभी कोटि के शिक्षकों यथा- प्रधानाध्यापक, प्रधान शिक्षक, नियोजित शिक्षक, विशिष्ट शिक्षक एवं विद्यालय अध्यापक के विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए महासंघ प्रयासरत रहेगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023